ब्रह्म प्रकाश

लेखक व प्रकाशक—

रामदास मुराव
(अयोध्या निवासी)

प्रथम बार	माघ	मूल्य
१०००	२००२	१।) सवा रुपया

कृष्ण प्रिन्टिंग प्रेस, चरखेवालान देहली में मुद्रित।

सूचन।

यह पुस्तक सार्ट या साँठ अक्षरों में लिखी है क्योंकि हम इतने बडे पढ़े लिखे नहीं, हैं इस कारण आप सब सन्तों से गलती का छमा चाहता हूं और आप सब संन्तों के चरणों को सिर झुकाता हूं

यह ब्रह्म प्रकाश पुस्तक अपने देवतों के देखने की सबसे बड़ी पुस्तक और खुर्दबीन है —इस पुस्तक में सब देवतावों की पहिचान लिखी गई है —दृष्ट डालने के योग है देहाती- और लड़खड़ाती हुई भाशा में लिखी हुई है अवश्य प्रकाशडालैं सार्ट या साँठ देहाती और सं कृत शब्द हैं

ब्रह्मप्रकाश या ऐटम बम

इस प्रकाश का जो ला या कानून या नियम है वह एटम बम या प्रमाणू बम है।

इस पुस्तक के पढ़ने से स्वराज्य दोनो तरह से मिल जाता है शुद्धम रूप में लिखी है अवश्य पढ़ैं—

भूमिका

समय के अनुसार संसार और सारा ब्रह्माण्ड आकाश पाताल में जो वस्तुयें और जोतियां स्थित हैं उनको देखकर और उनके आधार पर इस पुस्तक की रचना की गई है जो कि किसी समय शिवजी महाराज ने श्री पारवती जी को अमर कथा में सुनाई थी। उसमें से दो एक शब्द के अर्थ से यह सारी पुस्तक ब्रह्म प्रकाश की रचना की गई है कि मनुष्य किस रीति से सदा चिरंजीव रह सकता है। ब्रह्मचारी और सदा आयुव आराम से कैसे बसर करने वाला बन सकता है। यह सब बातें अमर कथा में शिवजी ने पार्वती जी को सुनाई थी कि जो कोई मनुष्य या जीव ऐसा करेगा वह अमर रहेगा और सदा ब्रह्म पुजारी होगा।

मनुष्य को इधर जरूर ध्यान देना चाहिये।

लेखक के दो शब्द

संसार में हमारे ऋषियों और मुनियों ने मनुष्य जाति को उपदेश देने के लिये हजारों पुस्तकें समय समय के अनुसार लिखी हैं परन्तु वर्तमान समय के अनुसार उनका सार लेना या मथन करना बहुत कठिन है। क्योंकि हम पर इस समय दूसरी भाषाओं का अधिक प्रभाव है। इसलिये हम उनको समझने और पढ़ने में अधिक ध्यान नहीं देते हैं यहां तक कि भाषा को भी नहीं समझ पाते हैं, इसलिये इस पुस्तक के लिखने की आवश्यकता हुई और सरल से सरल भाषा में इसकी रचना की है कि थोड़े बहुत भी पढ़ने वाले इसको आसानी से पढ़ सकें और समझ लेवें। यह पुस्तक सबके लिये उपयोगी सिद्ध होगी। इसके पाठ करने से और घर में रखने से ही ब्रह्म प्रकाश रहेगा और पूजा होगी।

[ ]

विषय सूची

* ओ३म् *

ब्रह्म प्रकाश

श्री गुरु चरण सरोजरज-निज मन मकुर सुधार ।
बरनो ब्रह्म प्रकाश जश-जो सुख सम्पति सार ॥

* ब्रह्म वन्दना *

॥ प्रार्थना ॥

पवन मन्द सुगंध शीतल, नील समुद्र बीच मंदिर शोभितम् ।
श्री निकट नील जल बहत निर्मल, श्री पार ब्रह्म विश्वमभरम् ।
शेष महेश सुमिरन करत, निश दिन धरत ध्यान महेश्वरम्
श्री वेद ब्रह्मा करत अस्तुति, श्री अपार ब्रह्म विश्व भरम् ॥
इन्द्र चन्द्र कुबेर जिनको, धूप दीप देत प्रकाशितम् ।
सिद्ध मुनि जन करत जय जय, श्री पार ब्रह्म विश्वम भरम् ।
शक्ति गारे गणेश शरद, नारद मुनि उच्चारणम् ।
जोग ध्यान अपार लीला, श्री पार ब्रह्म विश्वंम भरम् ॥
यज्ञ किन्नर करत कौतुक, ज्ञान गंधर्व प्रकाशितम् ।
श्री लक्ष्मी कमला चंवर डुलावें, श्री पार ब्रह्म विश्वंम भरम् ॥

जन्त्र महात्य और उसकी महिमा

यह एक ऐसा ज्योतिप विद्या का अद्भुत चमत्कारी जन्त्र है जिसमें सारे सितारे और सब ब्रह्माण्डों का हाल और उनके चलने का मार्ग और उनका रङ्ग कि कौन ज्योति किस रङ्ग की है सब दिखलाया गया है। मनुष्य जाति इसको देखकर चकित होगी कि जो कोई मनुष्य या जीव या बड़े बड़े वैज्ञानिक या जो मनुष्य जिस स्वभावका हो वैसा ही उसके खयाल के अनुसार बन जाता है। मन्दिर पूजने वालों के लिये मन्दिर, देवता पूजने वालों के लिये अष्ट भुजी रूप, विष्णु पूजने वालों के लिये चतुर्भुजी रूप, मनुष्य जाति अवतार पूजने वालों के लिये मनुष्य का शरीर बनेगा। कच्छ रूप-मच्छ रूप औतार जोतिष वालों के लिये जोतियों के चलने का मार्ग मालूम होगा। वेद पुराण-शास्त्र जानने वालों को उसका आधार मालूम होगा कि किस किस वस्तु और किन किन ज्योतियों को देखकर हमारे ग्रन्थ बनाये गये हैं। यह एक रहस्यमय जंत्र है। इससे हजारों लाखों-ला और गुर बनते हैं। योगियों के लिये योग साधन के नियम मालूम होंगे इस जन्त्र से मनुष्य को बहुत लाभ है।

यह यंत्र भारतवर्ष का सबसे बड़ा यंत्र है जिसको कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राजा रामचन्द्र जी को गुरु वशिष्ठ जी ने दिया था। जब तक यह भारतवर्ष में रहा और उस पर भारतवासी अमल करते रहे। तब तक भारतवर्ष विद्वान और चक्रवर्ती राज्य था इसी जन्त्र से अयोध्या के राजा चक्रवर्ती हुये, अगर भारतवर्ष फिर इस जंत्र के अनुसार चले तो फिर से विद्वान और चक्रवर्ती राजा हो जावेंगे।

१—इस जंत्र को चक्रवर्ती व्यूह यन्त्र भी कहते हैं।

२—इसी जंत्र से नारद मुनि जी ने राजा कंस को कृष्ण जी के हाथ मरवाया था और श्रीकृष्ण जी ने उस वक्त संसार को सुधारा था और अर्जुन को विराट रूप दिखाया ज्ञान गीता सुनाई थी और जंत्र की सहायता से उस समय की अन्धेरी घटा जो कि भारत पर आई हुई थी उसे दूर किया था।

३—इस जन्त्र को कर्म प्रधान जंत्र भी कहते हैं और योग्य साधन के नियम मालूम होते हैं। जिससे कि जीव योगी बन जाता है और पारब्रह्म तक पहुंच जाता है।

४—इस जंत्र को देख कर गुरु वशिष्ठ जी ने श्री रामचन्द्र जी को उनके भ्रम मिटाने वाली कथा सुनाई थी। विद्वानों ने ज्योतिष बनाई तथा सूर्य ग्रहण के बड़े छोटे होने का कारण मालूम किया।

५—इस जंत्र से चारों वेद, चारों प्रकार के विष्णु और उनकी चारों अवस्था भगवान को मालूम किया अर्थात् (ब्रह्म, ब्रह्मा, विष्णु, महेश) और इन्हीं देवताओं के आधार पर चारों वेद, चारों युग, चारों वर्ण बनाये हैं और उनके चलने का मार्ग कि कौन कौन जाति या वर्ण कितने दिनों में अपना कार्य करता है और एक दूसरे की परिक्रमा कितने दिनों में कर लेता है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, पारब्रह्म के गले की माला का दाना कितने कितने या ब्रह्माण्ड का होना चाहिए मालूम किया।

६—इस जन्त्र को देखने से मालूम होता है कि एक सूर्य दूसरे से बड़ा है और हर एक सूर्य का रङ्ग क्या है ? सारे संसार के तारे सितारे और सब सृष्टियाँ और ब्रह्माण्ड तराजू के पलड़े में और सूर्य एक पलड़े में रक्खा जावे तो डंडी बराबर हो जावेगी। अर्थात् सूर्य भगवान या पारब्रह्म एक तरफ और सारा संसार एक तरफ रक्खा जावे तो तराजू का पलड़ा बराबर

हो जाता है जिसको ज्योतिष विद्या में तुला राशि कहते हैं।

७—इससे सब जातियाँ एक मालूम होती हैं।

८—इस जन्त्र को देखने से मालूम होता है कि मनुष्य या तारे सितारे और सूरज अर्थात् सभी ब्रह्माण्ड ऊँचे नीचे होते रहते हैं और सबको दुःख तकलीफ होती है और सबको अपना कार्य करना पड़ता है। अर्थात् अपने मार्ग पर चलना पड़ता है। अपना कार्य ही करने से छोटे बड़े हो जाते हैं इसी से इस जन्त्र का दुःख भंजन जंत्र नाम पड़ा अर्थात् बिना कर्म किये दुख दूर नहीं हो सकता।

९—इसी जन्त्र को देखकर कच्छ औतार भगवान ने पृथ्वी पर औतार लेकर अर्थात् कच्छ रूप ब्रह्माण्ड में बैठ कर नीले समुद्र रूपी आकाश को मथा था। (मतलब) उसको खूब ध्यान से देखा था और किरणों के जंगल अर्थात् नीली किरणों के समुद्र को कच्छ रूपी किश्ती या जहाज में बैठ कर सैर की और नौ वस्तुयें प्रथम नम्बर की श्रेष्ठ अर्थात् प्रधान देखीं और उसी को उत्तम चुनी जिसको कि नव रत्न कहते हैं इसी को नवग्रह या नवों इन्द्रियाँ या नवों भगवती या नौ माह गर्भ के महीने को भी कहते हैं। कच्छ रूपी ब्रह्माण्ड में अर्थ (गोल बिन्दी के रूप में सारे जीवों का भ्रमण करना या गोल रूपी जीवों का जन्म लेना और जन्म लेकर सबका गुण लेना भी कच्छ मथन कहलाता है दूसरे सूरज ही परिवार आकाश में कच्छ रूप अर्थ (गोल चपटे शक्ल में दूसरे या सब सूर्य परिवार की परिक्रमा करता है) बैठकर सैर की। गोल बिन्दू या अविनाशी भगवान गर्भ में बैठकर नौ माह या नौ माह समाधि लगा कर नीली किरणों के समुद्र की सैर करता है। शरीर में भी नीला जल और नीली किरणें हैं उसी नीले समुद्र में नौ माह तैरता

है किरण अर्थ सारे जीव को भी कहते हैं। इन्हीं जीवों को कीटाणु भी कहते हैं शरीर के बीच कमर में भी कच्छ रूपी अङ्ग है जिस पर गोल बिन्दू बैठकर समाधि लगाता है। शरीर में गोल बिन्दू—आकाश में तारे सितारे कच्छ रूप भगवान हैं।

१०—इसी जन्त्र को देखकर सातों दिनों या सातों ऋषियों के नाम रक्खे गये हैं, आठों दिशा बनाई गई हैं।

११—इस जंत्र में जिसको आकाश-पाताल में एक सा दीखे अर्थात अच्छा बुरा कोई न मालूम हो, अर्थात सब सत्य दीखे-उसी को अपार ब्रह्म और ब्रह्म-परब्रह्म के दर्शन हो सकते हैं और उनके गुणों को वही मालूम कर सकता है। एक दो तीन देखने वालों को भगवान नही मिल सकते हैं।

१२—इस जन्त्र को देखने से मालूम होता है कि एक सूर्य परिवार अर्थात एक ब्रह्मांड घूमता हुआ जब दूसरे ब्रह्मांड की जगह पर आ जाता है तो पहुंचने वाले की प्रकृति उस जगह वाले ब्रह्मांड की सी हो जाती है। इसी कारण से जोतिप विद्या में गृहों की चाल की वजह से उनकी प्रकृति बदल जाती है जैसे—आत्मा जैसे २ या जिस जिस रूप में जिस ब्रह्माड में प्रवेश करता है वैसे ही उसका स्वभाव बदल जाता है।

१३—इस जंत्र को देखने से मालूम होता है कि सूरज चाँद, पृथ्वी, ध्रुव, सभी तारे-सितारे चलते हैं और सब में मौसम सर्द गर्म पैदा होते हैं और तबदीली होती रहती है।

इस जंत्र को देखने से मालूम होता है कि ध्रुव और सूरज में कोई अन्तर नहीं। सूरज ध्रुव और ध्रुव सूरज बन जाता है अर्थात् सूरज जब सब तारों के बीच में होता है तो सब तारों-सितारों का ध्रुव बन जाता है और बाहर हो जाता है

तो ध्रुव, सूरज बन जाता है। दूसरा अर्थ—स्त्री से पुरुष और पुरुष से स्त्री बन जाता है। सूरज ध्रुव के प्रेम में ध्रुव को अपनी गोद में ले लेता है और ध्रुव सूरज के प्रेम में अपने मन में बिठा लेता है। इसी प्रेम को ग्रहण भी कहते हैं। ग्रहण ही से तारों-सितारों की उत्पत्ति होती है। हर एक सृष्टियाँ एक दूसरे के ग्रहण या छाया ही पड़ने से पैदा होती हैं। ग्रहण के अर्थ एक दूसरे का प्रेम एक दूसरे में अर्थ हो जाना (अर्थ) मय हो जाना।

१५—इस जंत्र को देख कर विद्वान लोग अपने-अपने धर्म के पूजने की रीति की पुस्तकें सोचकर बनाते हैं। कर्म या धर्म के अर्थ परब्रह्म को कहते हैं। कर्म-धर्म फर्म शब्द के अर्थ भगवान या सब से बड़ा पूज्य को कहते हैं और भगवान के बनाये हुए कानून या नीति के चलने के अनुसार को करम या धरम या सनातन धर्म कहते हैं। धर्म भगवान और कर को धरम कहते हैं। जैसे—कोई सवाल करता है कि तुम्हारा धर्म क्या है अर्थ तुम्हारा सब से पूज्य या सब से बड़ा देवता कौन है अर्थ परब्रह्म है। हमारा कार्यकर्ता भगवान या ईश्वर है। करन करावन आधा आधा है इसके दो अर्थ हैं एक तो जो कुछ करता धरता है जीव करता है और जीव के करणी का फल शरीर ही भोगता है। दूसरा अर्थ जो कुछ बनाता धर्ता है वह ईश्वर है। हम कुछ नहीं बनाते। अर्थ सब से बड़ा जज या न्यायकारी परब्रह्म है।

१६—इस यन्त्र के देखने से मालूम हुआ है कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश और अपार ब्रह्म के रथ में कितने घोड़े जोड़ने चाहिये। इसी के अनुसार या आधार पर पृथ्वी के रहने वाले राजे महाराजे और चक्रवर्ती राजाओं के रथ में कितने होने

चाहिक। महाराजा रावण और राजा दशरथ के ताज अथ मुकुट में भी यही दसों देवता नक्शी थे अर्थात् महाराजा रावण ने अपने योगबल और अपने साइन्स विद्या के जरिए से जब ऊपर की सब बातें मालूम की तब उसको मालूम हुआ कि मेरे से छोटा ब्रह्मांड में कोई नहीं है उसने अपने से सब को बड़ा पाया और माना। तब महाराजा रावण ने यही नवों देवताओं का चित्र या तस्वीर बनाकर अपने मस्तक पर धारण करता हूँ मुंह से उच्चारण किया कि हे अपार ब्रह्म मैं सबसे छोटा हूँ और सबको अपने सर पर धारण करता हूँ जबतक महाराजा रावण के दिल में यह ख्याल रहा तबतक वह अमर रहा और जब उसके दिल में अपनी बढ़ाई का ख्याल आया तब वह मारा गया। नवों रत्न और यह रत्न जिसकी पूजा या परिक्रमा करते हैं वह मिलकर दशरथ कहलाते हैं या नवों देवता और एक आप खुद मिलकर दसशीश कहलाते हैं। शरीर मुकुट है और यह दसो देवता उसमें नत्थी हैं इसी को दशरथ कहते हैं। यही हाल महाराजा दशरथ का है। रामराम सबकोई कहे दशरथ कहे न कोय, दशरथ जो कोई कहे उनकी मुक्ती होय।

दशरथ कहने का अर्थ—दसो देवताओं को पूजना, उनको बड़ा मानना, मस्तक पर धारण करना, अपने को सबसे छोटा ख्याल करना कहलाता है।

अर्थ—जीव को कभी अभिमान नहीं करना चाहिए।

इसी यन्त्र को देखकर बड़े बड़े मेमार, इन्जीनीयर वगैरह मन्दिर, मस्जिद और इमारतों में कलस बनाते हैं।

महात्मा लोग मस्तक पर तिलक लगाते हैं समय समय के किरणों के हिसाब से रङ्ग बिरङ्गे कपड़े पहनते हैं कि सुबह कौनसे रङ्ग का और दोपहर शाम रात्री को कौनसे रङ्ग का वस्त्र

पहिनना चाहिए। अर्थात् सूरज की किरणों के हिसाब से बनाए हैं। प्रातः काल पीला भूरे रंग का, दोपहर श्वेत अर्ध सफेद, तीन बजे भूरा श्वेत, शाम सलेटी रङ्ग लालमा क, रात्री में काला पहिनते हैं। अर्थात् वैराग्य, ज्ञान, भगती रंग के कपड़े पहिनते हैं।

१७—आकाश में वर्षात के दिनों में रङ्ग विरंगे धनुष पड़ने का कारण मालूम हुआ है कि किस वजह से यह तरह तरह के रंग बन जाते हैं।

१८—इसी यन्त्र के देखने से शास्त्र, पुराण, वेद का आधार मालूम हुआ है।

१९—इसी यन्त्र को देखकर विद्वान लोग यज्ञोपवीत अर्थात् जनेऊ चोटी मस्तक पर धारण करने का कारण मालूम किया कि किस वजह से विद्वानों ने धारण किया और नियम बनाया है।

२० यह यन्त्र रणधारियों के लिए बहुत उपयोगी है। इस यन्त्र के हिसाब से रणधारी जो कि अपने मुल्क या कुल रीति की रक्षा करने के लिए अपनी जान दूसरों की भलाई में दे देते हैं वही सबसे बड़ा योगी और सन्यासी माना गया है और लिखा गया है। सन्यासी वही जो कि दूसरों की भलाई पर जान दे दे जिसको अच्छे बुरे का ख्याल न हो।

२१—इस यन्त्र से राम शब्द के अर्थ मालूम किए गए हैं कि विद्वान ने राम शब्द को क्यों उत्तम माना और उच्चारण किया। परब्रह्म शब्द के अर्थ ब्रह्म शब्द के अर्थ कि किसको कहते हैं और क्या अर्थ रखते हैं।

२२—प्रकाश का अर्थ मालूम किया और इसके कितने नाम और हैं।

२३—ब्रह्म अर्थ मालूम किया कि इसमें कितने देवता अर्थ हैं और इससे बनते हैं।

२४—सनातन (सनातन धर्म) संयोग-संध्या-संध्या अंग्रेजी शब्द के अर्थ क्रुस्तानःकृष्ण-शंकर शब्द का अर्थ मालूल किया है। इस यन्त्र की महिमा की कोई गिनती नहीं कर सकता है अपार महिमा है।

यन्त्र का वरणन और उसका नाम

१—इस यन्त्र का नाम ध्रुव. यन्त्र, परब्रह्म बाल ब्रह्मचर्य वानचर्य ब्रह्मयन्त्र योग्य, वाशिष्ट यन्त्र, पारब्रह्म. दर्शन करने का यन्त्र, संसार का अद्भुत ज्योतिष विद्या का चमत्कारी यन्त्र अथ सामवेद यन्त्र है।

२—महेश या शिव यन्त्र, वृद्धविष्णु यन्त्र, सूरज, पृथ्वी, चाँद उत्री ध्रुव यन्त्र अर्थ वेद है।

३—विष्णु यन्त्र तरुण अवस्था भगवान यन्त्र सूरज पृथ्वी चाँद दक्षिणी ध्रुव यन्त्र अर्थ यजुर्वेद यन्त्र है।

४—ब्रह्मयन्त्र सप्तरूपी यन्त्र, बाल अवस्था यन्त्र अर्थ (ऋग्व वेद यन्त्र) इसी यन्त्र से सातों दिनों के नाम तरतीब वार रक्खे गए हैं।

५—पारब्रह्म यन्त्र, राहू केतू यन्त्र, वेद यन्त्र कहते हैं और इसका सूर्ययन्त्र भी नाम है (अ व स द) कच्छ रूप या कच्छ यन्त्र है (ल द म व) मच्छ रूप या मत्स औतार यन्त्र है। (फ-न-व) सूरज पृथ्वी ध्रुव अर्थराम यन्त्र है इस यन्त्र में वायु के चलने और उसके चाल का रुख बदलने का कारण पृथ्वी के

अपके किल्ली पर घूमने का कारण और उसके यात्रा करने के मार्ग का शक्ल कि किस शक्ल के रास्ते में सफर करती है। पृथ्वी पर सूर्य भगवान की किरण पड़ने से किस किस जगह पर और किस किस समय म बारिश होनी चाहिए। देखने से मालूम होगा (क ख ग) यन्त्र के नाम को साया या परछाईं यन्त्र कहते हैं इस यन्त्र से राहू केतु का साया (बुद्ध शुक्र) पर पड़ता है और सप्तऋषी तारों के साये के जरिए से या (पृथ्वी पर पड़ने से) सूरज के इर्द गिर्द नवों गृहों के रखने की तरकीब या यन्त्र मालूम होगा।

(ज) यन्त्र को देखकर हमारे मित्रों ने या हमारे ऋषी मुनियों ने सातों दिनों के नाम और सूरज के गिर्द रखना मालूम किया है और इन्हीं सातों दिनों को सप्तऋषी कहा और माना है।

(जत) जन्त्र म ६ छः गृहों को सूरज के गिर्द घूमता हुआ मालूम किया है कि किस किस तरह के रास्ते से यह गृह सूरज के गिर्द घूमते हैं। गोल लाइन या अण्डे की शक्ल म घूमते हैं।

(ह) यन्त्र में शिव अर्थात् महेश को देखा है और उनके गिर्द बड़े गृह कितने घूमते हैं आठ बड़े माने हैं।

बाल ब्रह्मचर्य पारब्रह्म ज्ञान चर्य यन्त्र में ब्रह्मचर्य का हाल मालूम होगा कि कितना ब्रह्मचर्य रहने से क्या हाल होता है।

(१) पारब्रह्म परमेश्वर के गिर्द नौ गृह घूमते हैं अर्थात् यही उनके कौंसिली हुए।

(२) शिव के गिर्द आठ गृह घूमते हैं और यही शिव के कौंसिली हुए।

(३) विष्णु के गिर्द सात गृह घूमते हैं और यही कौंसिली हुए।

(४) ब्रह्मा के गिर्द छः गृह घूमते हैं और यही उन के मेम्बर हुए।

(५) के गिर्द अर्थात् पारब्रह्म के गिर्द (सप्तऋषी राहु केतु) मिल कर नामिस्वर कौंसिली है और घूमते हैं या उनकी पूजा करते हैं। यही नौगृह परब्रह्म के रथ के घोड़े हैं।

नम्बर (१) सूक्ष्म रूप है और नम्बर (०) शून्य या गोल बिन्दी साकार रूप है।

नम्बर (१) ब्रह्म जन्त्र-बच्चा-गर्भ-सफेद सूरज है।
„ (२) ब्रह्म जन्त्र-बाल अवस्था-लाल सूरज है।
„ (३) विष्णु जन्त्र-तरुण अवस्था-लाल श्वेत सूरज है
„ (४) शिव जंत्र-वृद्ध अवथा-धुंधला सूरज है।
„ (०) परब्रह्म बाल ब्रह्मचर्य पार ब्रह्मज्ञानचर्य विष्णु भगवान जो कि सदा ब्रह्मचारी रहने वाला जो कि कभी नहीं सोता है हमेशा जागता रहता है उसका रङ्ग नीला श्वेत सूरज है।

नम्बर (०) से जितनी रेखायें सीधी निकलती हैं उन रेखाओं के इतने नाम हैं—

लालच की डोर, प्रेम का तार, बिजली का तार, वायरलेश का तार, हरजा मौजूद, सर्व व्यापक, सर्वज्ञ, करम लाइन, हर एक जातियों या जोतियों के मिलने की जगह, मोक्ष-लाइन, सूक्ष्म रूप या सूक्ष्म लाइन कहते हैं, हर एक जातितों या तारागणों का रास्ता है जो मनुष्य या तारागण या जीव या देवता वगैरह सीधे अपनी लाइन पर चलते हैं वह जरूर गोल बिन्दी तक पहुंच जाते हैं और जो टेढ़ा अर्थात् एक दूसरे की काट करता है वह गोल लाइन पर चला जाता है। इसीलिये मनुष्य को चाहिए कि किसी को बुरा न कहे और

किसी के शास्त्र को काट न करे............पृथ्वी पर अविनाशी भगवान या ब्रह्म बीज को कहते हैं अर्थात् सर्व व्यापक है.......आकाश में कृष्ण को कहते हैं मतलब (हरजा मौजूद) दोनों एक है और परब्रह्म के जुज या अंश हैं।

पृथ्वी ब्रह्मा के गिर्द ३६५¼ दिन में घूमती है।

ब्रह्मा विष्णु के गिर्द ७३०½ दिन में घूमते हैं।

विष्णु शिव के गिर्द १४६१ दिन में परिक्रमा करते हैं।

शिव परब्रह्म के गिर्द २६२२ दिन में परिक्रमा करते हैं।

सब से बड़े जंत्र अर्थ—(ध्रुव जन्त्र में) जो आठ अरे दिखाए गए हैं वही अरें आठों गृह या नक्षत्र हैं। सूरज भगवान के गिर्द रखने की तरकीब दिखाए गए हैं कि बुद्ध-शुक्र-पृथ्वी-मंगल-बृहस्पति-शनिश्चर-राहु-केतु को सूरज के गिर्द किन किन दिशाओं में रखना चाहिए कि पृथ्वी किस सिम्त में और मंगल किस दिशा में रक्खा जावे जिससे कि ज्योतिष विद्या के गणित में अन्तर न पड़े। यही आठों अरें और आठों दिशा और आठ भगवान की भुजा हैं। उत्तर-दक्षिण-पूर्व-पश्चिम के अरें या दिशायें भगवान के चारों भुजा हैं। इसी को चतुर्भुज भगवान कहते हैं। पूर्व-पश्चिम के अरें या दिशा दो भुजा बनेंगी। उत्तर का अरा सर दक्षिण का अरा पैर बनेगा। यही दोनों अरें धर्मराज और यमराज हैं। यही उत्तरी-दक्षिणी ध्रुव बनेंगे, यही फिर सूक्ष्म-रूप और शाकार रूप बनेंगे परब्रह्म और अपार ब्रह्म बनेंगे धर्मराज अर्थ—सब को एक सार देने वाला यमराज—अर्थ—आकाश का राजा दोनों एक अर्थ रखते हैं और एक हुये।

मनुष्य का साल या वर्ष—३६५¼ दिन का होता है।

देवताओं का साल—१३१४६० दिन का होता है।

ब्रह्मा का साल—४७३३६४०० दिन का।

विष्णु का साल—१७०४११०४००० दिन का।

महेश्वर का साल—६१३४७६४४०००० दिन का।

निराकार पर ब्रह्म का साल–२२०८५२७०७८४००००० दिन का

शाकार पर ब्रह्म का साल—७६५०६६७४८२२४०००००० दिन का होता है।

निर्गुण-सगुण ब्रह्म के साल की गिन्ती नहीं।

ब्रह्मा के गले की माला में ३६० सूरज की माला है।

विष्णु की माला में ७२० सूरज ऐसे चमकदार सितारों की।

शिव के गले में १४४० ब्रह्माँड की।

पार ब्रह्म के गले की माला में २२६८०० सूरज की माला से बनी है।

सप्त ऋषि जन्त्र

जमदग्नि ऋषि सूरज में;

विश्वामित्र ऋषि बुद्ध में;

गुरु वाशिष्ट ऋषि पृथ्वी पर;

अत्रि ऋषि शुक्र में;

भरद्वाज ऋषि मंगल में;

गौतम ऋषि वृहस्पति में और कश्यप ऋषि शनिश्चर में वास करते हैं। इन्हीं तारों या नक्षत्रों को सातों ऋषि या सप्तऋषि माना है।

जन्त्र में अट्ठाईसों (२८) नक्षत्रों को देख कर चारों वेद ६ छः शास्त्र और १८ अठारह पुराण बनाये हैं और चारों दिशाओं के सप्त-ऋषियों के जोड़ने से भी जगह के प्रभाव के

अनुसार (२२ जून या २३ सितम्बर व २३ दिसम्बर २२ मार्च) (७×४)=२८ अर्थ—सात गुणा चार=अट्ठाइस नक्षत्र भी बनते हैं—(चारों वेद+६ छः शास्त्र+अठारह पुराण) भी (२८) नक्षत्र बनेंगे और कौंसिलियों को जोड़ने से भी (६+८+७+६)=३०; तीस दिन का महीना सूर्य सिद्धान्त के हिसाब से बना है और इसी हिसाब से ब्रह्मा के गले की माला के दाने ३६० दाने की बनाई है। २८ गृहों की तकसीम [एक सूरज+(छः) गृह+विष्णु+शिव+ब्रह्मा+१८ (उपगृह)] मिलकर २८ नक्षत्र हैं। (जमदग्नि+(अर्थ दिन रविवार)+सोमवार+मंगल+वुध+बृहस्पति+शुक्र+शनिश्चर+राहू+केतु+ब्रह्मा+विष्णु+शिव+१८ उपगृह या पुराण)=३० दिन भी होते हैं और यही नक्षत्र फिर देवता वन जाते हैं मिसाल—दोनों उत्तरी दक्षिणी ध्रुव+सप्तऋषि+वुद्ध+शुक्र+राहु+केतु+पृथ्वी+चाँद और सूरज मिलकर १६ सोलह कला वन जाती हैं—(ब्रह्मा+ब्रह्माणी)+(विष्णु-लक्ष्मी) +(शिव-पार्वती)+सप्त ऋषि-पृथ्वी चाँद और सूरज मिलकर १६ सोलह कला—यमराज, धर्मराज, नौ गृह, राहू, केतु, पृथ्वी, चाँद, सूरज=१६ सोलह कला दोनों ध्रुव अर्थ (दक्षिणी उत्तरी,) नौ गृह, वुद्ध, शुक्र, पृथ्वी, चाँद, सूरज मिलकर १६ सोलह कला अर्थात् यही नक्षत्र उलट पलट कर ब्रह्मा से विष्णु और विष्णु से शिव, शिव से विष्णु, ब्रह्मा वनते रहते हैं और यही विष्णु शिव राहु केतु यमराज धर्मराज भी वन जाते हैं यही आकाश में सबसे वड़े सितारे भी हैं और आकाश में सब वड़े सितारों में शहेन शाह भी माने जाते हैं और ज्योतिष विद्या में पूज्य हैं।

नम्बर (१) और ९ नौ जहाँ कि जन्त्र में लिखा हुआ है नम्बर २ के दाहिने हाथ वाला या पूर्व वाला ७ और नम्बर

२ को पृथ्वी और नम्बर (०) को ध्रुव मानो यह अंग्रेजी न्यु साइंस ज्योतिष विद्या के हिसाब से बना है।

नम्बर (०) गोल चन्दी या शून्य को पृथ्वी और नम्बर (२) लाल रङ्ग वाले को सूरज और नम्बर (१) एक व (६) नं. को जहाँ कि ओ३म् लिखा हुआ है उत्तर वाले को ध्रुव मानिये. भार्थी प्राचीन ज्योतिष विद्या के हिसाब से कि जिस के गिर्द आठ (८) गृह घुमाये हैं–चन्द्र, बुद्ध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनिश्चर, राहु, केतु घूमते हैं और फिर नम्बर (०) ही को सब से बड़ा मानकर आठ नक्षत्र या गृह और १ एक सूरज मिलकर नवों को घुमाया है। अंग्रेजी हिन्दोस्तानी साइंस जोतिष विद्या का मिला जुला मध्य समय की ज्योतिष विद्या है।

हमारी समझ के अनुसार इस जन्त्र से जो अर्थ या हमारे कर्म विद्या के जरिये से जो कुछ मालूम हुआ है उसके आधार पर उसकी महिमा वरणन किया है जो कि आकाश में हमारे से बहुत बड़े बड़े आकार वाले ब्रह्माण्ड स्थित हैं उनका क्या असर या प्रभाव हम पर पड़ता है और उनसे क्या शिक्षा हमको मिलती है और उनसे क्या शिक्षा लेनी चाहिये। इसके उपरान्त विद्वान् और योगी पुरुष जो जो समय के अनुसार इस जन्त्र से अपने या वेद के अनुसार अर्थ निकाल सकें अर्थ लगाकर इस जन्त्र को दृढ़ा देवें हमारी यही प्रार्थना है।

संसार के चरणों की रज—

रामदास

सूचना

पृथ्वी और आकाश के ब्रह्माण्डों में कोई अन्तर नहं हैं सब बराबर मालूम होते हैं। केवल इतना अन्तर है कि वह हमारे से बड़े आकार वाले जीव या रूप में हैं हम सब छोटे आकार वाले जीव के रूप में हैं। परन्तु योग बल से देखने से दोनों एक ही मालूम होते हैं हम सब जीवों में और उनमें कोई भेद भाव नहीं हैं हम सब बराबर हैं न कोई बड़ा है न कोई छोटा है इसीलिये ऊपर के कर्तव्य का आधार लेकर थोड़ा बहुत ब्रह्मप्रकाश पुस्तक में भगवान की कृपा से उनका हाल वरणन करता हूँ आप सज्जनों से प्रार्थना है कि जो कुछ इसमें गलती हो उसको आप सब विद्वान क्षमा करेंगे।

आपका दर्शनाभिलाषी—
रामदास

विश्वास

आज कल बहुत से पढ़े लिखे पुरुष धर्म की किताबें जैसे रामायण गीता आदि जरूर पढ़ लेते हैं और पढ़ लिख कर अपने को बहुत बड़ा विद्वान एवं बहुत बड़ा ज्ञानी ख्याल करते हैं परन्तु जैसा कि किताबों में लिखा हुआ है और जैसा कि उन्होंने पढ़ा है बहुत कम अमल करते हैं या उस बात को समझने की कोशिश नहीं करते हैं। उनको अवश्य चाहिये कि जो कुछ पढ़ें उस पर अमल जरूर करें बहुत से तो राम कृष्ण को जानते ही नहीं कि राम कृष्ण के अर्थ क्या हैं हमारी ही

किताबों से दूसरे मुल्क या देश वाले पढ़कर उनसे अर्थ निकाल लेते हैं हम गप शप में रह जाते हैं क्योंकि हम सबको अपनी पुस्तकों पर विश्वास नहीं है इसी से हमको कम तजुर्बा होता है इसी कारण से हम अन्य देश वालों से पीछे हैं। इसलिए हर एक को चाहिये कि अपने देश की रीति पर विश्वास करे और चले। सारा संसार विश्वास ही पर स्थित है। एक कथा है—एक समय नारद मुनि जी साधु के भेस में घूमते हुये जा रहे थे कि रास्ते में उनको एक ग्राम मिला और चलते चलते उनको वहीं शाम हो गई और ठहरने की इच्छा से वह कोई जगह ढूँढ़ने लगे उसी समय में एक स्त्री निकली और साधु को देखकर उसने उनका स्वागत किया और कहा कि हे महात्मा जी आप हमारे घर पर पधारिये और आज विश्राम कीजिये। नारद मुनि जी ने सोचा कि चलो वहीं विश्राम करेंगे हम को आखिर कहीं न कहीं जरूर ही डेरा लगाना ही है इससे अच्छा चलो ग्राम ही में विश्राम करें। नारद जी यह बात सोच कर जल्दी से उस स्त्री के साथ चल दिये। और उसके घर में जा ठहरे—स्त्री ने भोजन बनाकर उनको जिमाया और कहा कि हे जोगी जी हमको आप कुछ योग मन्त्र दीजिए जिससे कि मैं कृतार्थ हो जाऊँ। आपकी बड़ी दया होगी। नारद जी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। उसके बाद उसका पति काम काज कर रात को आया स्त्री ने अपने पति को भोजन करा कर जब संतुष्ट हुई तब उसने अपने पति से कहा कि हे पति देव एक बड़े महात्मा साधु जी आये हुये हैं और बहुत ब्रह्मज्ञानी हैं आप भी उनके शिष्य बन जाइयें मैंने तो पहले जोग मन्त्र ले लिया है यह शब्द सुन कर उसका पति बहुत क्रोधित हुआ और कहा कि चल हट तू तो पागल हो गई है। यह शब्द अपनी स्त्री को कह कर साधु के पास गया और उनको एक जूता फेंक कर मारा और कहा कि तू मेरा

घर बिगाड़ने आया है, चल हट। नारद मुनि ने जूते को उठा कर अपनी गोद में रख लिया—जब यह तमाशा उस आदमी ने देखा तो दिल में सोचा कि यह साधु तो बड़ा गरीब और कुछ करतूती मालूम पड़ता है कि हमने उसको जूतों से मारा परन्तु वह बजाय हमको कुछ कहने या गाली देने के बजाय मेरे जूते को गोद मे रख लिया।

यह तमाशा देखकर उसने हाथ जोड़ कर महाराज से पूछा कि हे महाराज हमने तो आपको मारा परन्तु आपने हमको कुछ कहने के बजाय जूते को गोद मे रख लिया तब नारद जी ने जवाब दिया कि हे बच्चा हमको तो तूने नहीं मारा तूने तो अपने ही को मारा है। तेरा मेरा शरीर पाँचों तत्वों से ही बना है इसलिए पाँचों तत्वों ही को मारा। मेरा और तेरा शरीर तो बराबर है इसलिए तूने अपने ही को मारा मुझे नहीं मारा। दूसरे अगर मेरा बच्चा मुझे जूते से मारता तो क्या मैं उसको मार देता नहीं जैसे वह मेरा बच्चा वैसे ही तू मेरा बच्चा यह सुनकर आदमी तो और भी कुछ चिन्तित हुआ कि यह तो कोई बहुत ही बड़ा ब्रह्मज्ञानी है यह सोचकर बोला कि हे गुरू जी महाराज चेला तो आपका जब बनूंगा कि मैं आपका कुछ न कहा करूंगा इस बात पर राजी हो तो मैं आपका दास बनूंगा यह बात नारद मुनी जी सुनकर बोले कि हे बच्चा कुछ तो कहा करेगा। जब मैं चेला बनूंगा कि कुछ नहीं कहा करूँगा इस बात पर राजी हो तो चेला बना लो। नारद जी फिर बोले कि बच्चा कुछ तो कहा मानेगा सब न माने तो एक बात तो मानेगा। तब उसने पूछा कि महाराज वह क्या बात है। नारद जी ने कहा कि भाई सच तो बोलेगा। आदमी ने सोचा कि सच बोलने में मेरे काम में कोई बाधा

नहीं पड़ती है क्योंकि वह चोरी वगैरह करके अपना पेट और गृहस्थ आश्रम पालता था।

जब उसने सोचा कि सत्य बोलने से हमारे कार्य में कोई हानि नहीं होती है तो कहा कि अच्छा गुरू जी हमको चेला बना लो मैं सत्य तो बोलूंगा परन्तु और कोई बात आपका कहा नहीं करूंगा नारद जी ने उसको चेला बना लिया और कहा कि तू सत्य बोलना आदमी ने यह बात स्वीकार कर ली यह वचन कह कर नारद जी विश्राम कर गए और प्रातः उठ चल दिए। अब उसने सत्य बोलना शुरू किया और अपना कार्य बराबर करता रहता था। एक दफा की बात है कि वह राजा के महल में चोरी करने चला और चलते चलते कहता जाता था कि हम चोरी करने जा रहे हैं इसी तरह से वह रास्ते में बकता हुआ कहता जाता था और बकते बकते राजा के महल के दरवाजे पर पहुंच गया और महल में घुसने लगा तब वहाँ के सिपाहियों ने रोका और कहा कि तुम कहाँ जा रहे हो उसने जवाब दिया कि अबे मैं राजा के यहाँ चोरी करने जा रहा हूँ यह बात जब सन्तरियों ने सुनी तो चुप हो गये कि कहीं चोर यह बात थोड़े ही कहेगा कि मैं चोरी करने जा रहा हूँ यह तो मालूम पड़ता है कि यह कोई सत्यवान आदमी है और राजा से मिलने जा रहा होगा। यह सोचकर संतरियों ने जाने दिया इसी तरह से वह बकते बकते महल के तीनों दरवाजे पार कर गया और महल में घुस गया महल से रानी साहबा का सोने का कीमती हार और कुछ रुपए व अशर्फियाँ और चाँदी वगैरह की चीजें उठा कर चलता हुआ सोने का हार तो अपने गले में पहन लिया और बाकी को पोटली बनाकर अपने बगल में दबा लिया और यह शब्द बकता हुआ कि म

चोरी करके ला रहा हूँ। वह जिस दरवाजे पर पहुंचा और सन्तरी ने पूछा कि यह हार कहाँ से ला रहा है तो उसने कहा, जनाब चोरी करके ला रहा हूँ यह बात सुन कर संतरी चुप हो जाते थे और कहते थे कि कहीं चोर चोरी करके यह कहेगा कि मैं चोरी करके लाया हूँ यह तो कोई राजा साहब का मिलने वाला आदमी है और राजा साहब ने उसको इनाम वगैरह दिया होगा यह समझ कर चुप हो जाते थे और उसको दरवाजे से बाहर जाने देते थे इसी तरह से वह सत्य के कारण महल से बाहर पार होगया और अपने घर जा पहुंचा और जेवरात वगैरह बेच कर ऐसोआराम करने लगा। उधर जब महल म चोरी का पता चला कि महल में चोरी हो गई है तब दरवाजे के संतरियों को अकल आई कि चोर तो वही था जो कि हार पहने जा रहा था अब क्या करें बड़े सोच में पड़ गए कि अगर हम कहते हैं कि चोर हमने आते जाते देखा है तो हमको सख्त जुर्म लगता है यह सोचकर सब सिपाही चुप हो गए और इस बात का जिक्र नहीं किया। जब राजा साहब के यहाँ से यह हुकम हुआ कि चोरी का पता लगाओ नहीं तो सबको सख्त सजा होगी। अब सब कर्मचारी चोर का पता लगाने लगे और शहर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो कोई इस चोरी का पता लगाएगा उसको इनाम दिया जाएगा जब चोर ने इस ढिंढोरा को सुना कि चोर का पता लगाने से इनाम मिलेगा। अब चोर यह बकता हुआ कि चोरी राजा के महल में हमने की है। शहर में खूब ठाट बाट से घूमने लगा। जो लोग इस बात को सुनते थे कि चोरी हमने की है तो वह सब हैरत में होते थे कि कहीं चोर भी यह कहते हैं कि चोरी हमने की है यह तो शाह आदमी है और पागल है परन्तु वह सब के पूछने से भी यही कहता था कि

चोरी हमने करी है इसी तरह से होते होते बात राजा तक जा पहुंची कि यह एक आदमी ऐसा बकता और कहता है कि चोरी हमने की है। राजा ने सोचा कि बड़ी अचम्भे की बात यह है कि कहीं चोर कहा करते हैं कि चोरी हमने करी है अच्छा उसको बुला कर पूछो कि भाई क्या बात है सच सच बता राजा साहब ने बुलावा भेजा और चोर दरबार में हाजिर हुआ। राजा साहब ने पूछा कि चोरी तुमने करी है चोर ने जवाब दिया कि हाँ चोरी हमने करी है। अच्छा चोरी का माल कहाँ पर है चोर ने कहा कि हमारे पास है परन्तु मैं बतलाऊँगा नहीं क्योंकि कुछ तो सामान हमने बेच कर खा लिया है रुपया पैसा सब खर्च हो गये मगर हाँ रानी साहबा का सोने का हार अभी बाकी है दूंगा नहीं क्योंकि मैं क्या खाऊंगा। राजा साहब ने सोचा कि अजीब बात है और चोरी है भला चोर चोरी करे और सब बात बतला भी देवे और देने से भी इन्कार और सब शहर में कहता भी फिरे कि चोरी हमने करी है।

मालूम होता है कि यह चोर नहीं है। यह तो सब बात सत्य कहता है तब राजा ने कहा कि हार हमको दिखला सकते हो चोर ने कहा दिखला दूँगा परन्तु दूंगा नहीं। राजा ने कहा कि अच्छा मत देना चोर जल्दी अपने घर से हार ले आया और राजा साहब को दे दिया राजा हार देखकर बहुत आश्चर्य में हुआ और कहा कि यह चोर नहीं हैं और कहा कि कोई सत्यवान है शायद कोई मुसीबत में पड़कर यह हार ले गया है और बहुत बड़े खानदान या कुटुम्ब का आदमी है राजा यह ख्याल करके चोर से कहा कि भाई तुम चोरी करना छोड़ दोगे तो मैं तुम्हारा सदैव के लिए खाने पीने का प्रबन्ध किये देता हूँ

चोर ने सोचा कि हमको तो खाना ही चाहिए चाहे जो काम हो खाना मिलना चाहिए। यह सोचकर राजा से कहा कि अच्छा चोरी करना छोड़ दूँगा राजा ने खुश हो कर उसको कई गाँव दे दिये और कहा कि तुम इससे खेती आदि करके खूब खाओ और मौज करो लगान तुमसे नहीं लिया जायेगा और तुम्हारी सजा माफ किये देता हूँ गुरू के एक बात मानने से चोरी करना छूट गया इसलिए मनुष्य को चाहिए जो काम करे उसमें अपनी सारी ताकत लगा दे और विश्वास से करता चला जावे अवश्य कामयाबी होती है।

❋ ब्रह्म प्रकाश ❋

अपार ब्रह्म या गर्भ अविनाशी भगवान

इस यन्त्र से मालूम हुआ कि हमारे विद्वानों ने सूक्ष्म रूप के लिहाज से गर्भ ही को अपार ब्रह्म या अविनाशी भगवान माना है इसी कारण से इसका नाम गर्भ जन्त्र है और गर्भ जंत्र ही को मत्स्य औतार कहा है। शरीर में मच्छ कहाँ पर है और कहाँ से पारब्रह्म मस्तक में जाते हैं और फिर मस्तक से ही नीचे को दूसरी जगह या दूसरे ब्रह्माण्ड में प्रवेश होते हैं इसी से कच्छ रूप भगवान ने अपने शरीर ही को कि जिस पर वह उस समय विराजमान थे कच्छ रूप माना है अर्थात् पृथ्वी ही को कच्छरूप नीले समुद्र में तैरते हुये देखा और किश्ती नुमा रूप में पाया जिसको कि मच्छ रूप या शरीर या हवाई विमान या-दुनिया या जहाज कहते हैं नीले समुद्र अर्थात् आकाश में उड़ते हुए देखा और अपना आधार पृथ्वी ही पर पाया या देखा इसी

वजह से कल्कि अवतार भगवान ने पृथ्वी ही को सबसे बड़ा माना अर्थात् अपने शरीर ही को श्रेष्ठ माना और पृथ्वी के गिर्द सारे ग्रहों को घुमाया और पृथ्वी की तारीफ और प्रशंसा की और सब कुछ उसका हाल वर्णन किया और पृथ्वी ही का आधार लेकर अपने शरीर को जनेऊ धारण कराया और कर्धन पहनी-जनेऊ जन्म्योया जन्म देने वाला का मार्ग या प्रणाम फांस के अर्थ सुरज भगवान पृथ्वी के गिर्द जिस मार्ग में घूमते हैं उसी मार्ग को विद्वानों ने जनेऊ बनाया है क्योंकि इस मार्ग को कोई नहीं काट सकता है इस मार्ग को काटने वाला फौरन भस्म हो जाता है क्योंकि सुरज बहुत गर्म और अन्दर सर्द है इसी कारण से जाने वाला उसके नजदीक करोड़ों मील दूर ही भस्म हो जाता है या सर्दी के कारण सर्द हो जाता है वहां तक नहीं पहुंच पाता है इसी वजह से जनेऊ को सूरज भगवान का कवच बनाया है और अपने शरीर के गिर्द घुमाया है कि जिससे बाहर की कोई बला या बाहर का शस्त्र शरीर को न काट सके हमारे बड़े बड़े रण धार्यों और साइंसदानों ने तो लोहा पीतल तांबा वगैरा धातू का जनेऊ बनवाया जिसको कि कवच या कमर पेटी तर्कश कालर कहते हैं रणधारी अपने शरीर या रण करने के लिये जाते हैं तो धारण करते हैं कि शरीर को बाहर का शस्त्र न असर करे और न काट सके इसी कवच को जनेऊ कहते हैं किसी ने तीन लरकी और किसी ने चार पाँच लर की और किसी ने सात नौ लर की बनाकर पहिनते हैं तीन लर की तो इस वजह बनाते हैं कि सूरज भगवान के गिर्द और नजदीक दो बड़े तारे राहू और केतू घूमते हैं इन्हीं तीनों देवताओं के मार्ग को तीन रस्सी बनाकर एक रस्सी बटली या बनाली और तीन लर की जनेव शरीर पर धारण किया और कोई चार लर की जो कि सूरज

राहू केत् चाँद के मार्ग को एक रस्सी बनाली और पहन ली और कोई पांच तत्वों को बांध कर अर्थात् एक रस्सी में लपेट कर पांच लर की जनेऊ पहिन ली कि पांचों तत्त्व मेरी रक्षा करें कोई सात और नौ लर की बनाली सात लर की सातों दिन या सप्त ऋषि के मार्ग का जनेऊ बनाया कोई कोई तो या बहुत बड़े विद्वानों ने तो हजारों लाखों लरयों का जनेऊ बनाया-और शरीर पर धारण किया जिसको कि रणधारी बख्तर बन्द कहते हैं और उसको भिल्लम भी कहते हैं शिकारी लोग शिकार करने जाते समय अपने अपने हाथियों पर भी शेर के डर के मारे डाल देते हैं यह कवच हजारों रिङ्गों या गोल मुन्दरी या छल्ली से बनता है अर्थात् हजारों लाखों सितारों के मार्ग को मिलाकर एक रस्सी बटली और अपने ऊपर पहिन लिया कि हे सब देवता गणों हमारी रक्षा करो अर्थात् हम सब को पूजते हैं और अपने शरीर पर धारण करते हैं अर्थात हम सबसे छोटे हैं जब हम छोटे बन गये तो हम रणजीत गये छोटे बनने वाले से कोई लड़ता ही नहीं है जब उससे कोई लड़ता ही नहीं तो वह जीत गया। बलः न से कोई नहीं लड़ता है सब कोई डरता है जो कोई अबध होता है उससे कोई नहीं लड़ता है और जो कोई लड़ता है तो हार जाता है सूरज भगवान भी कहते हैं कि हे भाई हम हजारों लड़ियों की जनेव पहिनते हैं वह जनेऊ कौन है जो कि हमारे इर्द गिर्द हजारों लाखों सितारे तारे और सृष्टियाँ घूमती या परिकर्मा करती हैं इन्हीं सितारों और देवताओं का मार्ग का रास्ता मेरा जनेऊ है और हजारों लाखों छल्लों का कवच है जो कि मैं अपनी रक्षा के लिये पहिनता हूँ कि जिससे की कोई मेरे नजदीक न पहुंच पावे और काटने वाला भष्म हो जावे सूरज भगवान सबसे छोटे भी हैं और सबसे बलवान भी हैं भगवान कहते हैं

कि हम गोलबिन्दी का गोलबिन्दी हूँ परन्तु मेरा प्रकाश सबसे बड़ा है इसी कारण से प्रकाश ही को सर्व व्यापक या हर जा मौजूद कहा गया है। जनेऊ तीन प्रकार की अधिक मानते हैं। पहला जनेऊ कर्धन जिसको ब्रह्मफाँस या ब्रह्म जनेऊ भी कहते हैं। दूसरी परब्रह्म फाँस या जनेऊ तीसरी शिव फाँस या जनेऊ जिसको कि माला जोकि गले की रक्षा करता है। परब्रह्म जनेऊ सीने की और ब्रह्म फाँस कमर की रक्षा करता है। ब्रह्मा विष्णु शिव यही तीनों देवता शरीर के जनेऊ हैं और यही शरीर की रक्षा करते हैं। टोपी सर की और जूता पैर की रक्षा करते हैं यह भी जनेऊ और कवच हैं ब्रह्म नीचे परब्रह्म ऊपर रक्षा करते हैं ब्रह्म शरीर की परब्रह्म सबकी रक्षा करते हैं यही यमराज धर्मराज हैं। दक्षिणी उत्तरी ध्रुव हैं, राहु केतु हैं पहला जनेऊ बच्चों को बाल ब्रह्मचार्यों को ज्यादा पहिनाते हैं कि ब्रह्मचर्य रहे इस कानून को बच्चा पालन करे—इससे ब्रह्म बाहर न जावे और न जाने देवेंगे साधु महात्मा मूंज की रस्सी का कधन बनाते हैं। स्त्रियाँ चाँदी सोने की बच्चे धागे या डोरे का पहिनते हैं। बहुत से विद्वानों का विचार है कि हम पाँचों तत्वों को एक जगह बाँध लें कि जिससे शरीर बनता है उसमें से एक तत्व भी कम न होने पावे। कि जिससे शरीर को कष्ट न पहुंचे क्योंकि पाँचों तत्वों में से जब किसी तत्त्व का अंश कम होता है तभी शरीर को उस तत्व के वियोग में कष्ट होता है। इसलिये हम सब तत्त्वों का एक जगह गट्ठर या पोट बाँध दें कि कोई इससे या इस खूंटे से या इस रस्सी से बाहर न भागने पावे। अर्थ—ब्रह्म को कैद कर लेना है, ब्रह्म इस कैद की दीवार से बाहर न भागने पावे। इसी कारण कर्धन ५ धागे की बनाते हैं और बच्चों को पहनाते हैं कि वह ब्रह्म का पालन या पूजन करें और उस रस्स से

वाहर न जाने दें। ब्रह्म अर्थ—तीन तत्व साकार रूप से भी लिया जाता है और परब्रह्म अर्थ पाँच तत्व साकार और निराकार से लिया गया है अर्थात् (ब्रह्म, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, परब्रह्म) से है और इसको अग्नि, वायु, जल, मिट्टी, आकाश। अर्थ—ब्रह्म अर्थ वीज भगवान कहते हैं (सूरज से कृण, कृण से जड़ी बूटियाँ, जड़ी बूटियों से जल-बूंद अर्थ वीज जल से मिट्टी, मिट्टी से शरीर) पाँच ज्योतिष विद्या से (रविवार, सोमवार मंगल) तीन लर वुद्ध मिलकर चार लर वृहस्पति मिलकर पांच लर शुक्र मिलकर छः लर शनिश्चर मिलकर सात लर राहु केतु मिलकर नौ लर की और सव सितारों को मिलाकर अपार लर की कवच वनाते हैं। पृथ्वी के आधार पर अपने शरीर में पार ब्रह्म को देखा और उसकी स्तुति की। पृथ्वी ही को हमारे पंडितों ने वीच में मानकर नौ गृहों को इस के गिर्द घुमाया। उसी को मच्छ कच्छ अवतार सतयुग ब्रह्मा ब्राह्मण वाल अवस्था माना है। इसीलिये आप पृथ्वी पर औतार लेकर नौ गृहों या नौ रत्नों को मालूम किया था। अर्थात् (नौ माह समाधि लगाकर या गर्भ में रह कर नौ रत्नों या नौ नक्षत्रों को देखकर उनकी पूजा की और फिर पूजा करने के वाद उन गृहों को काट कर या नौ माह समाधि में व्यतीत कर के पृथ्वी पर वाहर आये। इसी कारण से भगवान पृथ्वी पर अवतार लेकर (अर्थात् पैदा होकर) नौ गृहों को मालूम किया अर्थात् गर्भ के अन्दर का हाल और यही गर्भ के अन्दर वाला हाल ऊपर देखा। अर्थ यह कि गर्भ में ही समाधि के जोर से ऊपर का हाल मालूम कर लिया। आकाश में नौ वड़े गृहों या नक्षत्रों को स्थापित किया या देखा। अन्दर के दुख सुख के हाल का वर्णन किया, अच्छे, वुरे गृहों की पहिचान की और उनके लिये वैसे ही काम उनके करने को वाँटे, इसी को नौ रत्न कहते हैं। सव अमृत और

विष इसी में है। इसी से हमारे योगी भाई और विद्वान शरीर के अन्दर नौ माह गर्भ या समाध में ब्रह्म को विठाकर या रख कर अन्दर ब्रह्म बाहर ब्रह्मा या बाल अवस्था बनाई है। नौ घरों ही या नौ गृहों से ही सब कुछ बनाया है इसी नौ गृह या गाँठ में अच्छे बुरे सब कुछ जहर अर्थ हैं। बगैर अच्छे बुरे या एक दूसरे के मदद से काम नहीं चलता है। यही नौ गृह गर्भ में, और ऊपर भी यही नक्षत्र हैं (गर्भ में नौ माह या नौ गाँठ या नौ घर हैं ऊपर नौ बड़ी जातियाँ हैं) बच्चा पहिले इन गृहों को गर्ग में समाधि लगाकर भ्रमण करता है। जब वह बाहर निकलता है तो उसको मालूम होता है कि हम किन २ वस्तुओं के सत्त से बने हैं और हम में कौन कौन वस्तुयें जुड़ी हैं और कितनी बूटियों के सत्त से बने हैं। किन बूटियों को तपा गलाकर सत्त लिया गया है और कौन सी बगैर तपाये गलाये ही उनका सत हम को मिल जाता है। कौनसे देवता का हम पर साया पड़ता है और किस देवता के अंस हैं उन सब को पहि-चानता है। और अपनी ही बाल अवस्था को वह साकार रूप भगवान बना लेता है जैसे कृष्ण जी ने अपनी बाल अवस्था को पुजाया है इसी कारण से श्रीकृष्ण और श्री रामचन्द्र जी को बाल ही अवस्था के रूप में चित्र बनाया जाता है और भगवान मान कर उनको पूजा जाता है। बाल बच्चों ही की परवरिष करना भगवान का उत्तम पूजना है। साकार रूप में भगवान पुत्र ही को कहते हैं जो दो वस्तुओं की रगड़ से प्रगट हो वही साकार रूप भगवान है। भगवान दो रगड़ खाने वालीं वस्तुओं का प्रेम है। अर्थ—प्रेम ही को भगवान कहते हैं। पुत्र सब जीवों का प्रेमी है। यही प्रेमी वस्तु सब को मार डालता है। अर्थ सब से बड़ा है—रामायण में देखो दशरथ और दशानन अर्थ—रावण दोनों एक ही अर्थ रखते हैं। यह भी दशरथ और

वह भी दसरथ और दोनों एक ही के बाण से मारे गये। उधर दसरथ ने राम के प्रेम के वियोग में जान दे दी। इधर रावण सीता के प्रेम में राम को दुश्मनी के ख्याल से याद करते करते मारे गये। अर्थ—दोनों प्रेम ही के बाण से मारे गये और मारने वाला भी सब का प्रेमी ही था। प्रेम ही बाण बनकर प्रेम ही को मारा। अर्थ—प्रेम ही सब को मार भी सकता है, और जिला भी सकता है। शक्ति अर्थ—कही स्त्री से भी लिया गया है। दसरथ को मारने वाली शक्ति केकई उधर रावण को सीता हुईं। शक्ति ही सब की प्रेमी है। राम ने सीता के प्रेम में रावण को मारा था। राम का प्रेम सीता में था दशरथ का केकई में, रावण का सीताराम में। लंका में सीता शक्ति ने रावण को, अयोध्या में केकई की शक्ति ने दशरथ को मारा। रावण सीता के वियोग में, दशरथ राम के वियोग में मरे। रावण का प्रेम सीता में और सीता का प्रेम राम में था अर्थ—सब का प्रेम राम में था। अर्थ—(प्रेम ही का बाण प्रेम ही के बाण को काट सकता है) और प्रेम ही प्रेम को रुलाता भी है और खुद भी रोता है जैसे—

(लक्ष्मण शक्ति दृष्टः) अयोध्या वाले राम को रोए, राम लंका में रोये अर्थात् अयोध्या और लङ्का वाले सभी राम को रोये और राम सभी के लिये लङ्का में रोए। पहिले अवध नाम ब्रह्मा सूबे का था। उसके बाद लङ्कापुरी अयोध्या बनी। जब राम ने लङ्का को जीता तो कोशलपुरी अयोध्या बनी। अब जहाँ बनेगी जो राज्य चक्रवर्ती बनेगा वही अवध या अयोध्या होगी।

राम लंका में क्यों रोये—राम की अयोध्या उस समय लङ्का ही थी। कोशलपुर नहीं था इसलिए राम को अपने धाम ही में रोनेवालों के साथ रोना पड़ा क्योंकि रुलानेवाला राम का प्रेम

ही होता है-इस अयोध्या के नाम बदलने का हाल रामप्रकाश पुस्तक में लिखा गया है अर्थात् अयोध्या वही जहाँ राम हों, उस वक्त रोते समय राम लंका ही में थे इसलिये उस समय की अयोध्या लङ्का पुरी ही थी।

सीता का वियोगी कौन अर्थ—राम थे इसी साकार रूप भगवान को मच्छ अवतार कहते हैं क्योंकि शरीर एक किश्ती नुमा रूप है जिसके दो पतवार हैं अर्थ—दो पर या हाथ हैं। मनुष्य इन्हीं दोनों परों से कर्म काँड के समुद्र में तैरता है। इस मच्छ अवतार का चित्र जंत्र चक्रवर्ती में खिंचा हुआ है। जिस में (ल व मद) जंत्र मच्छ रूप ब्रह्माँड है। यह मत्स्यरूप ब्रह्माँड आकाश ऐसे नीले समुद्र में तैरने वाला जहाज या किश्ती है और इसी रूप मे सब सूर्य परिवार एक सूर्य परिवार दूसरे सूर्य परिवार की परिक्रमा करता है जसे—पृथ्वी परिवार अंडे की शक्ल में ध्रुव के गिर्द परिक्रमा करती है इसी से उत्पत्ति का श्री गणेश होता है। शरीर भी एक सृष्टी है। शरीर में अविनाशी भगवान अंडे के रूप में ही नाचता है। और परिवरिश पाता है। ब्रह्म अंडे ही के रूप में गर्भ में बैठ कर अपने ऊपर भभूत रमाता है और अपने शरीर को भभूत ही से बढ़ाता और बनाता है। शरीर में कमर के नीचे झिल्लियाँ होती हैं, जहाँ से ब्रह्म यानी (बीज भगवान) जिसको अविनाशी भगवान भी कहते हैं। आरम्भ होता है अर्थ शुरू होता है अर्थात् गर्भ में अविनाशी प्रवेश करता है। यहीं से आगे हर एक वस्तु का बढ़ना आरम्भ होता है। इसी अविनाशी भगवान को ब्रह्म-आत्म-जीव-सत्त-गर्भ अवस्था जीव-आतम-सर्व व्यापक अर्थात् जो शब्द आखीर में मुख से बोलते हुये ओंठ या लब बन्द हो जावें अर्थ—(मुंह बन्द हो जाय) वह सब शब्दों से जो शब्द बनता है वह सब नाम इसी अविनाशी का है जैसे—ओरम् कर्म

धम फर्म पाप बाप राम नाम श्रम वगैरा। इसी को कामदेवता भी कहते हैं। श्वेत बीज सूरज भगवान निर्मल जल अग्नी वायु का फोटो लेने से इनका रूप कागज पर नहीं आता है उसमें जब मैल होगा तब फोटो लेने से कागज पर तस्वीर बन जावेगी। जब यह वस्तुयें निर्मल और साफ होती हैं तो यह निराकार रूप हैं जब इस पर रङ्ग चढ़ जाता है तो यह साकार रूप बन जाता है और फोटो लेने से तस्वीर खिंच आती है। जब यह वस्तु गर्भ मे प्रवेश होती है तो इस वस्तु की फोटो नहीं आवेगी। परन्तु जब यह गर्भ में रङ्ग पकड़ने लगता है यानी भभूत रमता है अर्थात् बढ़ने लगता है तो फोटो आजावेगी। फोटो आने वाली वस्तु ही को शरीर साकार रूप भगवान कहते हैं। यह वस्तु सब वस्तुओं के तपाने गलाने और सब वस्तुओं के जोड़ने से बनती है। जब यह वस्तु गर्भ से बाहर होती है तो बाहर ब्रह्मा, जवानी में विष्णु और बुढ़ापे में शिव बनता है। अर्थात जब सृष्टी रचता है तो ब्रह्मा और जब वह बाहर से पैसा कमाकर लाता है तो विष्णु और जब वह डाँट डपट ने लायक होता है तो शिव बन जाता है।

भगवान और बच्चे की खासियत या स्वभाव या प्रकृति

भगवान या बच्चे की प्रकृति या स्वभाव एक है यह किये हुये फल को याद नहीं करता है और आगे ही को चलने की कोशिश करता है दोनों में भोलापन है दोनोंही सबके दिलको खुश करने वालेहैं और घरको उजाला करनेवाले परब्रह्मका चमत्कार है दोनोंमें ही घमंड नहीं होता है इसी बाल अवस्था ही से ऋग्वेद बनाया

गया है ऋग्वेद में कामदेव अर्थ (कर्म देवता) या अविनाशी को बढ़ाने की तरकीब या रीति जिससे यह बढ़े।

खाने पीने की तरकीब, प्राणायाम, आसन, ध्यान, सफाई वगैरह का हाल अर्थात् जिस जिस रीति से यह बढ़े और पुजे ताकतवर बने वह सब मन्त्र जन्त्र ऋग्वेद में लिखा गया है इस बाल अवस्था को हमारे विद्वानों ने सत्युग और ब्रह्मा ब्राह्मण माना है पहले अपने शरीर को पूजना चाहिये और उसके बाद पृथ्वी को और उसके बाद ध्रुव को माना है। ध्रुव से पृथ्वी और पृथ्वी से हम सब पैदा हुए हैं। हमारा करन्ट पृथ्वी से और पृथ्वी का ध्रुव से अर्थ है बाल अवस्था के पूजने में विद्यादान पढ़ना लिखना वगैरा सब आ जाता है धरती माता के पूजने में कृषी या खेती वगैरा का काम सब आजाता है कि जिसके पूजने से हमको खाने पीने की वस्तुयें उत्पन्न होती हैं और उसी वस्तुओं को खाने से बाल अवस्था को मदद मिलती है इसी कारण से बाल अवस्था में अविनाशी भगवान अधिक होने की वजह से सभी बाल ही को पूजते हैं। इसी वस्तु को सब चाहते हैं जिसमें यह अधिक होता है वह वस्तु हर एक चीज को अपनी तरफ खींच लेती है अर्थात् भगवान जिस में हो या जिस जगह हों वहीं सारा संसार खिचता चला आता है जितना ही यह अधिक होता है उतना ही अधिक गुण होता है सुन्दरता शरीर में चमक, माथे पर किरण सूरज की ऐसी चमक रहती है इससे सदा दिल प्रसन्न रहता है क्योंकि भगवान साथ में हैं और जहाँ भगवान होते हैं वहाँ रंज का क्या काम वहाँ तो हर समय उजाला ही उजाला रहता है (मतलब) हर वक्त दिल खुश रहता है हर एक काम में दिल लगता है उसको न सर्दी लगती है न गर्मी। नदी में नहाने धोने और तीर्थ यात्रा में खूब दिल लगता है मन्दिर आदि में जाने के लिये हर वक्त उमंग छाई

रहती है इससे कभी अन्धेरा नहीं मालूम होता है। हर एक वस्तु में खूब प्रेम होता है अर्थात् भगवान हर एक वस्तु से खूब प्रेम करते हैं सबको एक दृष्टि से देखते हैं।

इसी वस्तु को श्रीकृष्ण महाराज ने अपने शरीर में अधिक मानकर अपने को पुजाया और मैं और हम शब्द कहा—अर्जुन को गीता सुनाई थी और इसी को हरएक वस्तु में वर्णन किया और अपना शब्द गीता में कहा है कि जो कुछ हूँ मैं हूँ। इसी कारण अपने को पुजा अर्थ ब्रह्म को पुजाया है। बाल अवस्था ही में श्री कृष्ण जी करीबन सात साल की आयु में बड़े बड़े जोधा धारी और कंस वगैरा को संग्राम में संहार किया था।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी इसी शक्ति से महाराजा रावण को मारा, जनकपुरी में धनुष को तोड़ा था। और चक्रवर्ती राज्य किया। इसमें विशेष गुण होने की वजह से पृथ्वी पर परब्रह्म औतार कहलाये और माने गये हैं, क्योंकि इन्होंने इसका अधिक पालन किया था और ब्रह्म को पूजा था परशुराम हनुमान जी भीष्मपितामह से नारद वगैरह ने इसी को पूजा था इसको पूजने ही के कारण से बड़े नाम पाये और रणधारी कहलाये यहां तक कि परशुराम हनुमान जी वगैरह के मृत्यु या आकार बदलने का हाल ही नहीं आया है।

लक्ष्मण जी इसी शक्ति से मेघनाद को रण में हराया और बहादुर तेजवंशी कहलाये। सब इसी अविनाशी पूजने का कारण है इसी शक्ति का नाम ब्रह्म है इसी शक्ति के ज्यादा होने की वजह से कोई व्याधि शरीर में नहीं सताती। शिवजी और श्रीकृष्ण जी ऐसे ब्रह्मपुजारी को सर्प जैसे जहरीले जानवरों का विष तक शरीर में न व्याप सका। अर्थात जिसके पास

भगवान हों उनको कौन सता सकता है। जब यह शक्ति धीरे धीरे कम होने लगती है अर्थात वृद्ध अवस्था आजाती है तो मतलब भगवान किनारा करने लगते हैं तो शरीर को तकलीफ मालूम होती है तो मनुष्य उस शक्तिको पाने, के लिये कि जिससे वह तकलीफ हुई है मन्दिर में जाके पूजा पाठ करता है कि जो शक्ति हम से निकल गई है वह हम को फिर मिले उस आनन्द को बुढ़ापे में रोते हैं जोकि बाल अवस्था और जवानी में कर चुके हैं यह सब आनन्द बुढ़ापे में याद आता है और किये हुये कर्मों का पश्चाताप होता है। इसी वजह से रञ्ज होता है और आराम याद करने से ही बुढ़ापा आजाता है अर्थात् कर्मों को ही याद करने को बुढ़ापा या वृद्ध अवस्था कहते हैं बुढ़ापे का नाम अविनाशी के शरीर से दूर होने ही से पड़ा है जब यह शक्ति शरीर से दूर हो जाती है तो उस वक्त यह कहते हैं कि भगवान हम से बहुत दूर हैं अर्थ ब्रह्म परे है और ब्रह्मुता आने में बहुत समय लगेगा मृत्यु के बाद बाल अवस्था और जवानी में जितना समय और साल लगता है उतना ही साल प्रब्रह्म को अपने से दूर बतलाते हैं वृद्ध अवस्था ही में गीता वगैरह सब याद आती है कि मन को किस तरह से काबू करना चाहिये और ब्रह्म या मन कहाँ पर रहता है कहाँ सोता है पंडितों से पूछते हैं डाक्टर वैद्य के पास जाते हैं और दवा माँगते हैं डाक्टर वैद्य उसी के बढ़ाने वाली औषधि दे देते हैं और योगी साधू सन्यासी महात्माओं के पास जाकर योग करना पूछते हैं पंडितों से गृह पूछते हैं कि हम पर क्या गृह है और किस गृह को पूजें कि जिससे हमारी तकलीफ दूर हो जावे चतुर वैद्य या पंडित ब्रह्म ही को पूजने के लिये उनको कह देते हैं जब भगवान शरीर में थे तब तो उनको पूजा ही नही जब निकल गये तो पूजते हैं और आज बच्चों को सिखलाते हैं

भगवान को याद करो नाम लो नाम लेने ही से सब कुछ हो जाता है भला बच्चे को वैद्य वगैरह से क्या काम वह तो खाने से वास्ता रखता है और खाने ही से अच्छी तरह से पूजता है और भोग लगाता है जब भगवान शरीर में होते हैं तो कोई वस्तु नहीं याद आती है अर्थात् किसी वस्तु की अभिलाषा नहीं होती है कि हमको यह वस्तु चाहिये जो उनको देदो वही पसन्द हैं तमन्ना नहीं होती है। बुढ़ापे के पुजारियों को यह कहना चाहिये कि हे भगवान हमारी आयु और रूप रङ्ग जो बाल अवस्था और जवानी में था अगले जन्म में फिर मिले या उससे अच्छा रूप और आराम मिले हम आपको याद करते हैं अर्थात् जिन्दा ही पर उसको पूजो और रोकने की कोशिश और यत्न करो उसको बढ़ावो बुढ़ापे में मत खर्च करो उसको जमा करो जिससे कि फिर वैसा ही जिन्दे पर आनन्द आवे। दुनियादारी छोड़ दो उठती हुई वस्तुवें भोजन करो जो कि इस शक्ति को बढ़ाता है यह यन्त्र शिवजी महाराज और अर्थवेद से सीखना चाहिये शिवजी महाराज जब यह देखते हैं कि शरीर में अविनाशी कम होने लगता है तो आप हजारों लाखों साल तप करने लग जाते हैं अर्थात दुनियादारी छोड़ देते हैं और फिर नौ जवान बन जाते हैं चाहे गया हुआ खजाना जमा करने में एक साल लगे या हजारों साल लगे जमा करना चाहिये इसी कारण से शिवजी महाराज सदा या हमेशा जवान बने रहते हैं और अमर कहे गये हैं इसी को अमर कथा भी कही गई है एक मसल है कि पच्चीस साल कमावे और सौ वर्ष में व्यय या खर्च करे अगर किसी कारण से सौ वर्ष न पूरे होते दीखे तो बीच में ही फिर उस खजाने को पूरा करने लग जावें और पूरा कर लेवें अर्थ ब्रह्मचर्य रहे महेश के अर्थ ६. मनी बड़ा+शेष अर्थ बाकी अर्थात् हमेशा बाकी रहने

वाला (अमर) कहीं कहीं अविनाशी भगवान ही को महेश कहा गया है महेश ही को वृद्ध अवस्था विष्णु और तरुण अवस्था विष्णु भगवान कहा गया है दोनों एक हैं कभी वह ज्वान और कभी वह वृद्ध रहते हैं। जवान अवस्था या तरुण अवस्था त्रेता युग है यजुर्वेद है जिसमें कि वीज भगवान या ब्रह्म को पूजन या जमा खर्च करना बतलाया गया है (मतलब) (भक्ती करना) प्रेम करना प्रेम ही को भगवान कहते हैं कि अविनाशी भगवान को किस तरह पूजना चाहिये और उनके पूजने के लिये क्या क्या सामग्री होनी चाहिये। सामग्री अर्थ खाने पीने की वस्तुए कि जिससे कामदेव या वीज भगवान हीरा पत्थर के समान चमकदार और सख्त हो जाता है।

अर्थ—बालब्रह्मचर्य बाल चर्य रखने की रीति या तरकीब बतलाई है शिवजी विष्णु और सूरज भगवान के गिर्द बेशुमार तारे सितारे घूमते हैं अर्थ अपार बत्तियाँ जलती हैं ब्रह्मचर्य होने की वजह से बहुत बड़ी चहरे में चमक है अर्थात् हजारों चिरागों से उनकी पूजा होती है (मतलब) हजारों वस्तुयें खाने से उनकी पूजा होती है हजारों लक्ष्मियाँ उनके गिर्द नाँचतीं है और नृतक करती हैं और उनको पूजती हैं अपार बत्ती ही से शिवजी के पतनी का नाम अपारबर्ती या पार्वती नाम पड़ा है हजारों बत्तियों या हजारों लक्ष्मियों से भी उनकी गर्मी नहीं शान्त होती है। इसीलिये हजारों मंत्र उनके शान्ति करने के लिये वेद में गाया गया है कि (ओं शान्ति शान्ति) हमेशा सूरज भगवान से लक्ष्मियाँ शान्ति ही माँगती हैं हम सब यहाँ पर लक्ष्मी और दिया हैं—और जब यह शरीर में कम हो जाते हैं तो उनको बढ़ाने वाला मंत्र वेद रीति से पढ़ते हैं ठन्डी वस्तुयें भोजन करते हैं—अर्थात जब शान्त नहीं होते हैं तो लक्ष्मियाँ उनकी पूजा करती हैं और जब शान्त

होते हैं तो चिरागों से उनकी पूजा होती है—अर्थ स्त्री पुरुष दोनों ही उनकी पूजा करते है—अर्थ राम सीता दोनों हीं उनकी पूजा करते हैं अर्थ दोनों ही ब्रह्मचर्य रहते हैं दोनों ही ब्रह्म और प्रब्रह्म को पूजते हैं और दोनों ही शान्त भी करते हैं शिवजी भगवान को और भगवान शिवजी को अर्थात् शिवजी भगवान के चरणों को अपने ध्यान से नही निकालते हैं यहाँ शिवजी स्त्री लिंग अर्थ स्त्री के लिंग में हो जाते हैं अर्थ— (कोक शास्त्र) जिस मनुष्य को लक्ष्मी जी को पाना है तो ब्रह्म भगवान को पूजो बालब्रह्मचर्य रहे जिस मनुष्य को बाल को पूजना है तो शिव को पूजे और सूरज भगवान को पूजना है या विष्णू को तो ब्रह्म को पूजे और प्रब्रह्म को पाना है तो लक्ष्मी जी को पूजे—अर्थ (शान्त रहो) (घमन्ड न करो) सब एक ही है।

(गर्मी शीतलता को और शीतलता गर्मी को पूजे—) बाल ब्रह्मचर्य बाल ब्रह्म वानप्रस्त चर्य को पूजने से हज़ारों लक्षमियों की पूजा होती है इसी वजह से विष्णु भगवान के चित्र में लक्ष्मी जी को चरण कमल दबाते हुये दिखाया गया है।

अविनाशी भगवान का रंग

अविनाशी भगवान का रंग नीला श्वेत है। यही हरएक वस्तुओं में सर्वज्ञ है और हर एक जगह और सब वस्तुओं में एकसा ही रंग है। सब चीजों का गूद श्वेत पीला नीला है यही अविनाशी अपार जीवों का रूप बदल बदल कर या लख चौरासी योनी को भोगकर फिर अपनी जगह पर आजाता है। जीव भगवान के गूद का रङ्ग चाहे वह किसी चीज का हो सारे संसार

में एक ही रंग रहता है। अपना रंग नहीं बदलता है—आम के बीज का गूदा, घी, बादाम यहाँ तक कि जहरीले बीजों का रंग अर्थात् सब बीजों का एक सा ही होता है। इसी के शरीर में अधिकता के कारण से वायु; जल वगैरा पेट में बाहर से अन्दर की तरफ खिचता है। जब यह शक्ति शरीर में कम हो जाती है तो हजारों लाखों बीमारियाँ लग जाती हैं। मेदा कमजोर हो जाता है और खूराक को अपनी तरफ नहीं खींच पाता है अर्थात् भगवान ऐसे प्रेमी, चीज को दुनिया चहती है और सब कोई प्रेम करता है। जब यह शरीर में नहीं होते हैं तो कोई वस्तु शरीर की तरफ नहीं खिचती है। मतलब हर एक वस्तु घृणा करने लग जाती है, तब मनुष्य डाक्टर, वैद्य, हकीम के पास जाते हैं। अर्थात् जो इस गुण को जानता है कि यह चीज किस से बढ़ती है और ज्वानी आती है चतुर डाक्टर वैद्य उसी चीज को आपको खाने के लिये बतलाते हैं कि जिससे यह वस्तु पुजती है और ज्वानी आती है। यह चीज गर्भ में ब्रह्म बाहर जवानी में विष्णु, यजुर्वेद जिसमे कि खर्च करने का उपाय बतलाया गया है। बुढ़ापे को शिव (अर्थ वेद) अर्थ—वृद्ध अवस्था और बाल अवस्था को मिलाने वाला अर्थ (मृत्यु और पैदायश) को कहते हैं। जैसे—बीज भगवान पृथ्वी के अन्दर पीला और बाहर हरा अर्थ—हरा और पीला का मिलाने वाला जो रंग है उस रङ्ग को भी अर्थ वेद कहते हैं। इसी को हरि हर भगवान कहते हैं। पुनि हर जन्म भी कहते हैं कि बार बार जन्म लेने वाला। अर्थ (हरे से पीला और पीला से हरा होने वाला) अर्थ (गर्भ में पीला बाहर हरा।

जिस वस्तु से उजाला हो जावे वही शरीर में सूरज भगवान है। आकाश में सूरज भगवान से उजाला होता है। सूरज में चमक और किरण है। इस में भी चमक और किरण है

परन्तु छिपा हुआ दोनों एक हैं। सूरज की तरफ सब वस्तुयें खिंचती हैं। इसकी तरफ भी सब वस्तुयें खिचती हैं सूरज ज्यादा गर्म है। यह भी ज्यादा गर्म है सूरज भी पूजने से शान्त हो जाता है और यह भी शान्त हो जाता है। सूरज भी सब की तरफ से शीतलता खींच कर शान्त हो जाता है और यह भी दूसरों की ठन्डक खींच कर शाँत होता है। दोनों में दो गुण शान्त और गर्म अर्थात—नीला श्वेत+विष्णु सूरज में एक गुण (श्वेत) अर्थ सफेद। मगर पर ब्रह्म में दो गुण नीला और श्वेत। अर्थ—(निर्गुण सगुण) अर्थ (साकार और निराकार रूप) इसीलिये नव सूर्य परिवार (पर ब्रह्म) अर्थात् नीले श्वेत सूरज के गिर्द अपना परिवार लेकर घूमते हैं। यह नीला श्वेत सूरज सब से बड़ा ध्रुव और सूक्ष्म रूप सितारा है अर्थात् परब्रह्म है। नीला श्वेत सूरज पीले ध्रुव की ओर खिचा हुआ है जो कि पीला अन्दर नीला रङ्ग है। यह ध्रुव एक है सब तारे सितारे इसी ध्रुव में नत्थी हैं अर्थात् सब की चोटी ध्रुव की तरफ खिची हुई हैं। सब का अर्श ध्रुव में जुड़ा है इसी से (ध्रुव) सब के मजमुये और सबके जोड़ने से बन जाता है। वही एक परब्रह्म बाल ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ वानचर्य विष्णु भगवान के विश्राम का गृह है और सारे आकाश का सर है। पीला नीला ध्रुव के अर्थ—ध्रुवतारा देखने से पीला मालूम होता है परन्तु अन्दर नीला लिखा गया है।

ध्रुव, सूरज के प्रेम में अपने अन्दर उसको बिठा लेता है और सूरज ध्रुव के प्रेम में ध्रुव को अपने अन्दर ले लेता है। सूरज ध्रुव के गिर्द नाचता है और ध्रुव सूरज के गिर्द नाचता है। सूरज ध्रुव के गिर्द घूमते हुए आकाश में ध्रुव के नीचे और कभी ऊपर हो जाता है जो कि आकाशी जंत्र में मालूम होगा। अगर ऊपर आकाशी जंत्र में न मालूम हो तो

शारीरिक जन्त्र में योग विद्या से मालूम करें और फिर भी समझ में न आवे तो हमारे कागजवाले बने हुए जन्त्र में देखें। यह सब बातें मालूम हो जायेंगी। इन दोनों को मिलानेवाला नीला पीला किरण है नीला किरण है अर्थ (आकाश) अर्थात नीला रंग है यही पृथ्वी पर हरे पीले को मिलाने वाला नीला रङ्ग सूक्ष्म है। जो कि बीज का है। सब के बीज में या बीच में श्याम रंग वाले ही भगवान हैं कि यही सूक्ष्म रूप गर्भ में ब्रह्म, बाहर ब्रह्मा जवानी विष्णु बुढ़ापा शिव हैं (कर्म से अ कर्म अ कर्म से कर्म) विष्णु से शिव और शिव से ब्रह्मा हो जाता है (कर्म से विष्णु) ब्रह्मा से विष्णु कर्म हो जाता है। कर्म के अर्थ किसी चीज को काम करके उसका तत्व या नतीजा निकाल कर उसका अर्थ लगाना जैसे—समाधि अर्थ गर्भ से लिया गया है कि बच्चा न गर्भ में बोलता है न चलता है। एक जगह पर स्थिर हो कर अन्दर ही अन्दर नौ घर या नौ गृहों को पूजता है और ध्यान लगाकर देखता है।

ब्रह्म प्रकाश शब्द के अर्थ—ब्रह्म अर्थ बीज+प्र अर्थ पंख या प्रकाश चमक अच्छाई ब्रह्म के पंख की चमक अर्थ (किरण) अर्थ उड़ने वाला पर-पंख या उसकी महिमा बहुत तेज उड़ने वाला है (राम प्रकाश) के अर्थ इसी तरह राम के चमक का पर अर्थ उनका गुण बहुत जल्द फैलनेवाला—यह सब नाम करम ही से पड़े हैं इन्हीं देवताओं को रज-रजोगुण तमोगुण सतोगुण माना गया है। यही चारों देवता या वेद मिलकर परब्रह्म वाल ब्रह्मचर्य विष्णु वाल ब्रह्मचर्य वान प्रस्थ बान चर्य विष्णु भगवान बन जाते हैं। अपार ब्रह्म को जोड़ने से परब्रह्म बनते हैं। पहले अपार ब्रह्म को पूजो उसके बाद ब्रह्म को पूजो। फिर ब्रह्मा को उसके बाद विष्णु और शिव को पूजो (यहाँ अपार ब्रह्म के अर्थ उन वस्तुओं से लिया गया है कि जिन वस्तुओं

के जोड़ने या खाने पीने से या पुजने से शरीर बनती है उन को अपार ब्रह्म माना है) जो मनुष्य या जीव ब्रह्म और अपार ब्रह्म को पूजते हैं वह मनुष्य या जीव बहुत दिनों तक जीवित रहते हैं बलवान औतार के समान गुणवाला होता है। परब्रह्म का रङ्ग नीला श्वेत और सख्त नर्म हीरा पत्थर के समान चमकने वाला है। इस वजह से उस पर कोई चीज असर नहीं होती है न कोई उसको काट सकता है न कोई जला सड़ा सकता है न किसी वस्तु का दाँत असर करता है न कोई शस्त्र की धार काम आती है और इतना सख्त भी है कि कोई वस्तु जब इसको काटती है तो यह नर्मी की वजह से फैलता जाता है। यहाँ तक कि यह इतना बारीक लम्बा तार मकड़ी के जाले से भी बारीक पतला जो कि दृष्टी से नहीं देख पड़ता है अर्थ—सूक्ष्म रूप निराकार अर्थ वायरलेश का तार या प्रेम का तार बन जाता है और नर्म इतना है कि धार उसको काट नहीं पाती। धार ही में लपटता चला जाता है। जल नर्मी की वजह से काटने वाले ही को अपने में लपेट लेता है और कटता नहीं। वायु या किरण काटने से नहीं कटती हैं, काटने वाले ही को लपटती ही जाती हैं। यही किरण सूक्ष्म रूप हैं और नीली श्वेत भी है। इस रूप में जो मनुष्य या जीव अपने अविनाशी को सख्त बना लेगा। उसके ऊपर कोई चीज या व्याधा या धार नह कारगर होगी (अर्थ सदा ब्रह्म पुजारी रहे) यह वस्तु शरीर में कभी नहीं सोती है अगर यह वस्तु शरीर में सो जावे तो शरीर का रूप बदल जाता है यह वस्तु जितने प्रकारों के आकारों से जुड़ता है उतना ही आकार के इसमें गुण होते हैं इसी वजह से यह बह गुण वाला कहा जाता है और हर रूपों में मोजूद कहा जाता है। जो मनुष्य या जो जीव जिस रूप में है उसको उसी रूप में उससे दूना होकर

दर्शन देता है प्रब्रह्म या सूरज में सब गुण होते हैं इसी कारण से सब इसको पूजते हैं ।

अविनाशी जितना ही सख्त और सूक्ष्म होता है उतना ही अच्छा होता है। वृक्षों में देखो पीपल बड़ चन्दन आदि का बीज बारीक सख्त छोटा होता है कि उनको चाहें जहाँ डाल दो वहीं वह उग जावेंगे यहाँ तक कि यह पेट में जाकर और फिर बाहर निकल कर उग जाते हैं इसी तरह से और बहुत से बीज हैं इसी से मनुष्य जाति इनको पूजती हैं और उनसे लाभ उठाती हैं—(इन से शिक्षा भी लेनी चाहिये ।

ब्रह्म का नौ गृह में रहना और उनको अन्दर ही अन्दर पूजना

ब्रह्म या बच्चा गर्भ या समाधि में पहले नौ माह अन्दर रहता है उसी नौ माह को अन्दर गर्भ में शरीर के अन्दर वाले नौ गृह या नौ घर को कहते हैं। अर्थ (नौ गांठ) बच्चा नौ गाँठ को काटता हैं मतलब नौ गृहों या नौ घरों का दौरा करता है सब को देखता है यही नौ गृह अन्दर अच्छे बुरे ज्योतिष विद्या में बनाये गये है अच्छी बुरी वस्तु या चीज के खाने से और उसके सत्त से बच्चा अन्दर बनता है अर्थात् यही नौ गृह को पूज कर या अच्छे बुरे जहरों को खा पी करके हजम कर लेता है और सबको मिलाकर बाहर एक निकलता है अथात् (ब्रह्मा अच्छे बुरे को एक बना लेता है) गर्भ अवस्था में जो जो वस्तुयें वेद शास्त्र की रीति से नौ गृहों को बाहर पूजा जाता है उसी को अवश्य खाना चाहिये इन वस्तुओं के खाने से ही अन्दर नौ गृह पुज जाते है क्योंकि जो वस्तुयें जो देवता या

जो नक्षत्र या सितारा पसन्द -- है या जिस तारे में जो गुण है वह खाता है या भक्षण करता है उसी का सत्त मिल कर बच्चा बनता है अगर वह चीजें उसको अन्दर न मिलें तो वही रोग या बीमारी या गृह शरीर को सताते हैं। बाहर वही वस्तु शरीर में कमी होने की वजह से डाक्टर वैद हकीम के यहाँ जाना पड़ता है और डाक्टर वैद वही वस्तु आपके खाने के लिये बतलाते हैं।

मनुष्य या जो जीव जिस वस्तु को बुरा ख्याल करता है या वह उसकी निन्दा करता है अर्थात् उससे अलग रहना चाहता है वह अलग वाली वस्तु जिसको कि वह नहीं पसन्द करता है वह जीव उसी में मृत्यु के बाद जन्म लेता है। मरते समय जीव की अभिलाषा जिसमें होती है वह उसी जीव को प्राप्त होता है। इसीलिये किसी को बुरा नहीं कहना चाहिये।

शुक्राचार्य महाराज ने अपनी सुपुत्री देवानी से कहा कि ये बेटी जो कोई मनुष्य या जीव दूसरों के द्वारा की हुई नित्य निन्दा को सहन या ग्रहण करता है या सुनकर उस बात को हजम कर लेता है वह जीव संसार में सबसे बड़ा और तपेश्वरी योगी जीव है और यही सच्चा नौ गृह को पूजने वाला होता है। गुरु वशिष्ट जी ने भी श्री रामचन्द्र जी को कहा था कि अगर दुनियाँ में कोई वस्तु या मत या मजहब या जातियाँ बुरी हैं तो यह तारे सितारे भी बुरे हैं इस हिसाब से ज्योतिष गलत हो जाती है नौ गृहों को क्यों पूजें। इसमें अच्छे बुरे सब आ जाते हैं इसी के आधार पर गुरु वशिष्ट जी ने योग सुनाया था—कि संसार में कोई वस्तु बुरी नहीं है बगैर अच्छे बुरे मिले हुये काम नहीं चलता है।

इसी तरह से पशुओं और जानवरों में जो जितने महीने नौ माह से बच्चा कम या ज्यादा माह में देता है उतना ही

गृहों का गुण उनमें कम या ज्यादा होता है इसीलिए शुओं में कम ज्ञान पाया जाता है इसी से उनमें कम गृहों के होने की वजह से मनुष्य जाति उन से श्रेष्ठ है। जो जीव दस-ग्यारह बारह माह में बच्चा देते हैं उनमें दो तीन गृह का साया ज्यादा होता है। इसी कारण उनको जो नक्षत्र ज्यादा अर्थात् दोबारा आये हुये हैं वह ज्यादा तकलीफ पहुंचाने वाले अधिक गर्म होंगे—जैसे भैंस घोड़ा और कम वाले जैसे कबूतर, बकरी, कुत्ता यह नर्म हैं अर्थात् शान्ति हैं। जंत्र से मालूम होता है कि (मंगल और चाँद) पृथ्वी को—(पृथ्वी बृहस्पति और सूरज) ध्रुव को (राहू केतू) सूरज को (राहू-केतू-सूरज) मिल कर ध्रुव को। (चाँद पृथ्वी) बृहस्पति को। बृहस्पती में अपने साथियों को लेकर (राहू केतू) को यानी (बुद्ध शुक्र) को। (बुद्ध शुक्र) सूरज को पूजते हैं। सूरज सब साथियों को लेकर अपार ब्रह्म के गिर्द घूमता है और उनको पूजता है। (पारब्रह्म इन सबकी कृणों से बनते हैं या जोड़ने से बनते हैं इसीलिये अपारब्रह्म सबकी परिक्रमा करता है और सबको पूजता है। प्रब्रह्म अपार ब्रह्म को और अपारब्रह्म प्रब्रह्म को पूजते हैं अर्थात् हरएक दूसरे की पूजा करता है।

नौ गृह मिलकर अपारब्रह्म बन जाते है

सूरज की गर्मी हम सबों को दर्कार होती है और सूरज को हमारी तरफ से शीतलता की जरूरतर पड़ती है। चाँद की शीतलता हमारी तरफ और पृथ्वी की गर्मी चाँद की तरफ खिंचती है प्रब्रह्म हम लोगों के जोड़ने से बनते हैं और हम सब अपारब्रह्म से पैदा होते हैं।

परस्पर पर सब बराबर हैं न कोई अच्छा न कोई बुरा सब अच्छे हैं दुनियाँ के ख्याल से या अपने मतलब के लिए अच्छे बुरे हैं। परब्रह्म के ख्याल से कोई नहीं अच्छा बुरा है। जंत्र के जरिये से मालूम होगा कि बृहस्पती और मंगल कभी विष्णु के गिर्द और कभी ध्रुव के गिर्द घूमते हैं कभी ब्रह्मा के और कभी वानप्रस्थ बानचर्य ब्रह्म को पूजते हैं। पृथ्वी ध्रुव के गिर्द घूमती है विष्णु के गिर्द नहीं। जब शुक्र परब्रह्म के गिर्द घूमता है अर्थ अपार ब्रह्म को पूजता है तो पृथ्वी से शुक्र मंगल बृहस्पती डूब जाते हैं हम लोगों को नहीं दीख पड़ता है। जब विष्णु सूरज के गिर्द घूमते हैं तो देख पड़ते हैं। (अर्थ सभी को पूजना चाहिये) जिस जीव को अपने से हरएक वस्तु बड़ी मालूम हो वह जीव संसार में सबसे बड़ा है। अर्थ घमण्ड नहीं करना चाहिये। मिसाल जसे [जीवों में हाथी को अपने से सब बड़ा दीखता है]

सूचना

जो मनुष्य आकाशी जंत्र को साकार रूप में देखकर यह बातें न समझ सकें वह हमारे कागज पर बने हुये आकाशी जंत्र को देख कर समझें और इसपर न देख सकें तो योगबल से अपने शरीर के अन्दरी जंत्र से मालूम करें। ध्यान से देखने से आप सब सज्जनों को यह सब कथा ब्रह्मप्रकाश पुस्तक से मालुम हो जावेगी। अगर इससे भी न मालुम हो तो ब्रह्मप्रकाश पुस्तक पढ़ें।

औषधियों की उत्पत्ति और उन पर नक्षत्रों या ग्रहों का साया

पृथ्वी पर औषधियाँ भी इन्हीं नौ ग्रहों या सब नक्षत्रों से

या सब ग्रहों के साया या असर से और प्रकाश या उनके कृण-पृथ्वी पर पड़ने से पैदा होती हैं। पृथ्वी पर चौबीस घन्टे में जो जो बूटियाँ या जो जो वस्तुयें जिस समय पैदा होती हैं उन पर ऊपर से जो जो गृह जिस समय चौबीस घन्टे के अन्दर में निकलते हैं वह पृथ्वी पर कृण अर्थात् अपना साया फेंकते रहते हैं इसी साये के असर से यह बूटियाँ समय २ के अनुसार उत्पन्न होती रहती हैं वही औषधियाँ या खुराक हम खाते हैं खाने से ही उन गृहों का असर और साया शरीर में आजाता है या व्याप जाता है अर्थ सब देवता भी शरीर में खाने से ऊपर वाले आगये और इधर पहिले वाले अर्थात गर्भ में के भी सब देवता अर्थ माता पिता के पूजने वाले भी देवता शरीर में मोजूद हैं। ऊपरवाले देवता अन्दर वालोंको और अन्दरवाले ऊपर वालों को पहिचान लेते हैं और आपस में मिल जाते हैं। अर्थ अन्दर गर्भ वाले और बाहर वही नौ गृह दोनों एक हो जाते हैं। (अन्दर भी वही बाहर भी वही) इन्हीं देवताओं के जोड़ से शरीर बनी है जब मनुष्य या जो जीव जो जो बूटियाँ कम खाता है वही बूटियाँ या वही देवता न पुजने से हमारे शरीर को कष्ट पहुचाते हैं तब हम डाक्टर वैद्य के यहाँ जाते हैं तो होशियार या चतुर वैद्य वही बूटियाँ जो कि हमने नहीं खायीं हैं या जिस बूटी से हमको तकलीफ हुई है वही बूटी या उसका अर्क हमको खाने पीने को दे देते हैं। पंडित लोग वही गृह बतलावेंगे जिसको कि पूजने से और खाने से हमारा दुःख दूर होगा। इसी तरह माता गर्भ में जो जो वस्तु कम खाती है वही चीज शरीर के बनने में कमी पड़ जाती है और बाहर आकर उनको खाना पड़ता है और जो वस्तु अधिक खाई जाती है वही वस्तु या तारों का असर या साया बाहर अर्थात् पैदायश के बाद शरीर में अधिक हो जाता है और यही दुःख

देने वाले गृह पड़ते हैं और वही देवता को पूजने से या कम खाने या जो कि वस्तु खाने से वह अधिक वाली वस्तु के असर को शान्ति करे वही देवता के पुजने से हमारा उद्धार होता है और वही वस्तु और गृह को पूजना पड़ता है। मिसाल शरीर पाँच तत्वों से बनती है या पाँच देवताओं से बना है जब इन्हीं देवताओं का अन्स किसी एक में से कम पड़ जाता है तो शरीर को कष्ट होता है तब हम दुख दूर करने के लिए उसी कमवाले देवता को पूजते हैं या यह देवता जिन जिन वस्तुओं को भक्षण करता है उसे हम खाते हैं जैसे शरीर में अग्न कम हुई तो सूरज या धूप या अग्नी बढ़ाने वाले देवताओं को पूजते हैं या उन औषधियों को हम खाते हैं जो अग्नी शरीर में बढ़ाती हैं। हवा कम हुई तो पंखा झलते हैं जल की इच्छा हुई तो जल पीते हैं और असनान करते हैं यही पाँचों देवत अच्छी बुरी वस्तु दुनियाँ के ख्याल से जो हैं सब खाने वाली हैं कोई जिन्दा ही कोई उबाल कर कोई कच्चा ही कोई छिपाकर अपने अपने मार्ग की रीती के अनुसार खा जाते हैं इसीलिए मनुष्य को चाहिये कि सबको ही पूजे किसी वस्तु को बुरा न समझे।

संसार में जो जीव या मनुष्य संसार का भरमरण करता है तो सफर करते हुये वह दुनियाँ की सब वस्तुओं को जो कि अपने देश में नहीं पैदा होती हैं उनको देखता है और भक्षण करता है और सब दूख तकलीफों को सहन करता है या ग्रहण करता है इसी वजह से वह बहुगुण वाला हो जाता है इसी के आधार पर बड़े बड़े राजे महाराजे विद्वान पुरुष अपने सुपुत्रों को सब संसार का भरमण कराते हैं और हरएक विद्या सिखलाते हैं तरह तरह की वस्तुयें नित्य उनको खाने पीने को देते हैं और रोजाना उनको अच्छे से अच्छा वस्त्र आभूषण पहनने

को देते हैं कि वह सब गुणों को जानने वाला और सबको पहिचानने वाला, दुःख तकलीफ को सहन करने वाला बन जावे अर्थ पूरा योगी बन जावे। यात्रा ही की वजह से, उसकी सब अभिलायें पूरी हो जाती हैं और किसी वस्तु की इच्छा नहीं होती है। मन एक जगह हो स्थिर जाता है और आराम पाता है। आकाश में तारे सितारे भी घूमते रहते हैं और सारे संसार का मजा या सत्त हम सबों का लेते रहते हैं प्राकृती या स्वभाव इसी खाने वगैरह के कारण हरएक जीव का पृथक पृथक हो जाता है।

गर्भ में ब्रह्म को सब गृहों का रंग पकड़ना

ब्रह्म गर्भ में जब प्रवेश होते हैं तो वह अन्दर जब नौ गृहों का दौरा करते हैं यानी दर्जा व दर्जा उनको पूजना शुरू करता हैं। जिस जिस गृहों का रङ्ग पकड़ते हैं वही रंग या स्वभाव अन्दर बच्चे में पड़ते जाते हैं इसी तरह से सब गृहों को पूज कर जब वह नौ माह बाद बाहर आता है तो एक रंग होता है शरीर में यही नौ गृह या नौ द्वारा ना इद्रियाँ हैं गर्भ में पहिले माह नीला श्वेत दूसरे माह हरा गुलावी तीसरे माह गुलावी श्वेत चौथे माह गोल लोथड़ा मिट्टी का रङ्ग पाँचवें माह हलका लाल छटा माह लाल सातवाँ माह काला बहुत कम अर्थ सर का बाल आठवाँ और नवाँ माह ब्रह्म-विष्णू का प्रवेश होना और सब रङ्गों का मिलाना और एक बनाना। अर्थ हरा पीला लाल श्वेत का मिलान होता है। जब पारब्रह्म यह सब रङ्ग या गुणों को मिलाकर एक तत्व कर के एक बना लेता है तो बाहर निकलता है अर्थात् जैसा ऊपर नौ गृहों का रंग है वैसा ही वह

अन्दर समाधि में बैठे-बैठे ही सब को ध्यान से पूजकर उनको जीत लेता है।

अर्थ मनुष्य को चाहिये कि सबको खा पीकर उसको एक बना ले जैसे गंगा-समुद्र में हजारों लाखों दरिया तरह तरह के रंग वाले जल मिलते ही गंगा ऐसा रङ्ग पकड़ लेते हैं। अर्थ अपना जसा रंग बना लेती है (संसार में वही बड़ा है जो कि अपने जैसा सबको बना ले) अविनाशी श्वेत होने की वजह से इसकी तस्वीर नहीं आती है जब इसमें कोई रंग मिल जाता है तो तस्वीर आजाती है। सूरज की फोटो नहीं आती है जब उस पर गर्द गुबार होगा तो फोटो आजावेगी जब वह सब वस्तुओं को मिला कर एक रंग कर लेता है तो तस्वीर नहीं आवेगी क्योंकि वह साफ हो जाता है इसी कारण अवि-नाशी सर्व व्यापक सूक्ष्म रूप निराकार कहा गया है जिसकी फोटो लेने से तस्वीर न बने। यहाँ अविनाशी वायु या जल को माना है।

बीज शरीर में कमर से प्रवेश करता है शरीर का बीच कमर है उधर आकाश में सूरज बीच में है इसी के गिर्द नौ गृह घूमते हैं सबों ने बीज या बीच ही को या सूरज भगवान ही को पूजा है। सूरज और ध्रुव के बीच में राहू केतु आजाने से सूरज ग्रहण सूरज चाँद के बीच में पृथ्वी के आजाने से चाँद ग्रहण और सूरज पृथ्वी के बीच चाँद आजाने से पृथ्वी ग्रहण, सुरज जिन जिन चीजों को ग्रहण करता है वैसा ही रंग का फोटो सुरज का आता है या आकाश में जब गर्द गुबार होगा या सूरज के गिर्द होगा तो फोटो आवेगी अर्थ गर्द या मैल का आवेगा सूरज का नहीं। किरणें जब मैल पकड़ती हैं तो जीव बनता है इसके बाद जीव जिस जिस वस्तु को ग्रहण करता है तो वह वैसा ही रंग का जीव बन जाता है। मनुष्य

जीवों के मजमुये से बनता है इसी वजह से मनुष्य या जो जीव जिस वस्तु को ग्रहण करता है वैसा ही उसका रंग बन जाता है। अर्थ (ताकतवर अपने जैसा रंग बना लेगा और कमजोर उसका रङ्ग पकड़ लेगा) मनुष्य जिस वस्तु को जीतना हो तो पहले वह उसमें मिल जावे और उसके गुण को सीख लेवे तो वह उस वस्तु को जीत सकता है। क्योंकि एक तो अपना गुण और दूसरे का गुण मिल कर जीतने वाले में दो गुण हो जाते हैं। इस वजह से एक गुण वाला हार जाता है।

(अर्थ सबको ग्रहण करना चाहिये)

पार ब्रह्म और अपार ब्रह्म बनने का कारण

राहू और केतू दोनों एक हैं धर्मराज या केतू शान्त गुण सूक्ष्म रूप निराकार हैं यमराज या राहू गर्म गुण शाकार रूप विष्णु हैं यह दोनों ध्रुवों के नाम हैं (उत्तरी और दक्षिणी) शरीर) में सर को उत्तर और पैर को दक्षिण कहते हैं। कमर शरीर में दोनों ध्रुवों के बीच में है सर से जब अपार ब्रह्म चलता है तो दक्षिण और जब दक्षिण से चलता है तो ऊत्तर यानी सर में पहुच जाता है पृथ्वी उसी ध्रुवों के बीच में घूमती है इसी कारण से पृथ्वी अन्डे के शकल के रास्ते में नीले समुद्र के बीच में सफर करती है अर्थ बीच ही में घूम घाम कर रह जाती है यह शारीरिक जंत्र से है राहू यमराज और केतू हैं दोनों ध्रुव हैं सब नाम एक हुये केतू राहू को पूजता है राहू केतू को पूजता है यह सब बातें जंत्र के देखने से मालम होंगीं।

ध्रुव के रहने वाले पृथ्वी को ध्रुव मानते हैं क्योंकि उसका ध्रुव सदा पृथ्वी के ही सीध में रहता है जहाँ जहाँ पृथ्वी

घूमती है वहीं ध्रुव भी साथ चला जाता है और पृथ्वी के रहने वाले उसको ध्रुव मानते हैं हम सब ध्रुव को श्री लक्ष्मी और पृथ्वी को दासी लक्ष्मी कहते हैं ध्रुव के रहने वाले पृथ्वी को श्री लक्ष्मी और अपने को दासी कहते हैं अर्थ जब श्री लक्ष्मी नहीं होती है तो उस पद पर दासी ही लक्ष्मी बैठती है और काम करती है।

पृथ्वी का धुरा निराकार है आंख से नहीं दीखता है जो कि दोनों पहियों में नथ्थी है अर्थ (उत्तरी और दक्षिणी) पृथ्वी के अन्दर वाला धुरा शाकार है बाहर वाला निराकार है। शाकार निराकार धुरे में जुड़ा हुआ है और पहिया शाकार है इन्हीं दोनों पहियों को पतवार भी कहते हैं जिससे नाव या किश्ती मल्लाह या खुदा खेता है यही दोनों पर और बाजू हैं इसीसे इनका नाम दुनिया पड़ा है। अर्थ दो हाथवाली अर्थ (नर्म गर्म) (स्त्री पुरुष) (गर्म ठन्डा करन्ट) पृथ्वी के आधे हिस्से या दक्षिणी वाले हिस्से अर्थ दक्षिणी ध्रुव या साउथ राइट विलाक के रहने वालों को उत्तरी ध्रुव नहीं देख पड़ता है क्योंकि पृथ्वी के आधे हिस्से से छिप जाता है उनको दक्षिण का ध्रुव-तारा दिखाता है और उत्तरी ध्रुव अर्थ नार्थ पोल लेफ्टविलाक के रहने वालों को दक्षिणी ध्रुव नहीं दीखता है दक्षिण वाले अपने को ऊँचा ख्याल करते हैं और उत्तर अपने को ऊँचा मानते हैं पृथ्वी के मध्य रेखा पर जब हम खड़े होते हैं और सूरज की तरफ मुँह करते हैं तो दक्षिण दाहिना या राइट और जब पश्चिम में सूरज चला जाता है तो उधर मुंह करते हैं तो उत्तरी ध्रुव राइट और दक्षिण बांयां या लेफ्ट बन जाता है।

सूरज जब उत्तरायण होता है तो दक्षिण राइट या दाहिना और जब दक्षिणाइन होता है तो बायां या लेफ्ट बन जाता है सूरज गर्मियों में पृथ्वी के पूर्वी और सर्दियों या जाड़ों में पृथ्वी

के पश्चिमी भाग में निकलता है यहां भी सूर्य के घूम से पूर्व से पश्चिम और पश्चिम से पूर्व बन जाता है। इसी कारण से श्री लक्ष्मी से दासी लक्ष्मी और दासी लक्ष्मी से श्री लक्ष्मी विष्णू से शिव और शिव से विष्णू पूर्व जन्म से पुनिहर जन्म और पुनि हर जन्म से पूर्व जन्म अर्थ पीले से हरा और हरे से पीला हो जाता है अर्थ पिता से पुत्र और पुत्र से पिता बन जाता है ऊँच से नीच और नीच से ऊंच बन जाता है। नार्थ पोल निराकार हैं और सावथ पोल शाकार हैं नार्थ पोल शारीरिक जन्त्र में निराकार है सावथ पोल शाकार है अर्थ उत्तरी ध्रुव से पृथ्वी दक्षिण है तो पृथ्वी के अन्दर वाला धुरा शाकार और उत्तर वाला धुरा जो कि पृथ्वी और ध्रुवतारे को मिलाता है निराकार है ऐसा ही दक्षिणी ध्रुव का है शाकार से निराकार और निराकार से शाकार हो जाता है। अपारब्रह्म निराकार रूप में किरणको कहते हैं। पृथक पृथक या अलग अलग शाकार रूप वस्तुओं को भी कहा है क्योंकि यह सब वस्तुयें कणोंही से पैदा होती हैं इसी कारण से इसको भी अपार ब्रह्म कहा गया है। ब्रह्म इन्हीं वस्तुओं के सत्त या जोड़ने ही से बनते हैं अपार ब्रह्म का रंग बहुरंग है अर्थ इसके रंग की कोई गिनती नहीं है अपार रङ्ग है ब्रह्म का रङ्ग नौरङ्ग या एक रङ्ग है पारब्रह्म के जोड़ से ब्रह्म बनते हैं ब्रह्म में शरीर है जो कि देख पड़ता है परब्रह्म में दो रूप निराकार और शाकार है (अर्थ नीला श्वेत है।)

अपने में वह शक्ति ब्रह्म दूसरों में वह शक्ति पारब्रह्म सब में वह शक्ति (अपारब्रह्म) सर्थ सर्वव्यापक अविनाशी भगवान (बीज भगवान)नाम है।

ब्रह्म या बच्चा सब वस्तुओं के जोड़ने से एक बनता है और जब गर्भ से बाहर आता है तो उसको ब्रह्मा कहते हैं आकाशी

जन्त्र में नौ गृह बुद्ध-शुक्र पृथ्वी-मंगल-बृहस्पति शनीचर और सूरज राहू केतू हैं इन्हीं के जोड़ने से पारब्रह्म बनते हैं और ध्रुव के गिर्द घूमते हैं इसी कारण से परब्रह्म के रथ में नौ घोड़े जोड़े जाते हैं। विष्णु के सात शिव के आठ ब्रह्मा के छः (६) घोड़े रथमें जोड़े जाते हैं। यही सब नौगृह मिल कर गोल बिन्दी (०) की डिगरी है। इसी कारण से माथे पर गोल टीका लगाते हैं यही नौ गृह शरीर पर असर करते हैं जोतिष विद्या में इसी को पूज्य माना है जंत्र में पारब्रह्म अपारब्रह्म के और अपार ब्रह्म ब्रह्म के गिर्द घूमते हैं यही डिगरी ऊंची नीची हासिल करने का ह और नाम पड़ने का कारण है।

ब्रह्म और परब्रह्म का भेद

ब्रह्म तो वह है जिसके हाथ पैर सर कुछ भी नहीं है न उनमें चमक और कृण है अर्थ पँगुल है परन्तु देखने से चमक और प्रकाशिक है सर्वज्ञ है बगैर हाथ पैर के चलने वाला है सब जीवों का दौरा करने वाला है सर्व व्यापक या हरजा मौजूद है लख चौरासी जीवों का जन्म लेने वाला भी है सब जीवों का रूप भी बदलने वाला है सब जीवों में बराबर हर समय भरमरण करता भी है गोल बिन्दू रूप में है हर जगह एकसा ही रङ्ग है कहीं उसका रंग नहीं बदलता है। परब्रह्म जिसके पँख हैं-पर हैं परन्तु हाथ पैर सर इसके भी नहीं हैं उड़ने वाला है उसका पंख या पर इतना तेज या वेग उड़ने वाला है कि एक पल में लाखों करोड़ों मील उड़ जाता है यह सारे आकाश और सारे संसार का दौरा करता रहता है और नीले समुद्र में विराजवान है और एक (१) है सर्वव्यापक नही है—अर्थ बीज भगवान ब्रह्म है। सूरज या जन परब्रह्म है। सूरज में कृण है

इसी कारण इसको परब्रह्म कहा गया है और सबसे बड़ा पूज्य देवता है इससे बड़ा कोई नहीं है।

कणों ही को प्र या पर या पंख माना है यही कण पल में करोड़ों मील दौड़ जाती है यही कण प्रकाश और सर्वज्ञ है हरजा मौजूद है निराकार रूप परब्रह्म है अर्थात् जिसके सर पैर हाथ का पता ही नहीं है कि कितना बड़ा है और कितना है कि जिससे हर समय चलता रहता है और इन्हीं पैरों से बहुत तेज दौड़ने वाला है बड़ा इतना कि दीखता नहीं और छोटा इतना कि दीखता नहीं न खुर्दबीन से दीखे न दूरबीन से दीखे परन्तु हर वक्त दीखता रहता है निराकार रूप छोटा नहीं दीखता है शाकार रूप दीखता है। सूरज भगवान दीखता भी है और नहीं भी दीखता है अर्थ दोनों ही के हजारों लाखों सर पैर हाथ हैं।

श्रीकृष्ण भगवान गीता-अमर कथा में से

श्री कृष्ण जी ने हरएक वस्तु को गीता में अच्छा बताया है और हर एक ख्याल वाले मनुष्य या जीव के आधार पर गीता का अर्थ बनाया है। ब्रह्म अर्थ गर्भ भगवान को गीता भगवान माना है इसी अविनाशी या बीज भगवान को या ब्रह्म को गोल बिन्दी की शक्ल में शरीर में स्थिर मान करके कहा है कि मेरी उत्पत्ति को अर्थात् गर्भ भगवान ही को मेरी पैदाइश माना है या उत्पत्ति ही को तमाम गुणों से भरा हुआ लिया और कहा है कि प्रगट होने को न मुझ को देवता लोग जानते हैं और न ऋषी मुनी जानते हैं अर्थ सूक्ष्म रूप होने के कारण कोई नहीं देख पाता है। मैं सब देवताओं और ऋषी

मुली यहां तक कि जो सब ब्रह्मांड आकाश पाताल में स्थित है। उनके अर्थात् (सब के सत्त के) मजमुये से बना हूँ इस वजह से मैं सब गुणों का खजाना हूँ। कृष्ण भगवान में उस वक्त संसार में सब से ज्यादा गुण था इस वजह से वह औतार कहलाये क्योंकि पृथ्वी पर जिसमें ज्यादा गुण होता हैं वही औतार कहलाने का हकदार हैं। आज कल संसार में वेद को पढ़ने वाला, वैद्य डाक्टर ही को वेद पाठी कहना चाहिये क्योंकि इन में शारीरिक गुण मालूम करने का ज्यादा अभ्यास है और ज्यादा गुण वाले माने जाते हैं। उनकी दूकानों पर बड़े बड़े अमीर उमरा बैठे रहते हैं और हर समय भीड़ लगी रहती है और जैसा वह कहते हैं वैसा ही वह मानने को तैयार हो जाते हैं। बड़े बड़े पंडित ज्योतिपियों को कम पूजते है क्योंकि वह वेद पढ़ते तो जरूर हैं परन्तु वह वैसा करके नहीं देखते हैं और उसका कर्तव्यी अर्थ नहीं निकलते हैं इसी वजह से वह पहले से कम पूजे जाते है और डाक्टर वैद्य को ज्यादा पूजते हैं इसीलिये मनुष्य को चाहिये कि हर एक पुस्तकों का कर्तव्यी अर्थ लगायें जिससे कि सब का उद्धार होवे। भगवान कहा है कि जो मनुष्य याजो जीव जिस रीतिसं मेरेसे मिलता है हम उससे दूना होकर मिलते है मेरा नाम उतना ही है कि जितना सब जीवों और ब्रह्मांडों का नाम है। इन्हीं सब जीवों के जोड़ने से मैं बनता हूँ। बच्चा अच्छे बुरे सबको हजम कर जाता है और परब्रह्म भी सबके जोड़ने से बनता है इसी के आधार पर अर्जुन को श्रीकृष्ण भगवान ने सन्यास और त्याग को एकसा मानकर कहा है कि हे अर्जुन तू अपने मतलब को सिद्ध कर दूसरों को बुरा मत ख्याल कर कि कौन अच्छा है या बुरा अच्छे बुरे सबको मार और एक बना। जबतक तू उनको मारेगा नहीं तबतक तू कैसे एक बन सकता है एक वही जो

सब को जीत ले और आप ही आप रह जावे। अर्थ जब सब चीजें मिल जाती हैं तो एक बन जाता है इसी कारण से गीता का अर्थ जिस जिव का जैसा ख्याल हो वैसे ही अर्थ बन जाता है इसी को न्या भाव और नवीन कहा जाता है मतलब हमेशा ही बच्चा बना रहे अर्थ बच्चे ऐसा स्वभाव रहे घटे बढ़े नहीं नहीं एकसा ही हो सदा बालअवस्था ही बना रक्खे (बालब्रह्मचर्य रहे) यही एक नवीन वस्तू है। जैसे (सूरज)

बालक अपना ही मतलब सिद्ध करता है दूसरों के मतलब को नहीं ख्याल करता है श्री कृष्ण भगवान ने गीता में अर्जुन को अपना मतलब ही सिद्ध करने के लिए बालक जैसा स्वभाव के ही लिए उसको उस वक्त उतसाया था कि अपना मतलब सिद्ध कर दूसरों को न ख्याल कर कृष्ण भगवान ने पाप शब्द इस कारण से उस वक्त उच्चारण किया था कि जब तू पापों में शामिल नहीं होगा अर्थात् सब को नहीं मारेगा। जब तक तू अपना मतलब नहीं सिद्ध कर सकता है वहां पाप शब्द अच्छाही के हैं। बच्चा पाप पुन्य को नहीं जानता है पिछली बात को याद करने ही को पाप कहते हैं अर्जुन ने आगे पीछे की बात को याद किया था इसी याद को पाप कहा है बगैर सब करमों या कर्मों को भोगे हुये अच्छे बुरे की पहिचान नहीं होती है। जब जीव उसको भोगेगा तभी उसको उस चीज की पहिचान हो जावेगी जभी मनुष्य या जीव उसको त्याग सकता है—पाप शब्द का अर्थ एक को अपना कार्य करते हुये दूसरे को उसमें विघन डालना पाप कहा है या एक दूसरे पर हमला करना पाप है इसी कारण से जज हमला करने वाले को ही सजा देता है।

जीव को सब जीवों का भरमण करना बहुत कठिन है इसलिये पारब्रह्म की पहिचान बहुत मुश्किल है और बहुत

कठिनता से मिलते हैं छोटे छोटे देवता जल्दी मिलते हैं इसी कारण से परब्रह्म को लोग कम पूजते हैं क्योंकि सब चीजों का भोगमा हजारों लाखों साल होना चाहिये जब वह शायद उस डिगरी तक पहुच सकता है।

सन्यास और त्याग

सन्यास और त्याग का अर्थ सब चीजों को भोगते हुये मरने जीने का गम या चिन्ता न हो बच्चा मरने जीने की चिन्ता नहीं करता है कि माँ मर गई कि पिता वह तो हमेशा ही प्रशन्न रहता है बालक ऐसा ही कर्मयोग और त्याग है और त्याग है और यही कर्म सन्यास भी है। जो अपनी जान दूसरों की भलाई के लिये देने में डरे नहीं यही योग्य हैं मिसाल जैसे फौज का एक सिपाही वह सब कुछ बाल बच्चा होते हुये भी रण में किसी को नहीं याद करता है सबको भूल जाता है और रण में जान दे देता है वही योगी है सब लोगों को मारना अर्थात् सब करमों को करके सबका गुण सीखना मतलब को जीतना जब (जीव) सब कर्मों को जीत लेता है तभी वह बहुगुण वाला होता है। बगैर सब करमों को किये हुये या भोगे हुए वह जीव सबको त्याग नहीं सकता हैं जब मनुष्य उसका तत्व या सत्त पा लेता है अर्थात् सबका रस पी लेता है तभी वह अघाता है और अपने मन को इकट्ठा या काबू में कर सकता है तब उसको उस वस्तु की अभिलाषा नहीं रहती है। मनुष्य जितने ही प्रकार के वस्तुओं को ग्रहण करता है और आगे नई नई वस्तुओं को ग्रहण करता ही चला जाता है, आखिर में सबको ग्रहण करके या पुज कर अपनी जगह पर जब आजाता है तभी वह योगी होता है बीज भगवान सभी

में होता हुआ अर्थ एक दूसरे से जमा खारिज होता हुआ फिर अपने जगह पर आजाता है इसी कारण से ब्रह्म को योगी भगवान और वहुगुण वाला. कहते हैं। अविवाशी भगवान जिस शकल या रूप में या ब्रह्मांड में प्रवेश होते हैं तो वह वैसा ही रूप धारण करते हैं अर्थात् उसको धारण करके तजुर्बा करता है कि यह कैसा है तब वह उसके गुण को लेकर उसको जीत लेता है जिसमें यह ज्यादा होता है उसको वेद पुराण सुनने की जरूरत नहीं पड़ती है क्योंकि उसमें साक्षात वेद मौजूद हैं वह हर एक वस्तु को रुची से पसन्द करता है और उसको भोजन करता है। भगवान के होते हुये उसको कौन सता सकता है। जब शरीर में भगवान या ब्रह्म है तो क्यों किसी वस्तु की इच्छा हो भगवान सब इच्छाओं को पूरी कर देता है भगवान शरीर में होते हुए किसी से बुरा नहीं कराता सब अच्छा ही कराता है अर्थात् वह किसी वस्तु को बुरा नहीं ख्याल करता है सारी गीता में भगवान श्रीकृष्ण जी ने इसी की प्रशंसा की है। इसी जन्त्र को देखकर गौतम बुद्ध, गुरु नानक, श्री रामचंद्र जी, श्री कृष्ण भगवान ने सबको एकसा ही माना और छूतछात छोड़ दिया तभी उनहोंने सबको जीता है। देवता लोग जब किसी पुजारी के यहाँ जाते हैं तो उनको भोजन करने में छूतछात का विचार नहीं रहता है वह सबको एक समझते हैं ऐसा जो करे वही चक्रवर्ती राजा योगी सन्यासी त्यागी बन सकता है। (राजा योगी सन्यासी में कोई अन्तर नहीं है) राजा को विद्या की जरूरत पड़ती है विद्वान को राजा से धन की जरूरत पड़ती ह परस्पर बराबर हैं अर्थ (हरएक दूसरे का अभिलाषी है) सन्यास शब्द के अर्थ सूरज या सन की आश या आसरा करने वाला सूरजको पूजने वाला (अग्नी प्रस्त) (सूरज ऐसा कर्तव्य करने वाला) त्याग अर्थ सबको

पूजने वाला, किसी को बुरा न ख्याल करे अर्थात् बालक ऐसा स्वभाव बालक भी सूरज ही को पूजता है बालक अन्दर वाली अग्नी को खाने से हवन करता है दोनों एक हैं।

अमर कथा रात्री के समय में शिवजी के सुनाने का कारण

अमरकथा रात को शिवजी ने इस वजह से पार्वती को सुनाया था कि जो मनुष्य या जीव रात्रि को इस बात ब्रह्मचर्य-वानप्रस्थ की कथा सुनता है वह इसको अपने से जुदा करने को नहीं चाहेगा। इसी कारण से वह अमर हो जाता है। रात्रि का समय कथा सुनते सुनते गुजर जाता है और दिन निकल आता है और जीव अपने निजी काम में लग जाता है इसका अर्थ विद्वान पुरुष सही आप ही लेवेंगे (अर्थ वह ब्रह्मचर्य होजाता है) ब्रह्म कभी नहीं सोता है, हर वक्त जागता रहता है अगर यह सो जावे तो सब काम ही बन्द हो जाता है। यह मनुष्य के शरीर में हर समय जागता रहता है और अपना काम बराबर करता रहता है। आप सब पता लगालें। कि कौनसी वस्तु ऐसी है जो कभी नही सोती, ध्यान से देखने से मालूम हो जावेगा।

(एक दृष्टि)

यह कथा और ब्रह्म प्रकाश का हाल रामप्रकाश पुस्तक में भी आया हुआ है उसको भी अवश्य पढ़ें।

हमारे विद्वानों ने इसी गर्भ समाधि ब्रह्म को एक मानकर वेद, पुराण, शास्त्र, करम अनुसार लिखे हैं, न कि वह ऊपर

उड़े हैं और न आकाश की सैर करी है इसी गर्भ समाधि से अर्थ लगाया है। इसी सूरज को बड़ा मानकर सब कुछ वरणन किया है और इसी सूरज भगवान को अग्नि विजली वगैरा नाम रक्खा है। वायु और विजली एक वस्तु है यह करन्ट है जब तारे सितारे एक दूसरे के शक्ति को खींचते हैं तो इसके चाल का हम को धक्का मालूम होता है। इसी को बस हवा या वायु कहते हैं।

शरीर को ज्यादा कष्ट देने से भगवान नहीं मिला करते हैं। क्योंकि मनुष्य का दिल अपने कष्ट निवारण करने में लगा रहता है और रात दिन उसका ख्याल दुख दूर करने में ही लगा रहता है। मान लिया जावे कि वह उस वक्त भगवान को भी याद करता है परन्तु वह अपने मतलब के लिये याद करता है कि दुख दूर हो जावे। संसार में वगैर मतलब या इच्छा के कोई नहीं याद करता है। कोई न कोई इच्छा जरूर रखता है, इसी कारण से किसी को मिलते ही नहीं। अगर मिलते भी हैं तो जलकर या निराकार रूप में मिलते हैं तो साकार रूप को पहचान नहीं पाते है अर्थात दीखते जरूर हैं परन्तु पहिचान नहीं पाते। इसीलिये कष्ट करने से भगवान नहीं प्राप्त होते हैं और जब शरीर को आराम मिलता है तो जीव का दिल खुश रहता है और भगवान वगैर मतलब के याद आते हैं। दिल प्रशन्न ही में भगवान वास करते हैं जब शरीर को कष्ट होगा तो भगवान कहाँ ? वह तो बहुत दूर हुये-भगवान दिल में होते हुए क्या अंधेरा रहे ? नहीं (उजाला)।

भला उन कष्ट देने वाले शरीरवालों से पूछो कि गांव और शहरों में एक राजा का मामूली कारिन्दा आ जाता है तो गांव और शहर में हजारों बिजली की बत्तियां जल जाती हैं तो भगवान ऐसी प्रेमी चीज जहां हों वहां अंधेरा रहे वहां तो

ज्यादा उजाला होना चाहिये। हजारों लाखों चिराग जलना चाहिये। जैसे—सूरज के पास करोड़ों चिराग या सितारह जलता है—अर्थात् भगवान आराम ही से मिलते हैं—

आराम शब्द के अर्थ—आ-राम राम मुझ में आ आ-राम आ-राम आ-राम मुझ में आ। इसी से हाय राम बन जाता है यह हाय राम हृदय से निकलता है—आराम हृदय से नहीं निकलता। आराम को आनन्द कहते हैं कि आ-नन्द के दुलारे आ मुझमें आ नन्द नाम ब्रह्म का भी है सृष्टी उत्पत्ति आनन्द से ही है। इसी बजह से ब्रह्मा नन्द भगवान नाम पड़ा है। शरीर में आंसू आनन्द है और जब प्रेम होता है तभी वह निकलता है। शरीर का सब सत्त है। आप महाशय आसानी से दोनों बातें समझ जावेंगे।

भृगु ऋषि जंत्र

इस पुस्तक में जन्त्र को देखकर जिस वस्तु का जो कारण है और उसका जो गुण है उसके तत्व का तत्त्र यानी सब का अर्थ एक करके लिखा गया है जैसे—भृगु ऋषी जी ने भृगु संग्रह लिखी है अर्थात्-सब को मिलाकर एकत्र यानी सब का संगम किया है अर्थ उन्होंने इसी ब्रह्म को गोल बिन्दी मान कर और उसकी किरणों को छिटकाकर अर्थ फैलाकर हर एक का वर्णन किया है और फिर उसको समेट कर एक बना दिया ; जैसे मछुवा एक जाल को फैलाकर दरिया में डालता है और सब मछलियों को इकट्ठा करके एक खींचता है और सब को एक जगह रख लेता है। भृगु ऋषीजी ने इसी एक की प्रशंसा की है। भृगु ऋषी जी ने गर्भ ही जंत्र को देखकर अर्थात् प्रवेश अविनाशी को सूरज मानकर उसके बढ़ने और ऊपर खिसकने

का हाल कि किस तरह नो माह गर्भ में रहता और चलता है देखा या वह शक्तिवान होकर गर्भ में बैठकर नौ माह का सारा हाल मालूम किया। प्रवेश से लेकर पैदाइश तक पूरा पूरा और ठीक टाइम या समय मालूम करके यह नौ गृह ऊपर पृथ्वी या अपनी शरीर के गिर्द घुमाया या नचाया और गर्भ कुंडली बनाई। मतलब गोल बिन्दी या ब्रह्म प्रवेश के सही समय को लेकर जन्म टाइम तक के अन्दर के समय को नौ माह में बांट या भाग दिया और गर्भ बिन्दु को ज्यों ज्यों गर्भ के अन्दर नौरङ्ग अर्थ एक एकरङ्ग पूरा जितने समयमें अन्दर धारण किया उतना ही समय का था दिन का माह बनाया। इसी कारण से महीनों के दिनों में कमी वेशी पड़ी। पृथ्वी पर मनुष्य या और जीवों के ज्यादा से ज्यादा ब्रह्म पैदाइश को देखकर बारह राशी या बारह मास बनाया है अर्थात् कुछ अन्दर और कुछ बाहर का आकाशी जंत्र का हाल देखकर और दोनों को इकसां मिला कर ज्योतिष विद्या बनाया है। ऊपर कोई नहीं इस शरीर से आकाश को घूमा है। सब कर्तव्य से मालूम किया इसलिये मनुष्य को चाहिये कि कर्तव्यी अर्थ लगावे और उससे लाभ उठावे। आजकल हमारे देश भक्त कर्तव्यी अर्थ वेद शास्त्र का नहीं लगा रहे हैं इसी कारण से भारतवर्ष दूसरों के आधीन है अर्थ दो तरह का होता है—कर्तव्यी अर्थ व्याकरणी. अर्थ। आजकल भारतवर्ष व्याकरणी अर्थ लगा रहा है। संसार के कर्तव्यी अर्थ को मिलाकर के एक करो और उस से लाभ उठावो।

इशाराह

कर्तव्यी अर्थ लगाओ एक दूसरे के शास्त्र को बगैर उसका कर्तव्यी अर्थ निकाले हुए मत काट करो। अपने से सब को

बड़ा ख्याल करो दूसरों के द्वारा अपनी की हुई निन्दा को सुनकर चुप रहो।

ओ३म्

ओ३म् अर्थ ६ या नौ माह गर्भ या नौ गृह या नौ माह समाध या नौघर या नौ इन्द्रियां या नौ भगती या नौरत्न से बना है इसका अर्थ नौ को पूजने वाला है या जो नवों को मिलाकर एक १ बना ले अर्थ सबको सत्य समझे किसी को बुरा न ख्याल करे अपने जैसा सबको बना ले। नौ रङ्ग को एक रङ्ग करदे। अर्थ सूरज भगवान नौ गृह या नौ गांठ या नौ रंग के अन्दर गर्भ में हैं। अर्थ सबके बीच में हैं जब नवों घरों का या नवों देवताओं को पूज कर बाहर होते हैं तो ओ मां कहते हैं अंदर ओ३म् क्योंकि समाधी में बोल नहीं सकते अर्थ मुंह नहीं खुलता इसी कारण से शरीर के अंदर या गर्भ में बच्चे को उमंग आती है कि बोलूं परंतु मुंख से शब्द नहीं निकला। मतलब उसका वर्णन नहीं होता कि जिसने अंदर पाला है बच्चे की अंदर तुतली जबान निकलती है गर्भ में बच्चा को उमंग और कमपिरन होता है उसका नाम लेने को होता है और कहना चाहता है कि ओ३म् मुझको बाहर निकाल मैं अंदर घोर अंधकार में हूँ परंतु यह शब्द उच्चारण नहीं कर पाता है तो उसको कहता है और उसके बाद उम कहता है और फिर ओम कहता है उसके बाद निकलते समय ओम३ कहता है जब बाहर आता है तो ओ३मां३ कहता है अर्थ अपने माता पिता को पुकारता है कि ओमा ओमा ओमा मैं बाहर आगया मेरे को पालन कर मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ और तुमको ओमा ओमा करके अर्थ ओम करके याद करता

है, मतलब माता पिता का प्रेम बच्चा है और उसको अपने से ज्यादा मानते हैं इसी कारण से श्री कृष्ण भगवान ने अपने ही को पुजाया कि जो कुछ है मैं हूं अर्थ अपने शरीर में श्री कृष्ण जी गोल बिन्दी ०, जो सबने बड़ा अस्थापित किया और उसी को पूजा और पुजाया बच्चा गर्भ में नवों देवताओं को अर्थ उनके ही मदद से बाहर आता है इसी कारण से वह बाहर भी उनही नवों देवताओं को पूजता है उनी को नौ ६ गृह कहते हैं। मनुष्य का जन्म अधिकतर नौमाह बाद ही होता है और नौ गृह पूजता है अर्थ जो जीव जितने महीने में पैदा या बनता है वह जीव उतना ही गृह को पूजता है जैसे आठ सात महीने वाला शनी को आठ वाला राहु को नौ महीने के अंदर वाला केतु को और नौ के बाद वाला भगती अर्थ शुक्र (भृगु) को पूजता है श्री अर्थ (श्रीमणी) अर्थ श्यामभणी को पूजता है ओम का शब्द सब जानवरों के बच्चे तक को शुरू शुरू में उच्चारण होता है जैसे गाय, भैंस, बकरी वगैरा ओम ओम ओम अर्थ यह शब्द नौ लकीरों से बना है अथ ६ नौ बना और + इसको भी प्राचीन से प्राचीन काल में नौ ही को कहते हैं और ६ को बनाकर उसको पूजते हैं यह निशान हरएक जगह अर्थ सारे संसार में पाया जाता है दोनों के अर्थ ६ गृह के हैं नौ गृह जोतिष में प्रसिद्ध है इसी ओ३म३ओउ शब्द को तीन दफा उच्चारण करने से २७ सत्ताइस अक्षर बनते हैं। और उसमें जब यह शब्द जिसको कि कहके याद किया हो गए मिलकर २८ अट्ठाइस नक्षत्र बना ओमा से उमा शब्द बना पारवती जी का नाम पड़ा और शिवजी का (ओम)।

अथ (उम माँ-अम्मा)

बगैर शिव जी के भगती नहीं मिलती है जब शिव जी मिल गये तो भगती मिल गई शिवजी सूरज भगवान के

कर हैं अर्थ सूरज भगवान की उनके अंदर ज्यादा शक्ति है अर्थ श्री रामचन्द्र जी परब्रह्म औतार थे और शिव जी उनके चरणों को याद करते थे अर्थ सबसे ज्यादा भगती के मालिक शिव जी थे इससे वह बड़े कहलाये सबसे और सबसे बड़े पितह सूरज भगवान हैं और परब्रह्म कहलाते हैं इसी कारण से वेद में परब्रह्म गीता में प्रेमआत्मा या परमात्मा कथा भागवत में भगवान कहलाते हैं। गीता भागवत वेद में अविनाशी या ब्रह्म को ओम या भगवान कहते हैं अर्थ शाकार रूप ब्रह्म को भगवान अंदर गर्भ में ओम कहते हैं। ओ३म शब्द गर्भ से बनता है और माता पिता से सम्बंध रखता है इसी से उसका अर्थ उमा बना अर्थ शंकर अर्थ शिव पार्वती जी से सबसे बड़ा सम्बंध रखता है यह २७ अक्षर से बनता है ओ३म३आ ३ ओ३म ओ३म३ ओ३म २७ अक्षर से बना है अर्थ (ओमा ओमा ओमा) यह ॐ सात अक्षर से बनता है।

लख चौरासी जुइन या अपार जीवों का भ्रमण

यह अर्थ पहिले अपने शरीर से लिया जाता है अर्थ पहिले यह बात मालूम करना चाहिये कि शरीर किस किस वस्तुओं के जोड़ने या किस किस वस्तुओं के सत्त या तपाने गलाने से जो बाकी रहे उनसे बन्ती है "शरीर" जो कुछ हम खाते या भक्षण करते हैं या हमारे माता पिता और बाप दादा ने खाया है उन चीजों के सत्त से बनती हैं। जब हमारा शरीर माता-पिता के शरीर से बना तो जितना हमारे माता पिता का सत्त या और हमारे सब पूर्व जन्म अर्थ–खानदान या कुटुम्ब का सब सत्त और हमारे खाने पीने का सत्त सब हमारे सत्त में मिल गया। अब देखना चाहिये कि हमारे शरीर से कितने जीव प्रगट होते

है। स्वांस के जरिये या पसीने के जरिये या मल-मूत्र से जो पैदा होते हैं वह सब हमारे सत्त से बने। अब वह जीव जो कि हमारे सत्त से बने वह जो जो वस्तुयें भक्षण करते हैं या खाते हैं उनका सत्त हमारे पदा होने वाले जीवों के सत्त में मिल जाता है और उन जीवों का सत्त उन जीवों को या उन जीवों के खाने वाले जीवों में मिल जाता है। इसी तरह से हमारा सत्त जमा खारिज होता हुआ सब जीवों में भ्रमण करता रहता है और अपने में नई नई वस्तुओं का सत्त भी मिलता रहता है अर्थ सब सत्त या सब का गुण भी लेता है या शिक्षा लेता रहता है और बहु गुण वाला बन जाता है। इसी तरह सब पृथ्वी के जीवों में भ्रमण करता हुआ लख चौरासी जुइनों में भ्रमण करके अपने दर पे या महेवर या किसी पर आ जाता है इसी कारण से जीव को लख चौरासी या अपार जीवों में जन्म लेना और मनुष्य का जन्म मनुष्य ही में होना लिखा है और सत्त सब जीवों का जन्म भी लेता रहता है। अर्थ रूप का रूप भी बदलता रहता है इसी कारण से पृथ्वी पर इस सत्त को ऋषी मुनियों ने बहुगुणवाला भगवान या ब्रह्म कहा है। हम सब जीव पृथ्वी के सत्त से बनते हैं और पृथ्वी आकाशी सितारों के साया या किरणों से पैदा होती है। इसी तरह से सब सितारे सय्यारे एक दूसरे के किरनों से पैदा होते रहते हैं और पृथ्वी का सत्त सब सितारों तारों में फैल जाता है या मिल जाता है। इसी कारण से सारे संसार का बहुगुण वाला बन जाता है और सारे संसार का बहुगुणवाला ब्रह्म कहा जाता है। यही बहुगुण वाला सत्त जब पृथ्वी पर मनुष्य या और किसी जुइन में प्रवेश करता है तो उसी जुइन या जीव को औतार या परब्रह्म कहते हैं। पृथ्वी के बहुगुणवाले जीव को औतार और सारे संसार के बहुगुणवाले जीव को

परब्रह्म औतार कहा जाता है। अगर कोई कहे कि यह सत्त मनुष्य जीव के पृथक् और किसी जीव में प्रवेश करे तो क्या वह भी औतार है हाँ, है जैसे मच्छ-कच्छ-वारह हमारे शास्त्रों में लिखे हैं। यह सत्त चाहे जीव के अन्दर एक साल में या लाखों साल या अर्बों करोड़ों वर्ष में मनुष्य शरीर में प्रवेश करे जभी पृथ्वी पर औतार होगा अर्थ जिस जीव में सब गुण हों वही औतार है और सब जीवों में श्रेष्ट है यह सत्त पृथ्वी या और सितारों और सय्यारों के जीवों में जब प्रवेश होगा। उसी सितारों में औतार होगा अर्थ—ब्रह्म सब सितारों का दौरा करना है और अपने सब प्रजा की देख भाल करता है।

दूसरा अर्थ—मनुष्य या और जीवों का अंतिम समय या मृत्यु के वक्त जीव का प्रेम जिस जीव या जिस वस्तु में अधिक होता है उसका करंट या प्रेम या जीव उसी प्रेम वाली वस्तु में चला जाता है और उस जीव का जन्म वहीं हो जाता है जिसमें कि वह प्रेम होता है अधिकतर जीव का प्रेम जीव के रक्षा करने वाले ही में होता है और मरते समय वही याद आता है क्योंकि अत्यन्त कष्ट के समय ही रक्षा करने वाला याद आता है और कष्ट के समय रक्षा करने ही वाले को जीव याद करता है और उसका प्रेम उसी में उस समय रहता है मृत्यु होते ही करेंट या प्रेम का तार टूट जाता है और प्राण उसी में रह जाता है परंतु मनुष्य का प्रेम ज्यादातर जो अपने शरीर से जीव पैदा होते हैं उसी से ज्यादा प्रेम करता है और मरते वक्त उसी में चला जाता है मनुष्य का अधिक से अधिक प्रेम पुत्र में होता है और मृत्यु के समम वही याद आता है और जीव उसी में चला जाता है अर्थ जीव का जनम मृत्यु से पहले ही जीव का जन्म हो जाता है और अत्यंत समय भी उसी में मिल जाता है अर्थ आत्मा आत्मा में जीव जीव में

मिल जाता है अर्थ—वायु वायु में मैल मैल में मिल जाता है। जीव शब्द के अर्थ मैल, गन्दगी जन्म चोला आदि नाम जो कि शरीर के अर्थ पर होते हैं उसको कहते हैं:—

शरीर से हवा, पसीना, मलमूत्र के जरिए से जितने जीव उत्पन्न होते हैं वह सब जीव हमारे पुत्र हुए। परन्तु हम जिस पुत्र से लाभ उठाते हैं उसी को पालते हैं, बाकी सब को तिलांजलि दे देते हैं और लाभ वाले ही से सम्बन्ध रखते हैं। मनुष्य का सब से लाभदायक पुत्र मनुष्य जुड़न का होता है और सबसे श्रेष्ठ और बड़ा है। इसी से मनुष्य जीव का जन्म पुत्र ही में हो जाता है और आगे ही अपना जन्म पा जाता है। इसी बहुगुण वाले को सतोगुण या सत्तगुण कहते हैं। सतोगुण शब्द के अर्थ—जिसमें सात गुण या सात रस मिले हुए हों। सतोगुण विज्ञान ने इस कारण से इसका नाम रक्खा है कि सप्त ऋषि तारों के आधार पर पृथ्वी और संसार कायम है और इसी के साये से शरीर बनती है। शरीर का चमड़ा सात पर्त का होता है। पृथ्वी का भी सात पर्त का है। सप्तऋषि सबगुणों की खान हैं और सब गुणों को अपनी तरफ खींचने वाले हैं और अपने में खींच कर मिला लेते हैं अर्थ अच्छे बुरे को अपने में मिलाकर अपना जैसा बना लेते हैं अर्थ—किसी को बुरा नहीं ख्याल करते जो सतोगुण को अपने में मिलाता है वही वह बहुगुण है। इसी कारण से शरीर में जब कोई गुण कम होता है तो शरीर को कष्ट होता है इसलिये जीव को चाहिए कि समय समय पर हरएक गुणों को ग्रहण करता रहे अर्थ—हर एक वस्तुओं का समय समय पर भोजन करना चाहिये। जो वस्तु का रस या सत्त या जूस शरीर में कम होगा जिससे कि शरीर बनती है उस को न खाने से ही शरीर को कष्ट होता है क्योंकि हम सब जीव दुख के जीव से बनते हैं अर्थ—सुख

के पुत्र हैं इसी कारण से हम सब जीव सुख के वियोग से सुख ही को ढूंढ़ते हैं। सुख की चीज सुख ही वाली वस्तु को चाहती है वह न मिलने से ही जीव को कष्ट होता है क्योंकि सुख सभी को जोड़ने से बनता है। भगवान सभी को प्रेम करते हैं या सब को चाहते हैं अर्थ अच्छे बुरे दुनियां के ख्याल वाले को बराबर ख्याल या समझते हैं इसी कारण से शरीर में जो वस्तु सुख की है जिससे कि शरीर बनती है जब आप इसमें से कम कर देते हैं तो कमी वाली सुख की वस्तु या मित्र के वियोग से जुदा होने वाले और जिससे जो वस्तु जुदा होती है दोनों को कष्ट होता है अर्थ–दोनों ही रञ्ज और मातम मनाते हैं अर्थात सूरज सुख है और हम सब सुख के लोथड़े या टुकड़े हैं अर्थ सुख के पुत्र हैं। इसी कारण से हम सब जीव सुख के वियोग से सुख ही को ढूँड़ते या तलाश करते हैं अर्थ दिन रात याद करते हैं दूसरा अर्थ–सुख अर्थ (सूरज) वियोग अर्थ–(किरण) किरण सूरज भगवान से प्रगट होती है। और फिर सूरज ही को ढूंढते ढूंढते उसी में समा जाती है अर्थ जितनी वस्तु है सब सुख का है चतुर नर यही कम होने वाली वस्तू खाने को बतलायंगे सुख की वस्तू या किरण जब सूरज भगवान से प्रगट होती हैं तो वहां उस वक्त बहुत गाड़ी होती हैं, ज्यों ज्यों वहां से किरणें आगे चलती हैं हलकी और बारीक होती जाती हैं अर्थ किरणों का वियोग हो जाता है जब कहीं इस वियोग में आपस में टकरा कर एक हो जाती हैं तो जीव या गाढ़ी हो जाती हैं और गाढ़ी किरणों का एक आकार बन जाता है यही आकार छोटे बड़े रूप के जीव बन जाते हैं फिर तो यही जीव अपने में जुदी हुई किरणों को मिलाने ही की चेष्टा या कोशिश करती है कि हम बड़े हो जावें अर्थ मिलाने ही की कोशिश करता है जुदाई का नहीं। किरणों

में जितना ही ज्यादा किरणें आपस में मिल जाती हैं उतना ही जीव मोटा होता जाता है और ज्यादा गुण वाला होता जाता है क्या पृथ्वी के जीव क्या तारे सितारे जितने बड़े आकार के जीव हैं उतना ही ज्यादा गुण वाले हैं। किरणें जब एक स्थान से चलती हैं या रन करती हैं तो फैलते फैलते अर्थ शाखा में शाखा फूटते फूटते बहुत बारीक कीटाणु या कण बन जाती हैं यही छोटी या बारीक किरन जीव हैं जब यह बारीक जीव आपस में गुथते या मिलते या आपस में एक दूसरे से प्रेम करके या प्रेम के भूत बनकर आपस में मिल जाते हैं तो यह बड़े आकार के जीव बन जाते हैं जैसे हमारा शरीर बहुत से कणों या कीटाणुओं के जोड़ने से बना है इसी कारण से जब कोई कीटाणु हमारे शरीर से जुदा होता है जिसके कि जोड़ने से शरीर बनता है तो कीटाणुओं को जुदाई का रंज होता है और जब बाहर के कीटाणु शरीर के कीटाणुओं से मिलते हैं तो शरीर के मिलने वाले कीटाणू या जीव या किरणें अर्थ दोनों ही को खुशी होती है अर्थात् जुदाई का मोह और मोह का जुदाई या वियोग बन जाता है जैसे सूरज से जब किरणें जुदा होती हैं तो दुख या रञ्ज और जब सूरज में मिलती हैं तो खुशी आनन्द सुख ही सुख है अर्थात् जितनी किरणें जितना ही गाढ़ी होती जाती हैं उतनी ही उसमें झलक आती जाती है और जब बहुत ही गाढ़ी हो जाती है अर्थ गांठ पड़ जाती हैं तो यही गांठ शाकर रूप बनजाता है किरणों ही का जोड़ सूरज भगवान परब्रह्म है कणों ही का छिटकान ब्रह्म का अन्स कहा जाता है अर्थ सब जीव ही जीव हैं या कण ही कण हैं रन या सूरज ही का सब पुत्र ही पुत्र हैं अर्थ सारा सूरजबन्शी ही बन्शी खानदान है अर्थ भगवान ही भगवान है दूसरा कोई नहीं अर्थ सब सत्य है यहां

पर पिता अपने पुत्रों ही का आधार अपने जीवन का मानता है अर्थ सूरज भगवान अपने किरणों ही को अपने जीवन का आधार माना है अर्थ पिता पुत्र को तो पैदा कर देता है परन्तु उसका प्रेम पुत्र ही में होता है और पुत्र ही के प्रेम से वह जिन्दा रहता है क्योंकि पुत्रों का प्रेम भी पितह ही में रहता है और उनका आधार पितः ही है। सूरज पहिले तो किरणों को अपने से पैदा या जुदा कर देता है तो जितनी करणें उसमें कम हो जाती हैं तो वह अर्थ सूरज या पितह यह कोशिश करता है कि हम उनको मिलावें और सदा बने रहें अर्थात् पितह से पुत्र पुत्र से पितह अर्थ पितह और पुत्र के आपस के प्रेम से ही सदा दोनों जीवित रहते हैं अर्थ दोनो के प्रेम ही को भगवान कहते हैं।

सप्त ऋषि

शरीर के भाग सिर में सात छेद्र जो मुख्य हैं दो नाक के छेद्र, कान दो, आंख दो, मुँह एक, इसी को शरीर में सप्त-ऋषि कहते है। सिरके अलावा शरीर पर इसी का साया पड़ता है। यह भी सातगुणवाला है सात छेद सिर के और दो छेद मल मूत्र के मिलाकर शरीर का नौ गृह है। सप्त ऋषियों का असर या साया कमर तक और राहू केतु का साया नीचे पड़ता है इसी कारण से राहु केतु का साया पृथ्वी पर दक्षिण दिशा और सप्त ऋषों का उत्तर दिशा में डाला है इसका थोड़ा बहुत हाल रामप्रकाश पुस्तक में दिया गया है।

पुत्र अर्थ (भगवान शाकार) किरण के अर्थ (सर्वज्ञ सूक्ष्म रूप निराकार) बीज अर्थ (ब्रह्म या अविनाशी भगवान) (सूरज एक अर्थ परब्रह्म भगवान है) सूरज भगवान पितह किरण पुत्र किरण से पैदा होने वाले पुत्र भगवान शाकार रूप हैं सूरज परब्रह्म किरण अपार ब्रह्म है।

परब्रह्म के औतार के पहिचानने में यह भी ध्यान चाहिये कि जो सारे संसार के कीटाणों या किरणों को कम न होने देवे वही पारब्रह्म औतार है अर्थ जो कीटाणु या किरण या गुण या विप अपने में कम होते देखे उसको अपने में मिलाने की कोशिश करनी चाहिए जिस तरह से कम वाली वस्तु अपने में मिले उसी तरह से उसको मिलाना चाहिये चाहे खाने से या नहाने से या वायु के जरिये से मतलब जिस हालत से वह कीटाणु मिले मिलाना चाहिये यही सबको मिलाने वाला परब्रह्म औतार है इसी को विष्णु भी कहते हैं अर्थ जो सब विषयों से भरा हो वही विष्ण है अर्थ जो सारे संसार के गुणों से भरा हो वही विष्णु औतार है।

लख चौरासी का अर्थ

लख चौरासी का अर्थ वारहों महीनों में जो जीवों का जन्म मरण होता है उसी को लख चौरासी कहते हैं। लख अर्थ देखो लखो यह हिन्दी शब्द है चौरासी अर्थ बारह महीना या बारह रासियां में सातों दिन या सप्तऋषी सितारे चौरासी दफा या चौरी मर्तबा घूम कर अपनी जगह पर आजाते हैं यह सितारे पृथ्वी के गिर्द और ध्रुव सितारे से सम्बन्ध रखते हुये एक साल या एक वर्ष में चक्कर लगाते हैं इसी चक्कर को चौरासी कहते हैं अर्थ एक माह में सात दिन दूसरे माह में फिर वही सात दिन या सात ऋषी तीसरे माह में फिर वही सात दिन इसी तरह से बारह माह में १२×७=८४ रस्सी (या दफा हुये अर्थ एक रास या एक रासी में सात दिन घूमते हैं तो बारह रासी में चौरासी दिन हुये अर्थात् इसी चौरासी दिनों या एक साल में जीवों का अदल बदल होता रहता है और एक दूसरे

का आकार बदलते रहते हैं अर्थात् जीवों का जन्म मरण इसी चौरासी दिनों में होता रहता है इसी को लख चौरासी कहते हैं इसी में जीव भरमरण कहता रहता है और गोल चक्कर बंधा रहता है।

एक जीव दूसरे जीव का आकार पकड़ना

जीवों का जीवों के प्रेम के कारण से जीव की जुड़न बदल जाती हैं क्योंकि चोला बदलते समय या प्राण निकलते समय जीवका प्रेम जिस वस्तू में होता है मृत्यु के बाद उसी प्रेम वाली वस्तु में करन्ट टूट कर उसी में रह जाता है और उसका प्रेम उसी में रम जाता है और स्वभाव प्रेमी जीव के अनुसार बन जाता है क्योंकि उस प्रेमी जीव के जैसे स्वभाव वाले कीटाणु होंगे वैसा ही उस जीव का जिसका कि मृत्यु के समय करन्ट प्रेम का टूट कर उसमें रह गया है प्रेमी वाले जीव के अनुसार स्वभाव हो जाता है मृत्यु के समय जीव का प्रेम उसके रक्षा करने वाले या उसको जिस जीव से लाभ हो उसी में समा जाता है बहुत से और भी कारण योग बल से मालूम होते हैं कि जिस जीव या मनुष्य के कई पुत्र या पुत्री नहीं होती है तो उसका प्रेम और दूसरी जगह भटकता रहता है और मृत्यु के समय किसी और जीवों में समा जाता है और उसकी योनी बदल जाती है बहुत से जीवों को जो कि वह और जीव हालते हैं मृत्यु के समय उसी पालतू जीवों में समा जाता है और उन पालतू जीवों का प्रेम अपने बच्चों या अपने मालिक के या रक्षक के योनी में मृत्यु के समय चला जाता है और मृत्यु के बाद उसका चोला दूसरा बदल जाता है। प्रेम वस में पुत्र मा का जन्म और मां का जन्म पुत्र में और

पुरुष का स्त्री में और स्त्री का पुरुष हो जाता है इसी तरह से मनुष्य का जन्म अपने प्रेमी जानवरों में और जानवरों का अपने प्रेमी मालिक के योनी में वदल जाता है। हां एक बात और है जिस जीवका कीटाणु ज्यादा गुणवाला और वह जीव बड़े आकार वाला होता है अगर उसमें छोटे जीवों का प्रेम आजावे तो उसका जन्म तो नहीं होगा परन्तु कुछ वड़े जीव का स्वभाव आने वाले प्रेमी जीव के ऐसा हो जाता है परन्तु जन्म नहीं होता है अगर बड़े जीव का प्रेम किसी छोटे जीव में चला जाय तो वड़े जीव का जन्म जोटे जीव का हो जावेगा।

इसलिये मनुष्य को चाहिये कि जिसके सन्तान न हो वह किसी दूसरे की सन्तान को गोद लेकर उससे प्रेम करे जिससे कि उनका जन्म मनुष्य योनी में हो।

अर्थात् मनुष्य योनी को मनुष्य ही योनी से अधिक प्रेम करना चाहये।

वाराह या ब्रह्म औतार

वाराह या ब्रह्म शब्द ब्रह्म शब्द से अक्षर लेकर बनाया गया है अर्थ ब्रह्म का औतार दूसरा अर्थ वारह कला वाला औतार सन या सूरज मर्यादा पुरुपोत्तम श्री रामचन्द्र जी।

जो जीव या मनुष्य या वस्तू वारहों महीने के अन्दर पैदा होते हैं उन सब जीवों को वाराह वा ब्रह औतार कहते हैं। इसके अन्दर सुअर वगैरा जानवर और मनुष्य तारागण सब आगये अर्थ सभी वारह औतार हैं।

इन्हीं वारहों को वारह महीना या वारह रासी भी कहते । वारह रासी के अर्थ वारह रस्सी जो एक खूंटे में बंधी हो

अर्थ सूरज भगवान में बंधी हैं इन्ही बारहों औतार को बारह-तार भी कहते हैं अर्थात् बारह रास्ते एक जगह पर मिलते हैं।

दूसरा अर्थ सूरज भगवान जब दौरा करते करते बारहों मेख या खूंटे पर जाते हैं और पृथ्वी वगैरा पर हरएक खूंटे के प्रभाव के हिसाब से जो जीव पैदा होते हैं वह सब जीव बारह औतार हुये मतलब किसी खूंटे से मीन किसी खूंटे से बिच्छू सांप किसी से मनुष्य और तारागण पैदा होते हैं इसी बारहों महीनों या बारहों औतारों में सब जीव आगये मेंढक, कच्छू, सिंह सब औतार बारहों महीनों के अन्दर ही पैदा हुये हैं अर्थ सब जीव बारह औतार हैं।

इसी बारहों महीनों के अन्दर सब बारह सोलह बहु कला वालों का जन्म मरण होता रहता है।

चौबीसों औतार के अर्थ—जो चौबीसों पक्ष में पैदा होते हैं उनको चौबीसों औतार कहते हैं अर्थ—पन्द्रह दिन का एक पख या पक्ष होता है। यह एक औतार हुवा। एक महीने में दो पाख होते हैं। अर्थ कृष्ण पक्ष शुक्ल पक्ष इस हिसाब से बारह दूना चौबीस हुये बारह शुक्ल बारह कृष्ण मिलकर चौबीस औतार हुये।

बावन औतार के अर्थ—इसमें विद्वान ने एक हफ्ता या सातों दिनों के विषयों के किरणों के उत्पन्न के जोड़ के पैदाइश का एक औतार माना है साल या वर्ष में बावन हफ्ता होता है इस हिसाब से वर्ष भर के हफ्ते के अन्दर के पैदाइश का नाम बावन औतार रक्खा है।

दूसरा अर्थ—शरीर में पैर से बावन अंगुल पर ब्रह्म-गाँठ बांधता है अर्थ ब्रह्म या अविनाशी भगवान शरीर धारण करता है अर्थ गर्भ में परवरिश पाता है। कमर अन्दाजन पैर से बावन ही अंगुल पर होती है और यहीं से उत्पत्ति का

श्री गणेश होता है। गांत अर्थ पीताम्बरी ओढ़ना अंगोछा शरीर पर ओढ़ना अर्थ अविनाशी का गर्भ में शरीर का गांत या पीताम्बरी ओढ़ना है। अर्थ ब्रह्म सब विपयों या सब किरणों का गांत या सब किरणों या सब कीटाणुओं को अपने में मिलाता है अर्थात वावन सप्ताह में जितने जीव प्रगट होते हैं उनको ब्रह्म अपने में वांधता है।

दसों औतार अर्थ सप्तऋपि+राहू+केतु मिलकर नौ और नवों जिसके गिर्द घूमते हैं वह मिलकर दस हुये अर्थ यही दसों औतार हुये।

दूसरा अर्थ—नौ माह गर्भ के नौ औतार और यह मिलकर वाहर दसवां औतार हुवा उधर नौ से वाहर सूरज भगवान दसवां अवतार हुआ इधर अयोध्या में राम दसवां अवतार हुआ इस कारण से राम सूरज वंशी कहलाये।

एक सप्ताह के किरणों के जोड़ के उत्पन्न को एक औतार के हिसाव से साल के वावन औतार

पन्द्रह दिन के किरणों के जोड़ के उत्पन्न को एक औतार के हिसाव से वर्प में चौबीस या चौविष्य औतार

एक माह के किरणों के जोड़ के उत्पन्न को एक औतार के हिसाव से साल के वारह औतार वा बारह राशि इसी वारह औतार से वारह अच्छर जिसको कि अ-आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः वनाये गये हैं।

वारह महीनों के किरणों के उत्पन्न के जोड़ से जो वनता है या उत्पन्न होता है उसका वारहवां औतार कहते हैं यों कहो कि जों साल भर के किरणों से जो वस्तु पैदा होती है उन सव के मजमुये से जो चीज प्रगट या उत्पन्न हो उसको पृथ्वी पर ब्रह्म का औतार कहते हैं आकाश में परब्रह्म हैं

सव विपयों के जोड़ को विष्णु औतार भी कहते हैं।

सांत दिन के विषय का एक औतार पन्द्रह दिन के दो अर्थ एक—एक माह एक माह में दो अर्थ एक साल में बारह अर्थ एक कुम्भ अर्थ गर्भ घड़ा यह तो एक साल के हिसाव से बनाया गया है। अब लीजिये साल साल का एक बारह साल का बारह अर्थ एक कुम्भ अर्थ गर्भ घड़ा इसी तरह यह हिसाव फैलता ही जाता है परन्तु है एक औतार शब्द के अर्थ औतार औतार जो कुँए से उगला जाय उसी को औतार कहते हैं ओ+तार ओ अर्थ उगला तार अर्थ तार अर्थ लार प्यार प्रेम लाड तारनेवाला तैरने वाला (औतार है) औ अर्थ आनेवाला तार अर्थ तार आनेवाला तार अर्थ प्रेम अर्थ प्रगट होने वाले को औतार कहते हैं।

ओ अर्थ अन्दर औ अर्थ बाहर से है गर्भ से बच्चा निकलते समय को ओ निकले बाद औ समाधि या गर्भ में अ मुंख खुलते समय ओ खुलने बाद औ तार अर्थ ब्रह्म को भी कहते हैं अर्थ (ब्रह्म औतार) आकाश में सूरज के मुख से निकली हुई लार को तार या किरण या प्रेम का तार या रेखा कहते हैं वह भी किरण पर ब्रह्म औतार है सब को तारनेवाली और आकाश में तैरनेवाली भी है आकाशी अयोध्या में किरण औतार है इधर पृथ्वी पर अवध या अयोध्या में दशरथ कौशल्या के प्रेम के तार का नाम (राम) है।

परब्रह्म प्रकाश

परब्रह्म सूरज को कहते हैं। सूरज निराकार और शाकार दोनों हैं। सूरज भगवान में अन्दर सूक्ष्म और निर्मल जल के समान जल है। उसके गिर्द चमक है अर्थ तेजी और शान्ती है। सूरज एक है उसकी किरण सर्वव्यापी है क्योंकि एक वस्तु

सर्व व्यापक नहीं बनता और सर्वव्यापक एक नहीं बनता। जिस विद्वान के यह बात समझ में नहीं आई उसने दोनों से बाहर लिख दिया अर्थ बहुगुणवाला लिख दिया अर्थ एक दो से बाहर सर्व व्यापक लिख दिया मतलब एक दो से बाहर सर्व व्यापक बनता है जिसको किरण कहते हैं और इसी को बिजली नाम अग्नी-वायरलेश का तार सूक्ष्म रूप निराकार जिसका फोटो लेने से तस्वीर न आवे और आंख से दीखे जैसे प्रेम का तार, लालच की डोर इसका हाल पुस्तक में कहीं लिखा गया है। सूरज भगवान में यह सब रूप और गुण मौजूद हैं अन्दर नीला जल शूक्ष्मता निर्मल निराकार रूप अर्थ वे आकारवाला वस्तु मौजूद है। जिसका फोटो लेने से तस्वीर नहीं आती है कागज सफेद का सफेद ही रह जाता है देखने में शाकार रूप में आंख से प्रत्यक्ष देख पड़ता है सवाल पैदा होता है कि ऐसी तो और भी वस्तु हैं कि फोटो लेने से तस्वीर या रूप नहीं आता है परन्तु यह सब गुण नहीं पाये जाते हैं सूरज ही भगवान में मिलते हैं। सूरज भगवान को ध्यान से देखने से अन्दर नीला जल अर्थ श्याम रंग श्याममणी देख पड़ता है और शीतलता है बाहर गोलाकार में बिजली ऐसी श्वेत चमक है अर्थ श्वेत नीलापन है अर्थ सर्द और गर्म है अर्थ (शान्ती और तेजी) अगर चाहे तो पल में सब को भस्म कर सकता है। विकराल और काल भी है। जर अमर भी है। सदा एकसा भी है एक ही रूप में है न बाल है न जवान न वृद्ध है देखने से आगे है नहीं तो पीठ के पीछे है अर्थात् सर्दी में आगे गर्मी में पीछे अर्थ (घमन्ड में पीछे शांती में आगे। यही सब वस्तुओं को उगानेवाला है और जलाने वाला भी है। यमराज और धर्मराज भी है (यमराज अर्थ आकाश का राजा धरम राज अर्थ धर्म का राजा) अर्थ (अपने तारागणों को

ठीक रास्ते पर चलाने वाला) सब गुणवाला भी है। सब वस्तुओं को जोड़ने से भी बनता है और सब का करंट या सब का धग्गा या सब की चोटी उसमें बंधी है अर्थात् नत्थी है। सब उसी की परिक्रमा करते हैं और वह सब की परिक्रमा करता है अर्थ भगत भगवान की और भगवान भगत की पूजा करता है 'यह सब से बड़ा विज्ञानी है सूरज ही को बाल ब्रह्मचारी वानप्रस्त कहा गया है अर्थात् सदा ब्रह्मचारी है जो कि कभी नहीं सोता है अगर यह सो जावे तो तमाम सृष्टी ही का नाश हो जावे। शरीर में अग्नि के सो जाने से मृत्यु हो जाती है। सूरज ही से सूरवीर शब्द बना है। यह सब से बहादुर है अवध है इस पर कोई वस्तु नहीं असर होती है न सड़ता है न गलता है न जन्मता है न मरता है परे भी है आगे भी है अर्थ सूरज पीठ के पीछे है उसका अंश अग्नि आगे है दुनिया के माया से मुँह मोड़े तो पीछे खड़ा है अग्नी माया है सूरज मालिक है अर्थ दूर भी है और नजदीक भी है और सूरज ग्रहण ध्रुव की साया से पड़ता है ध्रुव भगती है इसी से सूरज पर भगती का साया पड़ सकता है भगवान भगती के आधीन हो जाते हैं और इसी के साये से बहुत से तारों सितारों की उत्पत्ति होती है अर्थ इन दोनों के प्रेम से ही सब ब्रह्मांडों की पैदाइश है सूरज ही भगवान का गुण साम वेद में सप्त ऋषों था सातों दिनो ने अग्नी होत्र और गायत्री मंत्र छंद और श्लोक गीतों में गाये हैं और इसी की पूजा कराई है। साधु महात्माओं के माथे के तिलक से भी सूरज को सब से बड़ा मानने के अर्थ निकलते हैं। माथे पर एक खड़ी लकीर के तिलक को विज्ञान और त्रिशूल ऐसे तिलक को विज्ञान वैराग्य भक्ती के नीचे जो गोल बिन्दी लगती है सूरज की है विज्ञान और वैराग्य की रगड़ से भगती अर्थ प्रेम हो जाता है और प्रेम से गोल बिंदी

बनती है। गोल बिन्दी सूरज भगवान हैं उधर सब का प्रेमी सूरज भगवान है और सब के प्रेम का तार उसमें जुड़ा है अर्थ किरण उसमें जुड़ा है मतलब सब का वाग डोर सूरज के हाथ में है जहां उसने एक डोर तोड़ी नीचे एक सृष्टी संसार से नाता तोड़ा

बहुधा भोले भाले मनुष्य स्त्रियां माथे पर श्री की या चन्दन रोली आदि के गोल बिन्दी लगाते हैं उनका अर्थ सूरज भगवान को माथे पर धरना है अर्थ सब से बड़ा देवता सूरज को पूजना है स्त्रियों से ज्यादा कोई भगवान की भगती नहीं करता है इसी से वह गोल बिन्दी माथे पर धारण करती हैं।

शरीर में गोल बिन्दी बीज को या गर्भ बिन्दु या अविनाशी भगवान या सर्व व्यापक को कहते हैं इसका हाल लखचौरासी में कहीं पुस्तक में लिखा हुआ है बहुत सारे जोतिष्य विद्या के विद्वानों ने सूरज ही को बड़ा मानकर सप्यऋषों को इसी के गिर्द परिक्रमा कराया है।

प्राचीन विद्वानों ने पृथ्वी को अपने किल्ली पर घूमती हुई स्थिर माना है और सब गृहों को इसके गिर्द नचाया है इस कारण से अविनाशी भगवान को ब्रह्म माना है और इसी को सब वस्तुओं में एक रङ्ग देखकर वेद में वरणन किया और सब से बड़ा माना परन्तु पृथ्वी अपनी किल्ली पर सूरज की किरणों से ही घूमती है और इस पर के सब जीव जन्तु सूरज के किरणों से पैदा होते हैं इस कारण से ब्रह्म का स्थान सूरज भगवान नें माना है और सूरज ही की सब में प्रशंसा की हैं।

सूरज में सब का करंट जुड़ने से सब की शक्ति को या सब के गुणों को खींचता रहता है और सब को मिलाकर अपने ऐसा एक निर्मल और साफ बना लेता है अर्थात् सब दोषों को भस्म कर देता है। सूरज ही से सब तारे सितारे चलते हैं इसी

के नाम पर सनकर या संकर शिव जी का नाम बनाया गया है और कृष्ण भी सूरज ही के आधार पर बनाया गया है अर्थ उधर सन्कर इधर करसन दोनों शब्दों से सूरज ही का हाथ बनता है इसी कारण से इनको परब्रह्म की डिगरी या खिताब दिया गया है ब्रह्म नहीं कहा गया है और इसी कारण से श्रीकृष्ण जी ने अपने में ब्रह्म कहा है पारह शब्द परब्रह्म से लिया गया है पारह नीचे से ऊपर को चलता है और ऊपर से नीचे ही को चला जाता है। निराकार या ब्रह्म या गर्भ अविनाशी भगवान नीचे से प्रवेश होते हैं और मस्तक में जाते हैं और फिर मस्तक से नीचे चलकर दूसरे ब्रह्मांड में प्रवेश होते हैं अर्थ सूरज भगवान नीचे से ऊपर चढ़ते हैं और ऊपर से नीचे ही में स्थिर होते हैं।

साम वेद में जो गाइन का शब्द आया है वह सब शब्द सूरज में जो सब की चोटी या सब का धग्गा या सब का करंट या सब के प्रेम का तार जो उसमें जुड़ा हुआ है सूरज बीच में पहिये की पुट्टि है यह सब तार अरें या आरा गज है जब यह पहिया आकाश में चलता है तो इन आरागजों के रगड़ से जो आवाज या शब्द पैदा होता है वही गाइन शब्द बनता है मिसाल जैसे जब तेज वायु चलती है और किसी पेड़ या पृथ्वी में टक्कर खाती है तो शब्द पैदा होता है इसी से इसको साम या शाम वेद कहा गया है और सब मन्त्र गाइन शब्द में पढ़े जाते हैं।

आंसू जीव आत्मा से निर्मल होता है अर्थ आंसू निर्मल आत्मा है उधर गर्भ विन्दु निमल आत्मा है निर्मल आत्मा में जीव के लिपटने से नीले से श्वेत पीलापन घी ऐसा रंग मालूम पड़ता है उधर सूरज के बीच में निर्मल आंसू जैसा जल है यह तीनों एक सा ही ह इसी से सूरज के अन्दर ब्रह्म का स्थान

है अर्थात् हमारे ख्याल के अनुसार सूरज ही ब्रह्म का ब्रह्म और परब्रह्म हैं और नीले समुद्र के बीच अर्थात् आकाश के बीच में स्थित है इसी कारण से भगवान की मूर्ति के सिर के चारों तरफ किरण सूरज जैसी बनाई और फैलाई जाती हैं किरण सर्वज्ञ और सर एक हुवा।

मन्त्रों में बहुत शब्द सूरज के नाम पर जैसे भाशकरायन आया हुवा है और इस भाशकरायन शब्द से भाशण या भाशन अर्थ (जलाने वाला) शब्द बना है। भाशन एक तो ऐसा होता है जो अपने मार्ग पर चलाने के लिये कर्म कांड पर दिया जाता है परन्तु भाशण वह जो सब जातियों के लिये या सारे संसार के लिये अच्छा हो जो कि किसी को अनुचित न हो अर्थ बुरा न मालूम पड़े सब के लिये एक सार हो सूरज और सूरज का कानू. सब के लिये एक सार है और बहुत से ऐसे शब्द मन्त्रोंमें आए हुए हैं 'जैसे मन्त्रो देवतः' अर्थात जितने शब्द सब के ऊपर मन्त्रों में आये हैं वह सब शब्द सूरज ही भगवान को पुजाते हैं धन्यवाद उन स्त्रियों और भोले भाले मनुष्य जीवो को जो कि अपने ध्यान में गोल बिन्दी ही को परमपूज्य श्री सूरज भगवान ही को अपने मत्थे पर धारण किया है और सिर पर बिठाया है यहां तक की किसी बच्चे से पूछो तो वह ऊपर ही को हाथ और सर उठा कर भगवान को बता देता है कि वह है क्योंकि वह गोल बिन्दी को माथे पर लगाना नहीं जानता है तो ऊपर ही को हाथ उठाकर बतला देता है यहां तक कि सभी ऊपर ही को हाथ उठाते हैं हम तो इन बालकों और स्त्रियों से भी यहां तक कि सब से भी गये गुजरे हैं जो कि हम इस बात को न समझ सके वेद शास्त्र में सही लिखा हुवा है हम गलती पर हैं जो कि दिन भर एक दूसरे से बहस करते रहते हैं और कुछ नतीजा नहीं निकल

पाते है और लड़ाई झगड़े में जल जाते हैं और तीसरा पैदा हो जाता है अर्थात् सारा संसार गोल बिन्दी टीके की तरफ खिच जाता है क्योंकि ईश्वर बिना शीश के है ईश्वर शब्द के अर्थ ही बिना शीश के हैं। बिना शीश के परब्रह्म सूरज भगवान हैं गोल बिन्दी की शक्ल में हैं और उसके शीश का पता नहीं है कि पैर हाथ सर कहां है वह तो गोल है। वह बिना सर पैर के संसार का भरमरण कर लेता है अर्थ जिसका कोई मालिक नहीं है और जिसको कोई सहारा नहीं है अर्थ खुद मालिक है।

संसार

संसार का अर्थ सूरज परिवार-जीव परिवार- अपना बालबच्चा परिवार-खानदान परिवार-पृथ्वी परिवार-ध्रुव परिवार-(सूरज परिवार) (अर्थ) सारा संसार सूरज बन्सी खानदान या कुटुम्ब, सन अर्थ सूरज-सार अर्थ परिवार, इसी कारण से सूरज बन्सी खानदान में श्री रामचन्द्र जी को प्रगट होने ही की वजह से उनको मर्यादा पुर्षोत्तम प्रब्रह्म रामायण में कहा गया है कि उन्होने बारह कला के बाहर अर्थात अपने कुल रीति के बाहर कोई काम नहीं किया है। सूरज भगवान में बारह कला माने हैं बारह ही कला से बारह महीना, बारह राशि, बारह बुर्ज बनाये गये हैं इसी कारण से प्रब्रह्म को अपने ही खानदान के बीच में प्रगट होना पड़ा। इसी कारण से पृथ्वी को विद्वानों ने प्राचीन काल में सबसे श्रेष्ठ माना और मनुष्य तन को देवताओं से भी उत्तम माना कि मनुष्य जन्म में शाकार भगवान के दर्शन हो जाते हैं। देवताओं को इस रूप में नहीं दर्शन होते हैं, देवताओं को उमंग के अन्दर मालूम पड़ते हैं कि कोई मालिक है परन्तु

पहिचान नहीं पाते हैं। इसी से हमारे प्राचीन काल के विद्वानों ने पृथ्वी को बीच में स्थिर मान कर जोतिष विद्या में नौ गृहो को इसके गिर्द घुमाया है और ब्रह्मा और ऋग्ग वेद अर्थ वाल-स्वरूप माना है और पृथ्वी ही पर के चेतन्न ब्रह्म की वेद में अस्तुति करी और प्रसंशा की। अर्थ वीज भगवान से वेद लिखा है। १ बीज भगवान, २ पृथ्वी, ३ चांद, ४ मङ्गल, ५ बुद्ध ६ वृहस्पति, ७शुक्र, ८शनी, ९ सूरज भगवान, १० राहू, ११ केतु, १२ ध्रुव मिलकर बारह कला................................ .. ....
७ सप्त ऋषी, ८ ब्रह्मा, ९ विष्णु, १० शिव, ११ सूरज, १२ ध्रुव मिला कर (बारह कला).......................१ जम्दगनी ऋषी, २ विश्वामित्र, ३ अत्री, ४ गुरु वशिष्ठ, ५ भारजद्वाज, ६ गौतम ७ कश्यप, ऋषी, ८ ब्रह्मा, ९ विष्णु, १० शिव, ११ सूरज और १२ ध्रुव मिलकर बारह कला

७ सप्त ऋषी, ८ विष्णु ९ शिव, १० पृथ्वी, ११ चांद, १२ सूरज भगवान=बारह कला..............................

चोटी

प्राचीन काल के विद्वानों ने जो कि प्राचीन इमारतों जैसे मन्दिर, मसजिद, गिरजा आदि में जो कलस गुम्वज बनाये हैं कुछ न कुछ वह वेदी अर्थ जरूर रखते हैं अर्थ यह कलस उनकी चोटी है यहां तक कि कुदरती चीजों में कुदरती चोटी हैं जैसे पहाड़ की ऊँची सिखा पहाड़ की चोटी है पेड़ की ऊँची डाली पेड़ की चोटी है। शरीर का सर है जानवरों में भी उन के सर पर कुदरती चोटियां पाई जाती हैं। पृथ्वी का ध्रुव है। यहां तक कि इसकी महिमा को समझकर बड़े बड़े राजे महाराजे

अपने सर के चोटी के ऊपर दूसरी चोटी बनाकर सिर पर धारन करते हैं। उनके ताज के कलंगी को दूसरी चोटी कहते हैं यहां तक की मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी श्रीकृष्ण जी भी अपने मुकुट में दूसरी चोटी धारन की है।

मन्दिर मसजिद से मालूम पड़ता है कि प्राचीन समय में सारा संसार चोटी धारण करता था। चोटी से मालूम पड़ता है कि हमारे ऊपर कोई और भी अफसर या मालिक या हमारी रक्षा करने वाला या हम को पैदा करनेवाला है कि जिससे हम डरें और समझें कि हमारी बाग डोर किसी के हाथ में है उस की हम प्रार्थना करें।

जिसके ऊपर कोई अफसर या मालिक न हो या उससे सारे संसार से कोई बड़ा न हो उसके चोटी नहीं होती है। परब्रह्म या सूरज भगवान से सारे संसार में कोई नहीं बड़ा है अर्थ गोल बिन्दी शक्ल है जिसके चोटी नहीं है परन्तु सूरज भगवान भी कहते हैं कि हे सब भाई हमारे बहुत सारी चोटी हैं और बहुत सारे मालिक हैं और तुम्हारे एक ही मालिक हैं। हमारे बहुत सारे मालिक होने की वजह से हमको बहुत सारी चोटियां रखना पड़ता है। हमारे चौतरफा जो हमारी किरणें हैं वही हमारे चौतरफा के सुनहरे बाल हैं और यही बहुत सारी हमारी चोटियां हैं और यही चोटी सब जीव-जन्तु तारागण हमारी खींचते रहते हैं कि जिससे मैं घमंडी या बड़ा न बन जाऊं इसी कारण से मैं हमेशा ही छोटे का छोटा ही गोल बिन्दी की शकल में रह जाता हूँ, न घटता हूँ न बढ़ता हूं एक ही शकल में हमेशा रहता हूँ परन्तु फिर भी मैं हजारों के चोटी खींचते हुए भी इन्हीं सुनहरे बालों में एक छोटा गोल बिन्दी सा आप महान पुरुषों की कृपा दृष्टि से चमकता रहता हूँ जैसे मिसाल कस्तूरी-मृगनाभी गोल होती है उसके अन्दर गमक भरी होती

है ऊपर चौतरफा बाल होते हैं इन्हीं बालों के अन्दर से गमक या खुशबू आया करती है परन्तु देख नहीं पड़ता है—
अर्थ अपने को कभी बड़ा नहीं ख्याल करना चाहिये।

सूरज की किरणें हमारी और सब तारागणों अर्थात सारे संसार की चोटी है और सब की चोटी या सब के प्रेम का तार सूरज भगवान में जड़ा है इसी सब के प्रेम के तार या सब के शक्ति से सूरज भगवान बने हैं। इसी कारण से सूरज भगवान कहते हैं कि सब से मैं छोटा हूँ और गोल बिन्दी का गोल बिन्दी ही रह जाता हूँ। इसी से मेरे बहुत सारे मालिक हैं और मुझको बहुत सारी चोटियां रखना पड़ता है। इसी कारण से मैं सब से छोटा हूं और भी सूरज भगवान कहते हैं कि मैं एक पहिये के नाय या नाभ के समान हूं और तुम्हारे सबों के प्रेम का तार या अरह या अर या आरा गज है आरा गजों के ऊपर नाय रुकी हुई है और नाय आरा गजों को रोकती है। हम आपसे ओर आप हम से आप हमको याद करोगे तो हम तुमको दूना याद करेंगे। इसी वजह से सूरज भगवान सब के बीच में अर्थात नीले समुद्र के बीच में स्थित हैं और सब को अपने साथ लेकर चलते हैं।

सूरज भगवान एक नीले रंग का बहुत साफ नृमल गोल अल्लम मणी है इस गोल मणी में जब हम सबों के प्रेम का तार या करन्ट हम लोगों के चलने से उस मणी में रगड़ खाता है तो उसमें बिजली जैसी चमक पैदा होती रहती है यही सूरज की किरण हैं।..................

हम सबों का सब से बड़ा बिजली का खम्भा (सूरज भगवान हैं)।

इसी चोटी की महिमा को जानकर राजे महाराजे सब

देवतागण रखते थे, यहां तक कि साधू महात्मा स्त्रियां सभी बालों ही को चोटी अपने सर पर बना लिया, इसी कारण से सभी दुनियां इन्हीं को पूजा और बड़ा बनाया। चोटी का मतलब कि हम सब से छोटे हैं और सब देवताओं को सिर पर धारण करता हूं और सब को पूजता हूँ। यहां तक कि श्रीरामचन्द्र, श्रीकृष्ण जी भी अपने सर पर कलंगी लगाकर कहते थे कि जो कुछ करते धरते हो वह आप ही सब करते धरते हो, मैं कुछ नहीं करता हूं। आप ही सब को पैदा भी करते हो और संगहार भी करते हो। अर्थात जो कुछ करता है चोटी वाला करता है। हम जैसा करते हैं वैसा ही फल पाते हैं अर्थ जब हम कुदरती या प्रब्रह्म के कानून को तोड़ते हैं अर्थ उसके बनाई हुई राह या मार्ग या शाख को दो करते हैं तो हम सजा पाते हैं। अर्थ एक मत से चार मत बना देना ही हम को सजा हुई। अर्थ कोई मनुष्य जब कोई मत या राह बनाता है तो दोषी और हितोषी बनाने वाला ही होता है। क्योंकि बनाने वाला तो उस वक्त की हवा की दशा देखकर काट करने को वस्तु या मत बना लेता है परन्तु जब वह हवा आगे चलती है और दूसरी हवाओं का सामना करना पड़ता है तो मुशकिल आती है, और बनाने वाले को दोष देता है और अगर अच्छा हुआ तो बहादुर कहता है। चीज वह बनाये जो कभी न कट सके और बनाये भी तो आगे का हाल देखकर कि आगे कौनसी हवा का सामना करना पड़ेगा, या बनाये नहीं। जो कुछ भगवान कर रहा है होने दो, बहुत सारे विद्वानों का कहना है कि ईश्वर के चोटी नहीं है अर्थ सूरज भगवान ही गोल बिन्दी के कारण चोटी नहीं रखते हैं इन्हीं को देखकर बहुत साधू महात्मा सन्यासी चोट सर पर नहीं रखते हैं कि हम ब्रह्म के अन्स हैं हमारी चोटी खींचने वाला कौन, अर्थ हम ब्रह्म हैं और कहते हैं

कि हमी ब्रह्म हमी ब्रह्म, अर्थ सभी ब्रह्म बन गये। बहुत से महापुरुषों ने तो इस कारण चोटी कटवादी कि जब लड़ाई झगड़ा होता है तो लड़ाई में चोटी पकड़ कर खींचते हैं और तकलीफ पहुंचाते हैं। इस वजह से कटवादी कि हमारी चोटी खींचने वाला कोई न बने। परन्तु जब वह रण में जाते हैं तो वह चोटीदार कुल्लह या टोपी पहन लेते है जिसके ऊपर झब्बा या फुलरा लगा लेते हैं तब जीत होती है।

किसी विद्वान ने कहा है कि आज कल संसार में बहुत सारे बे चोटी के ब्रह्म प्रगट या बन गये हैं। यहां तक कि हमारे भारतवर्ष में भी बहुत सारे ब्रह्म बन गये हैं। हे भगवान एक ब्रह्म के तो बिगड़ने से सारा संसार जल जाता है परन्तु इतने ब्रह्मों से क्या से क्या हो जाना चाहिये, परन्तु उस ब्रह्म के बगैर कुछ भी नहीं कर पाते। बहुत सारे ब्रह्मों ही या बमों की वजह से ही ससार की दुर्दशा हो रही है। एक अगर होता तो काहे को यह दुर्दशा होती आराम से चैन की वन्सी बजती।

(बम) अर्थ (शिव)

यही सब बातें श्लोक और छन्दों में व्याकरण के अनुसार संस्कृत विद्या में बनालो वेद बन जाता है भाषा में दुनिया के ख्याल से कुछ भी नहीं। संस्कृत अर्थ संसकृण-संकृण सूरज की कृण। अर्थ जिसमें सूरज भगवान और उनकी चमत्कार की प्रशंसा हो।

ब्रह्म मणी

ब्रह्मण शब्द ब्रह्म मणी से बना है अर्थ जिसके पास ब्रह्म मनी हो मतलब जो ब्रह्म की पूजा या उसकी पालन करता हो

जैसे ब्रह्म मणी हनूमान जी के पास थी। काग भुशंड के पास दासमणी शिव जी के पास लाल-श्वेत पीली तीनों रङ्ग की मणी अर्थ प्रेम मणी थी। श्री रामचन्द्र जी के पास श्याममणी अर्थ सूरजमणी ब्रह्मा के पास लाल मणी विष्णु के पास लाल श्वेत मणी श्रीकृष्ण पास अपार ब्रह्ममणी परशुराम जी के पास विष्णू मणी गुरु वशिष्ट के पास ब्रह्म मणी थी दास मणी भगती मणी को कहते हैं भगती प्रेम मणी को प्रेम मणी का रंग ऊपर पीला अन्दर श्याम होता है पीला श्याम रंग ध्रुव सितारे का है ध्रुव प्रेम है इसी से सारे तारे सितारे और परब्रह्म अर्थ सूरज भी ध्रुव के गिर्द घूमते हैं। ध्रुव स्त्री वाचक और सूरज पुलिंग है। सूरज ध्रुव की और ध्रुव सूरज की परिक्रमा करता है। श्याम मणी और अपार ब्रह्म मणी दोनों के एक अर्थ हैं।

नौ गृह

नौ गृह अर्थ नौ महीना या नौ घर या नौ इन्द्रियां मतलब ७ सप्त ऋषी और ८ विष्णू, ९ शिव मिलकर नौ + गृह हुये।

सातों दिन+ राहू ९ के मिलकर नौ हुए।

१ जमदग्नि ऋषी, २ अत्री ऋषी, ३ विश्वामित्र ४ गुरु वशिष्ट ५ भारद्वाज ऋषी, ६ गौतम ऋषी, ७ कश्यप ऋषी, ८ विष्णु ९ शिव मिलकर नौ ९ सोमवार अर्थ १ चन्द्र, २ मंगल ३ बुद्ध ४ बृहस्पत, ५ शुक्र, ६ शनी, ७ रविवार, ८ राहू, ९ केतू मिलकर ९ नौ सप्त ऋषी विष्णु शिव ध्रुव के गिर्द घूमते हैं। ध्रुव का सर पृथ्वी और पृथ्वी का ध्रुव सर है। दोनों भगती और प्रेम हैं और दोनों एक पट्टे पर चलते हैं ध्रुव श्री है पृथ्वी रमा लक्ष्मी है ध्रुव पत्नी पृथ्वी दासी है इसी से हमारे विद्वानों

ने ध्रुव के गिर्द सप्त ऋषियों और विष्णु शिव को घुमाया है और उन्हीं का साया लेकर पृथ्वी के गिर्द नौ गृहों को अर्थात् सोमवार मंगल बुध शुक्र वृहस्पति शनी राहू केतू सूरज को घुमाया है। इन्हीं के आधार पर नौ नाम रक्खे हैं और सृष्टी कायम है।

"सत्त"

भगवान ने सारे संसार में जो वस्तुयें पैदा की हैं अपने ख्याल के अनुसार सब अच्छी ही रची हैं कोई न कोई हम सबों के लिये अच्छा ही के लिये उत्पन्न की हैं कि जिससे हम को फायदा पहुंचे। तारा गणों का भी यही हाल है जोतिषी लोग किसी सितारे को तो खराब और किसी को अच्छा ख्याल करते हैं परन्तु सूरज भगवान के लिये एक सार है। वह सब को बराबर मानता है इन्हीं तारों के साये से जातियां बनी हैं। जितने तारे सितारे हैं उतना ही पृथ्वी पर जीव हैं जितना ही उनका पृथक पृथक प्राकृति या स्वभाव है वैसा ही हम लोगों का है, वहां भी अच्छे बुरे हैं और यहां भी हैं। बुराई तो इस कारण से बनाई कि हम को घमंड न हो जावे अर्थात अपने ही को ब्रह्म न मानने लग जावें, और अच्छाई इस वजह से बनाई कि बुराई को भी अच्छाई दी जावे कि सब का घमंड टूट जावे। बुरा आदमी अपने को सब से छोटा ख्याल करता है, उसमें जरा भी घमंड नहीं रहता है। इस वजह से भगवान ने उसको अच्छा ख्याल किया है। अर्थ अधिक घमंडी को बुराई उसके लगा देते हैं कि जिससे उसका घमंड टूट जावे और बुरे को अच्छाई दे देते हैं कि जिससे उसका घमंड टूट जावे। अर्थ सब से छोटी ही चीज अच्छी होती है अर्थ कोई वस्तु घटे बढ़े नहीं,

इतना ही का इतना बना रहे, और अपनी अपनी जगह पर हर एक वस्तु कायम रहे। सूरज भगवान एक सां ही बने रहते हैं न बढ़ते हैं न घटते हैं, गोल बिन्दी का गोल बिन्दी ही रह जाते हैं। मनुष्य भी भादरण करते हैं कि जब मुझ में घमंड आता है तो आप लोग हम को बुरा कहते हो, और हमको दबा कर छोटा बना देतेहो अर्थ जब मैं तपता हूं तो आपलोग मुझको बुरा कहते हो; अर्थ बुरा ख्याल करते हो और मेरे को पीठ के पीछे कर देते हो और जब मैं छोटा हो जाता हूं तब दुनिया मुझे नहीं चाहती है तो मैं दुनियां से बेइज्जती के मारे पृथ्वी से बहुत दूर भाग जाता हूं तब पृथ्वी पर सर्दी हो जाती है और दुनिया फिर याद करती है और मुझको पूजने लगती है, और अपने आगे कर लेती है। अर्थ पूजने वाला देवता आगे न पूजने वाला पीछे—संसार हमी को सत्त असत्त बना देती है, परंतु मेरे लिये दोनों बराबर हैं किसी को बुरा नहीं मानता हूं। मेरे से सब अच्छे और बड़े हैं परंतु मैं वही का वही गोल बिन्द और एक ही अवस्था, बालक ऐसा स्वभाव अच्छे बुरे का ख्याल नहीं, नित्य अपने ही कर्म में लगा रहता हूं आगे पीछे कुछ भी नहीं ख्याल करता हूं कि कौन अच्छा कौन बुरा, हमारे ख्याल में सत्त असत्त कोई वस्तु नहीं है। सूरज भगवान कहते हैं कि मैं असत्त हूँ तो मेरा सारा परिवार असत्त है परन्तु आप लोगों ने मुझे सत्त माना है और मेरे ही से सब की उत्पत्ति लिखी है—तो सारा संसार सत्त है—जिसके ख्याल में मैं असत्त हूँ उसके ध्यान में सारा संसार झूंठा है और असत्त समझने वाला सत्त है। अर्थ अगर सारा संसारसत्त है तो ख्याल नहीं—अर्थ (बहस नहीं) और अगर असत्त है तो ख्याल नहीं कर सकते अर्थात् असत्त वाला शास्त्रात नहीं कर सकता। अर्थ (सब सत्त है)

पांचों तत्व से शरीर बनी है—पांचों तत्वों में अच्छी बुरी सब वस्तु शामिल हैं और अच्छी बुरी चीजों के खाने से बनती है। वहां अपने फायदे के लिये अच्छा बुरा कोई नहीं ख्याल करता है जब वहां नहीं ख्याल है और सब को बराबर ख्याल करता है वहां तो सब सत्त है भाई आज एक वस्तु हमारे ख्याल से बुरी परन्तु दूसरे के ख्याल से अच्छी और दूसरे ख्याल वाली वस्तु हमारे ख्याल में बुरी अर्थ जिसको जो मार्ग पसन्द वही उसके लिये अच्छा है अच्छा बुरा कोई नहीं है सब बराबर हैं। बराबर लाइन भगवान मार्ग है अर्थ सब को सत्त ख्याल करो जैसे हम किसी को बुरा कहा या असत्त खयाल किया तो कहने वाला और जिसको कहा गया दोनों बुरे अर्थ दोनों आपस में लड़कर मर गये और सत्त का सत्त बाकी निकल पड़ा मतलब छोटा ही का छोटा सत्त यानी गोल बिन्दी ही बाकी रह गई अर्थ सत्त कहने वाला और जिसको असत्त बनाया गया दोनों असत्त का नाश हो गया अर्थ कहने वाले को तो घमंड खा गया और जिसको कहा गया वह तो असत्त था ही इसलिये दोनों ही का नाश हो गया। जिसके दिल में अशंका या अटक होता है वही बहस या मुबाहसा या शास्त्रार्थ करता है अर्थ असत्त ही सत्त को ढूंढ़ता है। सत्त असत्त को नहीं ढूंढ़ता जीव आत्मा ही को लपटने को दौड़ता है आत्मा जीव को नहीं।

जितने वस्तुओं को हम कैमिस्ट के जरिये से या उसको तपा गला कर उसका रस या जूस या सत्त बाहर निकालते हैं उन्हीं सब वस्तुओं को हम भोजन करके पेट की अग्नी द्वारा उस का सत्त निकालते हैं हम उसको कच्चा पक्का खाते हैं परन्तु और जीव जन्त कच्चा ही खाते हैं और उसको अपने पेट की अग्नि से उसको तपा गलाकर उसका सत्त अपने अन्दर जमा कर लेते

हैं यही सत्त सब जीवों का मजमुआं हुआ है इसी से हमारी शरीर बनती है।

सब के मजमुये में अच्छी बुरी या सत्त असत्त सब आगया है इसी से सब बनता है इस हिसाब से कोई वस्तु असत्त नहीं है। सत्त बीज, घी, तेल यह सब एक ही वस्तु है इसी को अवि-नाशी कहते हैं यही सत्त एक दूसरे में जमा खारिज होता हुआ लख चोरासी जुइन में नाचता हुवा या भरमण करता हुआ या सब का गुण लेता हुवा फिर अपने दरपे या अपने महेवर पर आ जाता है और सब का आकार भी बदलता रहता है इसी को सर्व व्यापक और ब्रह्म भी कहते हैं अर्थ (अन्दर यह बाहर हम) अर्थ (निराकार शाकार) बाहर हम के नाम को शरीर अन्दर सत्त कहते हैं

सब तारों के आकार को ब्रह्मांड भी कहते हैं इसी ब्रह्मांड के अन्दर यह मणी विराजमान है।

सरजू और गंगा

सरजू शब्द सूरज से बना है अर्थ जो सूरज भगवान की तरफ से जल अर्थ कृण पृथ्वी या और सितारों की तरफ बरसता है या ऊपर से पड़ता है, उस जल को सरजू जल कहते हैं। सरजू अर्थ सब को सर करने वाला, सब को एक सा सींचने वाला, सब भूमि को सैराब करने वाला सब को बराबर सींच या शिक्षा देने वाला, उसी जल को सरजू कहते हैं। सरजू सूरज भगवान के नेत्रों से निकलता है सूरज भगवान सब की आंख हैं और सब के सर भी हैं, जो वस्तु नेत्रों से निकलती है वह वस्तु उसका प्रेम है। शरीर में प्रेम वस्तु आंसू है आंसू सब शरीर का सत्त अर्थ निमल जल है। इसी कारण से अयोध्या

वाले अवध के किनारे बहने वाले जल का नाम सरजू रक्खा। यह जल ऊपर भी अवध के किनारे वहता है, और शरीर में भी अवध के किनारे वहता है। आंसू निर्मल सूक्ष्म वस्तु है अर्थ आत्मा है जब इसमें जीव मिल जाता है तो इसको जीव आत्मा कहते हैं और इसका नीले से पीला श्वेत रंग हो जाता है। जिसको कि वीज भगवान कहते हैं इसी वस्तु या वीज भगवान को गंगा और भागीरथी गंगा कहते हैं इसके जल का रंग वीज ऐसा है नीला पीला श्वेत लिए हुए हैं कहीं कहीं इसका जल जब जीवों से साफ हो जाता है तो निर्मल सूक्ष्म नीला रंग शीशे ऐसा साफ देख पड़ता है। यहां तक कि सैकड़ों फुठ गहरे जल में सुई तक देख पड़ती है ऐसा ही साफ नीला जल सूरज के अन्दर भी झलकता है, और उछलता हुआ मालूम पड़ता है। यही वह सरजू है भगवान के जो जल आंख से निकलता है वह सरजू और जो नीचे से निकलता है वह गंगा है अर्थ कृष्ण (सरजू) कृष्ण से पैदा होने वाले (गंगा) अर्थ जो भग से निकले उसको (गंगा) गंगा अर्थ शाख का शाखा। संसार में जितने ब्रह्मांड ८ सूरज की डाली हैं उसकी कृष्ण हैं, वही शाखायें सर्व व्यापक हैं वीज भगवान और कृष्ण सर्व्यज्ञ हैं। सब सूरज ही की शाखा हैं और उसी से उत्पन्न होती हैं। इसी कारण से सरजू को भगवान के सर से और गंगा को चरनों से निकलना लिखा गया है और पृथ्वी पर इसका जल उत्तम से उत्तम माना गया है।.................

लाल बिन्दी

लाल से अर्थ लड़ने वाला, अर्थ सारे संसार से बहादुर का निशान या ध्वजा। अर्थ (सूरज भगवान का झण्डा) सूरज भग-

वान या प्रब्रह्म कहते हैं कि अगर कोई मेरे से बढ़ेगा तो, लो यह मेरा झन्डा खड़ा होता है और मेरे से लड़ो। अर्थ सूरज का लाल झन्डा सूरज की तेज कृणों है। अर्थ सूरज भगवान कहते हैं कि अगर कृण के आगे बढ़ोगे तो भस्म हो जाओगे। अर्थ यह लाल किरण खूनी झन्डा है। इससे यह अर्थ निकला कि जितने मनुष्य या समाजें लाल झन्डा या वस्त्र धारण करते हैं वह लड़ने ही के लिये धारण करते हैं कि मैं लड़ूंगा मेरे नजदीक मत आओ अर्थ मेरे को किसी वस्तु से सरोकार नहीं है, अर्थ वैराग है अर्थ आग से वैर है हम से आग दूर रहे। अर्थ प्रब्रह्म दूर रहो नहीं तो हम जल जाऊंगा। दूसरा अर्थ आग दूर (के) अर्थ लड़ाई दूर रहो। हम सब को चाहते है, इसी कारण से अन्य देश वाले लाल वस्त्र बहुत कम धारण करते हैं। श्वेत, नीला, पीला, रंग के कपड़े ज्यादा पहनते हैं सिर्फ लड़ाई के समय लाल झन्डा खड़ा करते हैं। लाल निशान लड़ाई का श्वेत मेल का पीला प्रेम का हरा खुशी का नीला, शान्ति का है।

इसी कारण से साकार रूप परब्रह्म को नीलाम्बर रूप माना है और चित्र में नीला रूप बनाया जाता है कि इतने शान्त और भोले भाले हैं कि वह कुछ भी नहीं जानते हैं अथ कुछ भी करते धरते नहीं सबसे दूर अर्थ परे अपना डेरा लगाये हुये हैं और अपने ऊपर नीली छत्री या नीला झण्डा ताने हुये हैं इतना बड़ा कि जैसे आकाश इसी नीली छत्री के अन्दर बैठे बैठे एक छोटे गोल बिन्दी के समान चमकते रहते हैं। भगवान कहते हैं कि मैं इतना छोटे से छोटा हूँ कि आकाश के अन्दर जो कि कोई चीज नहीं है उसके अन्दर आबाद है।

सवेरे और शाम को सूरज को किरणें पहिले लाल होती है उसके बाद पीला श्वेत रङ्ग की उसके बाद दोपहर को श्वेत

अर्थ दोपहर को मिलाने वाला लाल रात्री को जुदा करने वाला पीला श्वेत को मिलाने वाला बनता है इसी कारण से स्त्रियां बालक बड़े बड़े विद्वान पुरुष या प्रेमी तीन रङ्ग बिरङ्गे पीला नीला श्वेत वस्त्र धारण करते हैं या पहिनते हैं। इसी कारण से इनको सारा संसार प्रेम करता है कृष्ण और राम भी रंग बिरंगे वस्त्र पहिनते थे और उनको सब प्यार करते थे !

राजा महाराजा भी सूरज की किरणों के हिसाब से टायमी कपड़े बनवाते हैं प्रातःकाल के पतलून भूरे रंग की कोट लाल उसमें बटन सुनहरा, गुलेबन्द लाल भूरा रंग का टोपी नीली, दोपहर का श्वेत या नीला श्वेत या नीला काले रङ्ग का तीन बजे भूरी रङ्ग की कमीज और पतलून पांच छः बजे सलेटी रात को काले रङ्ग का वस्त्र बनवाते हैं। अर्थ इन्हीं कृष्णों ही के रङ्ग के ऊपर बनाया जाता है और पहिनते हैं और लाल बिन्दी माथे पर लगाते हैं कि हम से लड़ाई भी बड़ी है और हम उसको माथे पर रखते हैं कि हम नहीं लड़ते, और सर झुकाता हूँ और अपने ऊपर नीला झन्डा तानता हूँ इतना बड़ा कि जैसे आकाश।

गोल बिन्दी अर्थ सूरज भगवान को मस्तक पर धारण करना है और उसके शांति के लिये चौतरफा नीला जल अर्थ नीले समुद्र के बीच अस्थापित करता हूं अर्थ सब से बड़ा मानता हूं।..........................

पीला झन्डा अर्थ प्रेम-भक्ती-श्वेत झन्डा सुलह विज्ञान, (अर्थ सूरज) लाल झन्डा दुश्मनी, वैराग, (अग्नि) नीला झंडा शान्ति अर्थ जिसमें जरा भी घमन्ड न हो, सब से छोटा (छिपा हुआ) अर्थ कृष्ण इसको वहीं देख सकता है जिसके खून का पानी या जल बन गया हो, जैसे (आकाश) (अर्जुन) कि जिसके खून का पानी बन गया और पृथ्वी

पर गिर पड़ा कि हे भगवान अब हम में जरा भी गर्मी नहीं है अपना चमत्कार या कृण दिखलाइए अब मैं आपकी गर्मी को अपने शरीर में जज्ब या बर्दाश्त या छिपा सकता हूं दीजिये। अर्थ जाड़ा लगने वाले ही को अग्नी अच्छी मालूम होती है मतलब जरा भी घमन्ड न हो तभी ब्रह्म को पहिचान सकता है और देख सकता है।

कृष्ण-शंकर प्राण का भेद

कृष्ण शब्द के अर्थ या मानी सूरज की किरण अर्थ अंधेरे को उजाला करने वाला मल्लाह लीडर मास्टर नाखुदा किश्ती खेनेवाला जोतिष विद्या में अंधेरे को उजाला करनेवाला कहते है जिसको कृष्ण पक्ष कहते हैं कि अंधेरे से अंधेरे को उजाला करने को कृष्ण कहते हैं अर्थ कृण के आधार पर कृष्ण नाम बनाया गया है कृष्ण शब्द में कृ अर्थ रगड़ श अर्थ सूरज से ण अर्थ दोड़ से लिया है कि सूरज की किरण बहुत तेज दोड़ने वाली है इसी का नाम प्रकाश है।

शंकर शब्द के अर्थ भी सूरज की किरण है अर्थ सनकर अर्थ सूरज का कर या हाथ है अर्थ सूरज भगवान, की किरण ही सूरज का हाथ है और यही किरणें सब करती धरती हैं। सूरज नहीं अंग्रेजी जबान में सन सूरज को कहते हैं और संस्कृत भाषा में भी प्राचीन काल में सूरज ही को कहते थे वेदों में जहां सन या सनो शब्द आया हुवा है वह सब शब्द सूरज भगवान से सम्बन्ध रखते हैं। कृशन और शंकर एक ही अक्षरों से बनता है। कृष्ण में सन बाद में आता है और शंकर में पहिले आता है अर्थ शंकर पहिले हुये और कृष्ण बाद में हुये अर्थ पहिली किरणों को शंकर दूसरी

किरण को कृष्ण दूसरा अर्थ पितह को शंकर पुत्र को कृष्ण भी कहते हैं।

प्राण शब्द के अर्थ किरण के हैं प्रा अक्षर प्रब्रह्म से और ण अक्षर किरण से लिया गया है अर्थ दौड़ने वाला पर पँख प्रकाश किरण के अर्थ हैं किरण शब्द के अर्थ कृ अर्थ रगड़ से जो चमक पैदा हो रण अर्थ आगे बढ़ने वाली अर्थ जो चमक रगड़ से पैदा होती है वह बहुत तेज आगे को दौड़ती है अर्थ बहुत तेज रण करने वाली कि जिससे कोई नहीं जीत पाया है (अर्थात हर समय चलने वाला) इसी को विजुली वायु भी कहते हैं इसी कारण से अंग्रेजी भाषा में रण या रन के अर्थ दौड़ही लगाये गये हैं बहुत से मनुष्यों का कथन है कि क्षत्री मरे रण में योगी मरे बन में प्रेमी मरे मन में अर्थ सब किरणों के बन में मरें बन अथ किरण का जगल, मन अर्थ प्रेम, प्रेम भी किरणों को कहते हैं सूरज और हम सबो को यही किरण ही मिलाती है अर्थ दो को मिलाने वाला प्रेम हुवा अर्थ एक ही है।

सनातन और सनातन धर्म के अर्थ

सनातन शब्द के अर्थ सूरज भगवान से सम्बन्ध रखना है अर्थ सूरज की किरण, सूरज का तन अंग्रेजी भाषा में इस शब्द को सन आत्म या सन्आत्मा सन आफ़ तन अर्थ सूरज की आत्मा अर्थ किरण किरण ही सूरज से प्रगट होती हैं इसी कारण से इसको सूरज की आत्मा कहते हैं अर्थ (सूरज का पुत्र) (सूर्य परिवार) अर्थ (सारा संसार) सूरज की आत्मा हैं अर्थ सब सूरज की किरणों ही से पैदा होते हैं। संसार में जितनी जोतियां या जातियां हैं वह सब सूरज पुत्र हैं। इसी को सनातन कहते हैं

इसी शब्द से संत-संतन बना है संत सूरज को कहते हैं और संतन उसके पुत्रों को कहते हैं सन्तान या सन्तन ही को बहु सूर्य कहते हैं यही सब बारह कलाओं के अन्दर चलते रहते है और सनातनी कहलाते है।

सनातन धर्म—धर्म अर्थ सूरज सनातन अर्थ पुत्र किरण सूरज के पुत्र ऐसा काम करने वाला सूरज की किरण ऐसा काम करने वाले को सनातन धर्म कहते हैं अर्थ सूर्य के आधार पर चलने वाले और किरणों ऐसे काम करने वाले ही को सनातन धर्म कहते हैं और चलने वाले को सनातन धरमी कहते हैं।

सन या सूरज के आधार पर और बहुत से शब्द आये हुये हैं जैसे सन्ध्या संजोग संयोग सन्नाटा सुनशान शमशान सन्यासी संस्कृण-संस्कृण भाषा संस्करण साधन वगैरा बहुत से सारे शब्द सन के ऊपर आये हुये हैं।

सन्ध्या सनजोग सन्यासी शब्द के अर्थ सूरज परब्रह्म से सन्धी करना उससे मेल रखना उससे अपना प्रेम का तार या करंट जोड़ने के हैं सनहाटा अर्थ सूरज बहुत गर्म है सुन है अर्थ गोल है और शान वाला है अर्थ सब से बड़ा है।

शमशान अर्थ उसकी शान सदा सम या बराबर है।

सन्यासी—सूरज की आस करने वाला या याद करनेवाला पूजने वाला

साधन अर्थ सूरज बहुत धन है अच्छा है अथ सूरज को साधो

संस्कृण भाषा प्राचीन है सूरज ही भगवान के नाम पर और कृणों के आधार पर इस भाषा को परब्रह्म पुजने वाले विद्वानों ने नाम रक्खा है कि यह भाषा सबके लिये एकसार हो।

संस्कृत शब्द के अर्थ यह शब्द सूरज की किरण से बनाया

गया है इस शब्द का असली रूप संस्कृण संकृण है संस अर्थ अच्छाई के हैं कृण अर्थ कृण अर्थ (अच्छी किरण) दुसरा अर्थ सन अर्थ सूरज कृण अर्थ कृण अर्थ सनकृण शब्द बना उसके बाद बिगड़कर संस्कृत बन गया कृत अर्थ सब को कृतार्थ करनेवाला सब को बराबर सींचनेवाला कृण भी सबको बराबर सींचती है ऊँची नीची भूमि को नहीं देखती है तीसरा अर्थ सूरज की कृणों से जो शरीर के अन्दर रगड़ से आवाज पैदा होती है या अक्षर बनता है उसी के कारण से इसको संस्कृण भाशा कहते हैं अर्थात जिस भाषा में कृणों की प्रशंसा हो। सन अर्थ सुन्न सून्य अर्थ बिन्दी सिफ़र जिसकी जगह कायम हो परन्तु लम्बाई चौड़ाई नहीं परन्तु गोल हो इसी कारण से इसका नाम सुन्न से सन रक्खा गया है सुन्न अर्थ शीतलता के भी है परन्तु रगड़ से गर्म है अर्थ बहुत सख्त है अर्थ सब से बड़ा है।

प्रमत रा शब्द के अर्थ सब से प्यारा प्रेमपरा अर्थ बहुत दूर वाला या सब से परे वाला (प्रब्रह्म)

धरम शब्द के अर्थ भगती माता पुत्र का धर्म अर्थ पुत्र को माता की आज्ञा मानना आकाशी मार्ग में ध्रुव सितारे से संबंध है परम अर्थ (पितह) पितह पुत्र सम्बन्ध अर्थ पुत्र को पिता की आज्ञा मानना आधार सूरज भगवान से सम्बन्ध है

कर्म अर्थ (कृण) अर्थ पुत्र का पुत्र अर्थ पुत्र का पुत्र को आज्ञा मानना आधार किरण से सम्बन्ध है पूर्व जन्म शब्द के अर्थ आकाशी जन्त्र के हिसाब से सूरज की किरण अर्थ सूरज से पहिले जन्म किरण का हुआ पूर्व अर्थ (सूरज) जन्म अर्थ (किरण) अर्थ पहिले सूरज रोज सवेरे नित्य निकलता है अर्थ रोज प्रातःकाल पूर्व में निकलता है इसी कारण से बहुत से विद्वानों ने सूरज ही को पूर्व जन्म माना है दूसरा अर्थ कृण

सूरज से पैदा होती हैं और हम को सो उठकर पहिले प्रकाश या किरणों ही के दर्शन होते हैं इसीलिये बहुत सारे विद्वानों ने किरण ही को पूर्वजन्म कहा है और इसी किरणों ही को बड़ा माना और पूजा और इसी को पूर्व अर्थ पिता सब का माना है इसी कारण से सूरज भगवान को पूर्व जन्म और किरण को पुन्हर जन्म कहा है अर्थ (पितह और पुत्र) पृथ्वी मार्ग किरण (पितह) पृथ्वी और तारे (पुत्र) अर्थ (किरण) पूर्व जन्म।

पुन्हर जन्म शब्द का असली रूप, पुनिहर जन्म अर्थ पुनि-पुनि हर जन्म। अर्थ फिर फिर या बार बार जन्म लेना, अर्थ पीले से हरा और हरा से पीला होना जैसे (बीज भगवान) हरे से पीला और पीले से हरा होता है। पृथ्वी के अन्दर या गर्भ में बीज पीला और पृथ्वी से बाहर हरा रङ्ग का पेड़ हो जाता है और फिर पेड़ से बीज बनकर पृथ्वी में हो जाता है। शारीरिक मार्ग से पितह (पूर्व) पुत्र पुन्हर जन्म हुआ, पुन्हर जन्म को अन्तह कृण या अन्तह करण कहते हैं।..................
अन्तह करण के अर्थ आखिरी कृण (पुत्र) अर्थ (सन्तान) इसी को हरिहर महादेव भी कहते हैं अर्थ सब से बड़ा देव जो हरे से पीला और पीले से हरा होता रहता है। कृण को रेखा भी कहते हैं। जैसे कर्म की रेखा यह बात बहुत प्रसिद्ध है कि कर्म की रेखा नहीं मिटती। कर्म की रेखा शब्द के अर्थ सूरज की रेखा अर्थ (कृण) इसी रेखा को आत्मा या आतिमा कहते हैं। पृथ्वी मार्ग पर पुत्र को आत्मा कहते हैं।

जीव आत्मा शब्द के अर्थ मैल और आत्मा के सम्बन्ध को कहते हैं। जीव शब्द के अर्थ (शरीर-गन्ध) शरीर आत्मा या वायु या कृण का मैल है फेन या गन्ध है। इसी कारण से

शरीर जो कुछ अच्छा बुरा दुनिया के ख्याल से करता है वह शरीर ही भोगता है आत्मा नहीं। गन्ध को गन्दा ही ग्रहण करता है और गंदा ही गन्ध के बोझ को उठाता है। मिसाल पाप के बोझ को पापी और चोर चोरी की सजा को चोर ही भोगता है आत्मा नहीं या शाह नहीं, जीव ही शब्द से जंम्यो शब्द बना, जंम्यो से जनेऊ या जनेयु शब्द बना। जम्यो शब्द के अर्थ गंदगी से गंदगी पैदा होना, अर्थ शरीर से शरीर पैदा होने को जंम्यो कहते हैं अर्थ सूरज का जन्म कृण हुवा, और शरीर का (पुत्र) कर्म शब्द के अर्थ कर के अर्थ कृण, अर्थ (पितह) म अर्थ माता सितारह (ध्रुव) अर्थात माता-पिता कर्म अर्थ हुवा। अर्थ माता पिता की सेवा, दूसरा अर्थ क अर्थ (कृण) अर्थ (सूरज) म अर्थ (माता) अर्थ माता पिता का कर्म पुत्र है।

(करन करावन आपा। के अर्थ जो कुछ करता हूं मैं करता हूं, करन शब्द के अर्थ (करने वाला) करावन के अर्थ (कराने वाला) आपा के अर्थ खुद अर्थ पितह आ के अर्थ आने वाला, पा के अर्थ खुद (आने वाला) पैदा होने वाला के अर्थ (शरीर) जीव, मल, गंदगी, करन करावन आपा अर्थ निकला कि जो कुछ करता है सब माता पिता करता है पुत्र नहीं करता है। माता पिता गुरू जो कुछ गर्भ या गर्भ से बाहर शिक्षा देवेंगे, वही हम करते हैं। वह नहीं करता है वह तो अच्छा ही करता है। अ शब्द के अर्थ अन्दर, आ के अर्थ बाहर से है और यहां पर मैं के अर्थ शरीर से है। ....

साधू शब्द के अक्षर सूरज और ध्रुव से लिया गया है। सा से सूरज, ध से ध्रुव सा विज्ञान है और ध भगती है अर्थ विज्ञान के बाद भगती आती है अर्थ भगती से वैराग्य और

विज्ञान मिट जाता है। सा पुरुषलिंग, धव स्त्रीलिंग है अर्थात साधू के मतलब दोनों को पूजना। अथ विना स्त्री के भगती नहीं। दुनिया में जितने जीव हैं सभी साधू हैं।.....................

व्याकरण शब्द के अर्थ शुद्ध रूप व्यकृण शब्द है इससे बिगड़ कर व्याकृण या व्याकिरण इसके बाद व्याकण शब्द बना, व्यकृण के अर्थ कृणों का जमा खर्च सही रखना है। कृ शब्द रगड़ से बना है, अर्थ सूरज में रगड़ से कृण, शरीर में कृण रगड़ने से शब्द बनता है इधर अक्षरों को तरकीब से रखने को व्याकरण कहते हैं। उधर कृणों को कृणों में तरतीबवार जोड़ने को व्यकृण कहते हैं। औलाद को भी अच्छी चलन पर चलाने को भी व्याकरण कहते हैं

करण चमक को भी कहते हैं अर्थ दो के रगड़ से जो चमक पैदा होती है उसको लाइनवार जोड़ने को भी व्याकरण कहते हैं जैसे वायरलेस का तार, बिजली का करंट।.....................
सब वस्तुओं को तरकीब से मिलाने को या सब जीवों को शुद्ध रूप से अपने में मिलाने को भी व्याकरण कहते हैं। किरण अर्थ सब जीवों से भी है। सुन्न या सिफर या जीरो का अर्थ जिसकी जगह मुकर्रर या कायम हो, परन्तु लम्बाई चौड़ाई मुटाई न हो, अर्थ गोल हो इसी सुन्नो को तरकीब से एक लाईन में बहुत सारे रखने से एक लकीर बन जाती है और उसमें लम्बाई आ जाती है जिसको रेखा कहते हैं और इसी रेखाओं को बराबर तरतीबवार बहुत सारी रखने से चौड़ाई बन जाती है और बहुत सारी इकट्ठा एक रस्सी में बांधने से लम्बाई गोलाई मुटाई बन जाती है। इसी तरह से सुन्न से रेखा रेखा से लम्बाई चोड़ाई मुटाई बन जाती है इस तरकीब को भी व्याकरण कहते हैं। अर्थ सूरज से कृण, कृण से सृष्टि बनती है

अर्थ किरणों को इकट्ठा जमा करने से जीव बन जाता है। अर्थात सूरज से किरण, किरण के गाढ़ी होने से वायु वायु के जमने से जल या पानी, पानी के जमने से मिट्टी, मिट्टी से जीव बनता है। यही पांचों तत्व हुये और यही पांचों देवता हुए। इसी को पांचों उङ्गलियां भी कहते हैं। अर्थ करके पांच अर्थ या उसके मेम्बर प्रब्रह्म के पांच अर्थ हैं और ब्रह्म के तीन अर्थ हैं।

यही कणें जब सूरज से चलती हैं तो चलते चलते जहां इनको रुकने की जगह मिल जाती है या कणों का झुंड या गुच्छा मिल जाता है तो यह वहीं उनसे लिपट जाती हैं या लिपटने की कोशिश करती हैं और अपने झुंड ही को बढ़ाने की अभिलाषा रखती हैं जैसे पानी पानी के खजाने ही के तरफ जाने की कोशिश करता है और जाता है। मिसाल पृथ्वी किरनोंही के झुंड से बनी है जब किरणें सूरज से चलती हैं तो पृथ्वी पर आकर रुकती हैं और यहीं वह गाढ़ी होकर जमने की कोशिश करती हैं। वायु और जल कणों का ज्यादा गाढ़ापन है और मिट्टी उससे भी ज्यादा गाढ़ेपन में है। जब यह मिट्टी के रूप में या और किसी रूप में बन जाती है तो यही रूप इसी किरणों के जंगल या कणों के समुद्र में तैरती फिरती हैं और तैरने ही की वजह से हमको वायु या किरनों का धक्का लगता है और वायु के चलने की वजह मालूम पड़ती है।

एक मोटा मिसाल है—मन के चलते हुए में मन को कुछ भी नहीं दीखता है चलते चलते जहां मन रुक जाता है वही उस को दीखने लग जाता है इसी तरह से जब किरनें सूरज से चलती हैं तो नहीं दीखती हैं और जहां किसी चीज या वस्तु से टकरा जाती है या वह रुक जाती है वहीं वह देख पड़ने जाती है अर्थ शाकार रूप में हो जाती है जैसे मनुष्य की

निगाह या आंख की रोशनी जब आकाश में दौड़ती है तो उसको दौड़ते हुए कुछ नहीं दीखता है और जहां कहीं किसी वस्तु या तारों सितारों पर टकरा जाती है या वहां रुक जाती है तो उसको देख पड़ने लग जाता है और खुद भी देख पड़ती हैं बुढ़ापे में जब आंखों की रोशनी कम हो जाती है और ऐनक लगानी पड़ती है तो नजदीकी ऐनक से दूर की वस्तु नहीं देख पड़ती है जब कोई कागज या और कोई चीज आगे रखलो तो निगाह वहीं ठहर जाती है उसको देख पड़ने लग जाता है और खुद भी दीखने लग जाती है अर्थात वगैर किसी चीज के रोक से कोई वस्तु नहीं दीखती है किरणें जब सूरज से चलती हैं तो जहाँ रोक होती है वहीं वह गाढ़ी होकर देख पड़ने लग जाती हैं बहुत से जीव गरीबता के कारण गुस्से में सूरज भगवान या परब्रह्म को अन्धा बता देते कि वह अन्धा है उनको कुछ भी नहीं दीखता है उनके आंखें नहीं हैं। देने लग जाते हैं तो देते ही चले जाते हैं अर्थात सब को बराबर ही लुटाते ही जाते हैं उनको अच्छे बुरे की पहचान ही नहीं कि किस को देना चाहिये और किसको न देना चाहिये। सूरज की किरणें जहां ही रुक जाती हैं वहीं की वस्तु सूरज भगवान को दीखने लग जाती हैं और वहीं बिला रोक टोक बरसने लग जाती है ऊँची नीची सभी भूमि को सैराब कर देती हैं जैसे मेंह बरसते समय सब को ही जल से भर देता है ऊँच नीच का विचार करता ही नहीं। मोटी मिसाल है कि मन कहां तक जाता है जहां तक उसकी दौड़ हो जब मन दौड़ेगा ही नहीं तो स्थिर हो जाता है और वहीं कायम हो जाता है समाधि में मन एक जगह हो जाता है दौड़ता नहीं इसी से उसको सब कुछ दीखता है।

आकाश शब्द के अर्थ जिसमें चमक हो—आ अर्थ (है) काश अर्थ चमक जिसमें हो (परब्रह्म) या (सूरज) अकाश

शब्द के अर्थ जिसमें चमक न हो–अ अर्थ (नहीं) काश अर्थ चमक जिसमें न हो अर्थ (ब्रह्म) या (नील भगवान) क्यकुरणों ही के शब्द से साधु-महात्मा वैद्य डाक्टरों ने यह अर्थ निकाला है कि किरणों ही को जगन से वरतो साधू सन्त महात्मा योगी पुरुष इसी किरणों ही को ज्यादातर पूजते हैं और वा चिरंजीव रहते हैं। सरोज शब्द बनने का कारण सन या सूरज से जो किरण या जल पृथ्वी पर पड़ता है उसको सरयुजल या सरजू जल कहते हैं सरयु अर्थ प्रेम अर्थ (सूरज की किरण) अर्थ जो जल आंखों से निकलता है उसको सर्ज या सरजू जल कहते हैं इसी से सरजू के समुद्र में सूरज कमल का फूल है पृथ्वी ध्रुव वगैरा पीले रङ्ग का सरोज का फूल है। सूरज नीले रङ्ग का सरोजहै मनुष्य और जीव छोटे छोटे रङ्ग बिरंगी कमल के फूल प्रेम सागर में खिले हुए हैं। सूरज सरोजहै ध्रुव सरोजनी पृथ्वी सरोजी अर्थ ध्रुव की दासी है पृथ्वी के जीव दासी पुत्र दासी अर्थ भगती से हैं दास अर्थ भक्तसे है।

सरोज या सूरज सर्ज या सर्च है अर्थ करण का फूल है अर्थ करन या करण फूल है इसी कारण से इसका नाम किरणों के अन्दर चमकने वाला नीले रङ्ग का कमल का फूल रक्खा है अर्थात किरणों ने अपने पितह को अपने गाव के बीच में बिठलाकर सबसे शोभण माना और अपना सब से बड़ा पूज्य फूल माना है इसी किरण जल को सरजू जल या आंसू जल भी कहते हैं। यह आंसू जल आकाश में अवध के किनारे बहता है इधर शरीर में भी अवध के किनारे रहता है पृथ्वी पर अयोध्या के (किनारे) श्री मर्यादा पुरुषोत्तम परब्रह्म श्री रामचन्द्र जी के पास सरजू नदी बहती है। अयोध्या में परब्रह्म का औतार होने के कारण से ही इस जल का नाम सरयु रक्खा है। यह जल ऊपर सूरज भगवान के नेत्रों से बरसता

है इधर भी आंखों से प्रेम के वस होकर निकलता है। अथ दोनों ही से हर एक वस्तु और सृष्टियां उत्पन्न होती हैं उधर किरण हम सभी के प्रेम का तार है इधर आंसू शरीर का प्रेम है आकाशमें सूरज भगवान परब्रह्म है इधर बीज भगवान ब्रह्म है औतारों में श्री रामचन्द्र जी हैं दोनों ही अवध हैं और दोनों ही निर्म्मल हैं आकाश में किरण सर्वज्ञ है पृथ्वी पर बीज भगवान या ब्रह्म सर्व व्यापक है और अविनाशी है इधर भी यह जल अवध से प्रेम के वस होकर निकलता है उधर भी हम सभी के प्रेम के वस सूरज से प्रगट होता है इसी सरयु जल को या आंसू जल को आत्मा भी कहते हैं सूरज एक किरण सर्वज्ञ है बीज भगवान सर्व व्यापक है।

सूरज की किरण को सूरज जल कहते हैं और इसके शाख को गंगाजल कहते हैं जल के अर्थ सूरज के हैं गंगा अथ कृष्ण के शाख को कहते हैं।

सूरज भगवान एक नीले रङ्ग का बहुत साफ निर्मल सूक्ष्म गोल मणी है। जब हम सबों के प्रेम का तार या करन्ट हम सब के चलने फिरने से उसमें जब रगड़ खाता है तो उसमें बिजली जैसी चमक पैदा होती है वही सूरज की सुनहरे रंग की गोलाकार चमक है वही साकार रूप किरण भी बनती है इसी बात को समझकर आजकल के विद्वान पुरुष जन्त्र के जरिये से बिजली बायरलेस का तार बनाया है। हम सबों का सब से बड़ा बिजुली का खम्ब, (सूरज भगवान है)

बिजली-वायु-बाद

बाद शब्द फार्सी वायु शब्द हिन्दी विजुली संस्कृत अर्थ संस्कृत और अंग्रेजी शब्द है यह तीनों के अर्थ एक हैं जिसको

ठेठ हिन्दी में जल प्रवाह वायु यः पूर्वी हवा कहते हैं जिसके कारण से पृथ्वी चलती है यहां तक कि सभी तारे सितारे चलते हैं बिजुली और किरण एक वस्तु है इसको सर्वज्ञकहते हैं। बिजुली का नाम वेद में बिजुली नाम अग्नी करके प्रसिद्ध है जो आजकल इसी नाम से उच्चारण किया है।

राम

राम शब्द के अर्थ र सूरज आ पृथ्वी म ध्रुव से अर्थ है दूसरा अर्थ र अर्थ पिता आ अर्थ पृथ्वी म अर्थ माता से है अर्थ माता पिता पुत्र के प्रेम को राम कहते हैं। तीसरा अर्थ सूरज अर्थ पिता ध्रुव अर्थ माता पृथ्वी अर्थ पुत्र अर्थात जहां माता पिता पुत्र तीनों का आपस में प्रेम हो वहीं राम वास करते हैं अर्थात् उसी प्रेम को राम कहते हैं अर्थ आकाशी मार्ग में तीनों सितारों के अर्थ को राम कहते हैं राम की महिमा को जानकर अन्य देश वाले भी अपने मुल्क के राजधानियों के नाम भी इसके आधार पर उनका नाम रक्खा है जैसे राम या रोम रूम रूमानिया वगैरा और वहां के भाषाओं के नाम भी राम ही के ऊपर रक्खे हैं जैसे रोमन भाषा और वहां के पुजारियों को पापाय राम या पायाये राम रक्खा है और कहते हैं अर्थ सब से बड़ा पिता राम है सूरज और ध्रुव के प्रेम से पृथ्वी पैदा हुई और पृथ्वी से श्री रामचन्द्र जी उत्पन्न हुये अर्थ राम तीनों सितारों के किरण से बने हैं अर्थ तीनों के प्रेम से बने हैं इसी कारण से राम को सब से बड़ा और परब्रह्म कहते हैं।

स्याराम या सियाराम शब्द के अर्थ में पहिले सूर्य का

अच्छर र ध्रुव से और स माता अर्थ उमा का लिया गया है जब सियाराम बना।

राधेश्याम में रा और ध ध्रुव से स और य सूर्य से म स्थान वृक्ष से लिया गया है तब राधेश्याम शब्द बना।

शिव नाम में स सूरज से व ध्रुव से लिया गया है अथ दोनों के कृष्ण।

उमा शब्द के अर्थ उम गर्भ के अन्दर का शब्द है आ बाहर का है अर्थ पीला हरा अर्थ हरि-हर दूसरा अर्थ उ पिता म माता आ पुत्र तीनों के अर्थ को उमा कहते हैं। ध्रुव को श्रोमणी कहते हैं। श्रोमणी स्त्रीलिंग और श्रोमणि पुर्लिंग शब्द है श्री के मस्तक के अन्दर सर या श्र है और सर के अन्दर श्री है अर्थ ध्रुव सितारा श्री है और सूरज सर है।

१—जंगल शब्द के अर्थ जन+गल जन अर्थ जन्म ने वाला अथ जीव+गल अर्थ रास्ता, अर्थ गली जीवों के गली का रहने वाला, पैदा होने वालों के बीच का रहने वाला अर्थात जन्मने वालों का जंगल या झुंड या गिरोह।

२—जन अर्थ जीव+गली अर्थ प्रेम अर्थ प्रेम की गली का जीव अर्थात माता पिता के प्रेम के गली का रहने वाला अर्थ जंगली।

३—जंग अर्थ गरोह झुंड+आल अर्थ कीचड़ कुलेल झूम अर्थ किरनों के जंगल में आल या कुलेल करने वाला अर्थ जीव अर्थात किरणों के बीच में रहने वाला अर्थ जंगली।

४—ब्रह्म को भी जंगल संस्कृत भाषा में बोलते हैं क्योंकि वह सब जीवों के जोड़ या मजमुये से बनता है और सब जीवों के बीच में रहता है इस कारण से वह भी जंगली है। यह शब्द बहुत हाई किलास का अर्थ या बहुत गूढ़ अर्थ रखता है और ब्रह्म से सम्बन्ध है। इस शब्द का हम सब बहुत मूर्खता अर्थ

ख्याल करते हैं परन्तु मूर्खता अर्थ नहीं है बहुत बड़ा अर्थ है अर्थ छोटा ही अर्थ बहुत बड़ा बनता है।

शुद्रय शब्द का अर्थ सूरज की (कृणें) अर्श (आकाश) अर्थ सूरज के कृणों के झरने की जगह अर्थात् सूरज की कृणें आकाशी छेद्रय से बरसाती रहती हैं उनको ऊंच नीच का ज्ञान नहीं है यही शुद्रय है बालक भी शूद्र है ईश्वर भी शूद्र है।

ध्रुवु के अर्थ ध र अच्छर धरण से लिया गया है वु अच्छर अक्षर जब र धरण पर बैठता है या चलता है तो उस समय मंख से जो अक्षर या शब्द वु या उ या उह या उफ का शब्द निकलता है। इसी शब्द से वु लिया गया है तब ध्रुवु शब्द बना है।

धरण या धरन के अर्थ पुल्ह ब्रृज या एक वस्तु को दूसरे वस्तु को मिलाने वाले को कहते हैं अथ गाड़ी के दो पहियों को मिलाने वाला लट्ठा या लकड़ी अर्थ पृथ्वी और ध्रुवु सितारे को मिलाने वाला लट्ठा या पुल्ह या कृण है।

दूसरा अर्थ दो रास्तों को मिलाने वाला, एक कुवां से दूसरे कुवां में पहुंचाने वाला मार्ग, ब्रह्म के जाने का मार्ग को भी धरन कहते हैं। कुयें पर जो बीच में पानी भरने के लिए लकड़ी रक्खी जाती है उसको भी धरन बोलते हैं मन जिस रास्ते से सूरज या और सितारों में जाता है, उस रास्ते को भी धरन कहते हैं। स्त्री पुरुष के प्रेम को भी धरन बोलते हैं। अर्थ जितनी कृणें हम सबों को सूरज और ध्रुवु सितारे से मिलाती हैं सब धरन ही धरन हैं। स्त्री के शरीर में भी धरन है योगी पुरुष इस धरण के अर्थ को आसानी से समझ जावेंगे। पृथ्वी शब्द के अर्थ सातों सितारों के साये के तह या प्रत से बनती है इसी कारण से इसका नाम पृथ्वी रक्खा। शरीर भी सात

पर्त चमड़े से बनती है अर्थात सातों दिनों के तह से बनती है ।

श्री रामचन्द्र जी के नाम रखने का कारण श्री शब्द ध्रुव सितारह अर्थ उमा या माता से, राम शब्द ध्रुव और सूर्य के किरनों के आपस में रगड़ से जो वस्तु उत्पन्न हो अर्थ पृथ्वी साकार रूप से है। चन्द्र शब्द चांद से अर्थ शीतलता से लिया गया है। तब विद्वान ने श्री रामचन्द्र नाम रक्खा है अर्थात सूरज ध्रुव और पृथ्वी को पूरे तौर से याद करने वाले या उन को पूजने वाले या उनके आधर पर चलने वाले और काम करने वाले थे अर्थ पूरे तौर से सनातन धर्म को मानते थे और सनातन धर्म ही के आधार पर या उसके रीति या कानून के अन्दर या उसके अनुसार चलते और काम करते थे। जो राजा या मुनुष जीव सूरज और कृष्णों के आधार पर काम करता है वही सनातन धर्मी है और सन या सूर्य के पूजने वाले राजा चक्रवर्ती राजा बनते हैं। पहिले के पंडित और विद्वान जीव किसी का नाम जब रखते थे तब तक कि उसका गुण और बल और उसके आगे का हाल और प्राकर्म न मालूम कर ले जब तक उसका नाम नहीं रखते थे और जब मालूम हो जाता था तो उसका नाम गुण के अनुसार और गुण वाले देवता या सितारे का आधार और उसका नाम मिलाकर रखते थे।

अंजन पुत्र पवन सुतनामा के अर्थ अंजन के पुत्र शाकार रूप में पवन सुत अर्थ वायु के पुत्र निराकार रूप में ।

अर्थ अंजनी माता पवन पिता, पवन या वायु अर्थ कृष्ण के हैं। कृष्ण अर्थ सूरज भगवान का कर, अर्थ शंकर, अर्थ शिव अर्थात अंजनी माता शंकर पिता हुये किरण बाप. अंजन माता हुई, इस कारण से हनोमान जी का नाम अंजन पुत्र पवनसुत नाम पड़ा अर्थात कृष्ण हम सब का पिता है।

सूरज

सूरज शब्द के अर्थ सू अर्थ अच्छा रज अर्थ टुकड़ा, कारण अर्थात सबसे अच्छा कँण, आग का बड़ा गोला, इसी को सुदर्शन चक्र भी कहते हैं। यही सुदर्शन चक्र पृथ्वी के गिर्द घूमता है और इसकी रक्षा करता है इसी के घूमने के मार्ग को जनेऊ कहते हैं सूरज भगवान ही परब्रह्म है सूरज में सब गुण मौजूद हैं सूरज के अन्दर नीला जल परन्तु बहुत सूक्ष्म निर्मल और साफ गर्म है अर्थ जमा हुवा श्याम-मणी है और गोल है उसके गिर्द चमक है वही चमक कृष्ण है। किरण सर्व व्यापक है सूरज एक है रंग नीलाम्बर श्वेत है अर्थात् शान्ति और गर्म है सूरज ही भगवान से पृथ्वी पर सबकी उत्पत्ति होती है और इन्हीं बिबना-स्पतियों के खाने से बीज भगवान बनते हैं अर्थ ब्रह्म की उत्पत्ति होती है ब्रह्म का रूप सूक्ष्म निर्मल नील. जल ऐसा है जब इसमें मैल या जीव मिल जाता है तो उसका रंग श्वेत पीला हो जाता है आकाश में किरण पृथ्वी पर बीज सर्वज्ञ है किरण से बीज पैदा होता है और किरण (सूरज परब्रह्म) से पैदा होती है इस कारण से ब्रह्म का सब से बड़ा स्थान सूरज है। नीले श्वेत रंग पर सब रंग चढ़ जाता है अर्थ सूरज भगवान पर सब रंग चढ़ जाता है परन्तु उसमें हर एक रंग मिलते ही सूरज ऐसा रंग बन जाता है अर्थ हरएक का कहा मान जाता है जैसे बाल अवस्था में कोई कुछ कहे बच्चा विश्वास कर लेता है अर्थ सबको सत्त या सच मानता है।

किरन अर्थ आंसू से भी है जिससे कि सब की उत्पत्ति होती है। आंसू निमल जल है जब इसमें जीव मिल जाता है तब इसका रङ्ग पीला सफेद रंग और गाढ़ा हो जाता है उधर

वीज या घी भी पीला श्वेत रंग का है अर्थ निर्गुण और सगुण मिलने से अर्थात् विज्ञान और वैराग्य के मिलने से प्रेम अर्थ भगती पैदा हो जाती है। भगती और प्रेम एक है मतलब दो के मिलने से जो तीसरी वस्तु पैदा होती है यह तीसरी वस्तु दोनों को जला देती है और साकार रूप बन जाता है अर्थात् एक ही एक रह जाता है इसी एक ही सूरज परब्रह्म को अंग्रेजी भाषा में सन कहते हैं और इसी को आकाश में सब से ऊचा मानते हैं अर्थ न अक्षर सब से बड़ा है और शरीर में भी सब से ऊँची जगह से निकलता है इस दे. को जो काई पूजता है वह विद्वान बलवान और बहुत बड़ा योगी पुरुष बन जाता है यह सब से बड़ा खुदा या गाड है

अङ्गरेजी शब्द के अर्थ

कृस्थान कृस्तान शब्द (कृण स्थान शब्द) से बिगड़ कर बना है शुद्ध शब्द कृण स्थान है अर्थ (आकाश) (सारा संसार) दूसरा अर्थ कृप स्थान अर्थ कृषी का स्थान अर्थ खेती करने वालों का स्थान अर्थ (सारा संसार)

कृष्ण जन अर्थ कृण जन्म देने वाला अर्थ कृण को पूजने-वाले कृपचन कृपचियन अर्थ सारा संसार कृष्ण को पूजने वाला है कृष्ण जन या कृष्णचियन अर्थ कृष्ण को पूजने वाले

कृष्ण अर्थ किरनों को बोने वाले (खेती) पृथ्वी को जोतकर बीज बोने वाले यह सब कृष जन हैं किशन हैं कृष्ण हैं किशाण अर्थ किसान हैं कृन अर्थ जोत ण अर्थ दौड़ दौड़ अर्थ जोता हुवा आगे को बढ़ताही जावे जिसे देहाती भाषा में कूंड़ को कहते हैं अर्थ जो हल जोतने से लकीर पड़ती है इसी को कूं बोलते हैं

अंग्रेजी शब्द संस्कृत है अर्थ (अंग) अर्थ (तन) रेज अर्थ (टुकड़ा) लोथड़ा अथ तन का टुकड़ा तन अर्थ (सूरज) रेजा अर्थ करण अर्थ सूरज की किरण (रेजा) अर्थ जो रगड़ से पैदा हो थारू रेत का टुकड़ा रेत पत्थर के रगड़ से बनता है उधर किरण भी सूरज से रगड़ से पैदा होती है दूसरा अर्थ अंगार (आग) रेजा अर्थ टुकड़ा अर्थ आग का टुकड़ा सूरज सब से बड़ा अंगार है उसके हम सब टुकड़े हैं अर्थ उनके अंश हैं अर्थ (सूर्य पुत्र) (अंग्रेजी नाम) रेज अर्थ (किरण) के हैं अर्थ किरण या वायु शरीर या तन में जब रगड़ खाती है तो जो शब्द या आवाज पैदा होती है उसको संस्कृत भाषा कहते हैं अंग्रेज ही शब्द को संतन भी कहते हैं अर्थ सन आफ तन अर्थ सूरज का (तन) अर्थ (कृण) (सूरज का पुत्र) (परब्रह्म पुत्र) जितनी वस्तुयें कृणों से उत्पन्न होती हैं सब सन तन हैं इसी को सनातन भी कहते हैं (सन आत्मा) सूरज की आत्मा अर्थ (कृण) सूरज की कृणों ऐसा काम करने को सनातन धर्म कहते हैं।

(सन्त) अर्थ सूरज) (सन्तन) अर्थ (बहु सूरज) अर्थ सूरज पुत्र अर्थ (कृण) अर्थ सारा संसार सनातन है इसी अर्थ से अंगरेजों ने अपने को कृष्चन या कृष्चीयन या कृषीश्चन लिखा है अर्थात (कृष्ण जन) कृष्ण को मानने वाले या कृष्ण जन को पूजने वाले हैं अर्थ जितनी वस्तुयें कृण से पैदा होती हैं सभी को पूजता हूँ।

"भाषण"

भाषण शब्द भास्करायन से बना है। "भास्कराय नमः" गायत्री का एक मन्त्र है जो कि सूरज भगवान को प्रसन्न करने

के लिये जप करते हैं सूरज सब दोषों को भस्म करने वाला है। इसी से भाषणपा भशम् करने वाला शब्द बना। भाषण शब्द के अर्थ भस्म करनेवाला (भाशन) अर्थ प्रेमी शब्द है, जो कि सब को अपने वश में कर लेता है। अर्थ बड़े बड़े घमंडी और गुस्सेवर को भी प्रेम शब्द शान्त कर देता है।

भाषण—एक तो वह होता है जो अपने लिये, अपने मार्ग पर चलाने के लिये कर्म मार्ग पर दिया जाता है परन्तु भाषण तो वह होता है जोसब ज्योतियों या सब जातियों यासारे संसार के लिये एक सार हो सब के लिये एक हो। किसी को बुरा न मालूम हो और सब के लिये अनुचित न हो। सूरज एक है सब को एक सार रोशनी देता है जैसे शब्द प्रसन्न

"शब्द ब्रह्म के अर्थ"

अपने में वह शक्ति ब्रह्म दूसरे में वह शक्ति प्रब्रह्म सब में वह शक्ति अपार ब्रह्म अर्थ सर्व व्यापक अविनाशी (बीज भगवान) नाम है।

बिन्दू

सुन्न या जीरो या सिफर में लम्बाई चौड़ाई और मुटाई विद्वानों ने नहीं माना है परन्तु उसकी जगह जरूर कायम मानते हैं जब मानते हैं तो उसमें जरूर कुछ न कुछ है मान लिया जावे कि वह बिन्दु नहीं दीखता न वह दुर्बीन से दीखता है और न वह खुर्दबीन से परन्तु ध्यान से देखने से आंख से जरूर देख पड़ता है दीखने के बहुत सारे कारण हैं पहिला तो यह है कि अगर कायम है तो बहुत सारे कायम कायम को एक सीधी लाइन में रखने से एक लम्बी अर्थ रेखा बन जाती

है अर्थात बहुत सारे सुन्नों को एक सीध में एक दूसरे से मिलता हुआ बराबर तरतीब वार रखने से जरूर लम्बाई या रेखा बन जाती है विन्दू ही के कारण से रेखा में चौड़ाई और मुटाई नहीं हैं परन्तु लम्बाई है और इसी बहुत सारी रेखाओं को या दस बीस तीस ही रेखा को एक दूसरे से मिला कर बराबर रखने से चौड़ाई बन जाती है अब इसमें लम्बाई चौड़ाई आगई मगर मुटाई नहीं आई अब इसी चटाई को लपेट लो या बन्डल बांध लो या बहुत सारी रेखाओं को एकट्ठा करके झाड़ू की तरह बन्डल बांधलो तो इसमें लम्बाई चौड़ाई मुटाई या गुलाई आजाती है अर्थ तीनों चीज इसी विन्दु से बन गई अगर इसमें लम्बाई चौड़ाई गोलाई नहीं है तो यह तीनों चीज नहीं बन सकती हैं। अर्थात् किसी सृष्टी की उत्पत्ति ही नहीं हो सकती है अर्थ कोई संसार की वस्तु ही नहीं पैदा हो सकती है क्योंकि विन्दु ही से हर एक सृष्टी या ब्रह्मडों की उत्पत्ति होती है अगर नहीं है तो ईश्वर ही नहीं है और अगर है तो सब कुछ है विन्दु ईश्वर ही को कहते हैं इसी से सब की पैदायश है जिनको यह विन्दू दिखाता है वह तो लिखते हैं कि कायम है और जिन जीवों को नहीं दीखता है वह लिखते हैं कि लम्बाई चौड़ाई मुटाई नहीं है परन्तु स्वप्न में उनको मालूम होता है कि है परन्तु उनको दिखाता नहीं दुसरा कारण यह है कि अगर हम बहुत सारे कायम कायम या विन्दुओं को एक ढेर करता हूँ तो एक ढेर बन जाता है और उसमें भी लम्बाई चौड़ाई मुटाई बन जाती है अर्थ विन्द में कुछ न कुछ करामात मालूम पड़ता है इन विन्दुओं के ढेर ही से हम सब और पृथ्वी चाँद सितारे और सृष्टियां बनती हैं और इसमें कुछ करामात नहीं है या आकर नहीं है तो यह सब ढेर बनता नहीं है।

तीसरा कारण जब हम आकाश की तरफ देखते हैं या

निगाह दौड़ाते हैं तो आकाश के बीच में जो बिन्दुओं का झुण्ड या ढेर चलता फिरता है और दीख पड़ता है अर्थ जब आंख की रोशनी इन बिन्दुओं के झुण्ड पर रुकती है तो मोटे बिन्दु दीखते हैं और जो बहुत बारीक हैं वह नहीं दीखते परन्तु जब निगाह की ताकत आकाश न जाते जाते खाली जगह पर कम हो जाती है या रोशनी थक जाती है तो निगाह थक कर वहीं बैठ जाती है या रुक जाती है तो वही ठहरने वाली जगह का यन मुकाम बन जाता है और जिसकी लम्बाई चौड़ाई मुटाई का पता नहीं लगता है परन्तु जगह मिल जाती है और ना है का है बन जाता है अर्थात् बहुत बड़ा लम्बा चौड़ा मोटा बिन्दु मिल जाता है क्योंकि छोटे बिन्दु तो निगाह को कम रोक पाते हैं उधर इधर निगाह पार कर जाती है और छोटा ही बिन्दु मालूम पड़ता है परन्तु जब बहुत बड़ा सुन्न मिलजाता है तो निगाह इधर उधर नहीं छिटक पाती है तो वहीं निगाह सब रुक जाती है और बिन्दु दीखने लग जाता है अर्थ निगाह उस बड़े बिंदु को नहीं पार कर सकती है और उसका अंदाजा नहीं कर सकती है और जब बहुत बारीक है तो निगाह अपने घेरे में नहीं ले पाती तो भी उसका अंदाजा नहीं होता है सबसे बड़ा बिंदु सूरज है इसी बिंदु से सब बनता है इस बिंदु को निगाह भी नहीं पार करती है। मसल मशहूर है कि बिंदु नहीं है तो न नहीं है अर्थ नाक नहीं है अर्थात् जो कुछ है ना है जैसे (नारायण) (नारायन) अर्थ जो कुछ है ना रायण है अर्थ जो कुछ है सब अर्थ सुन्न है अर्थ सून्य है अर्थ समशान भूमि है अर्थ आकाश शमशान भूमि अर्थ सुन्न है अर्थ सब बराबर भूमि है अर्थ बिन्दू में सब कुछ है। चौथा अर्थ अगर हम बहुत सारी रेखाओं के सिरों को एक पर मिलाता हूं तो मिलने की जगह बिन्दु बन जाता है जगह

और दूसरे सिरों के फैलावे के कारण गोलाई बन जाती है। मोटापन नहीं है मगर इसमें सवाल पैदा होता है कि बगैर बिंदी के रेखा नहीं बनती है तो क्या पहिले रेखा बनी, नहीं पहिले बिन्दु बना, उसके बाद रेखा बनी। क्योंकर, जब हम रेखा या लकीर खीचेंगे तो जहां से शुरू किया वह सुन्न ही हुआ और जहां खतम हुआ वहां भी बिन्दी अर्थ शुरू और आखिर में बिन्दू है बीच में लम्बाई हुई। अर्थ पहिले बिन्दू ही कायम करना पड़ता है आकाशी मार्ग में पहिले ध्रुव ही को बिन्दी माना जाता है जब नक्शे बनाये जाते हैं। उत्पती का सूरज या सन या सुन्न बिन्दू माना गया है इसी से सब रेखायें बनती हैं और इन्हीं रेखाओं से लम्बाई चौड़ाई गोलाई बनती है हम सब मोटी रेखा हैं पृथ्वी और तारे सितारे मोटे गोल बिन्दू हैं यह सब इसी बड़े सूरज गोल बिन्दू से बनते हैं (सूरज बिन्दू) उसकी (कृण) रेखा, रेखाओं का फैलाव गोलाई, उनका आपस में मेल या झुंड से लम्बाई चौड़ाई मुटाई बनती हैं अर्थ किरनों के जमाव से ही मुटाई चौड़ाई बनती है और बिन्दू से लम्बाई बनती है। सूरज ही से सब रेखायें निकलती हैं और वहीं सब जाकर मिलती भी हैं।

सब से बड़ा सुन्न सूरज भगवान है सूरज से जब किरणें पैदा होती हैं तो सूरज के पास कृणों की ज्यादती या घनाई के कारण वहां चमक मालूम होती है वही चमक सूरज में गो-लाई मालूम होती है परन्तु उसमें गुलाई नहीं है। जब यह कृणें दूर चलती हैं और उनका फैलाव ज्यादा हो जाता है तो बारीकी की वजह से नहीं दीखती हैं और निराकार रूप बन जाता है और फलाव और जमाव के कारण ही से मुटाई चौड़ाई लम्बाई सब बन जाती है और बिन्दु की करामात या पोल छिपा हुआ सब खुल जाता है कि ईश्वर किसे कहते हैं और है और ना का

हाल प्रगट हो जाता है अर्थ शाकार के मानने वाले तो कहते हैं कि विन्दु में सव कुछ है और निराकार के मानने वाले कहते हैं कि विन्दू की जगह कायम है परन्तु लम्बाई चौड़ाई मुटाई नहीं है।

हमारे ख्याल में सव कुछ है सन शब्द के अर्थ स अच्छर साकार न अच्छर निराकार से सम्बन्ध है अर्थ सूरज निराकार और शाकार दोनों हैं वीच का हिस्सा निराकार, गुलाई की चमक शाकार है अर्थ नृणगुण सगुण है।

(एक मोटी मिसाल)

एक लकड़ी का लट्ठा ले लो और उसको आरे से वारीक वारीक लम्वी लम्वी कड़ियां चिर्वा डालो, तो यह कड़ियां सव रेखा वन जायंगी और इसी कड़ियों को वहुत छोटे छोटे गोल टुकड़े या गिट्टक काट लो तो विंदू वन जायगा। इन्हीं गोल गिट्टकों को इकट्ठा कर लो तो ढेर वन गया, अर्थ यह निकला कि विंदुओ के ढेर से ही सव कुछ वनता है यह तो आकाशी मार्ग से अर्थ हुआ अर्थ विज्ञान से हुआ। अव लीजिये पृथ्वी या प्रेम मार्ग से पृथ्वी मार्ग से, विन्दू या अविनाशी या ब्रह्म या वीज को कहते हैं इसके जोड़ या मेल या इसके जमा करने ही से शरीर वनती है।

(एक दृष्टि)

सीढ़ी या जीने पर दो ही तरह से चढ़ सकते हैं या तो ऊपर से नीचे उतरें तो हाल मालूम होगा या नीचे से ऊपर चढ़ें तो वीच का हाल मालूम होगा। अर्थ विन्दू से शरीर और शरीर के छिद कान या फूंक ताप के वाद (विंदू) अर्थात विंदू

का विंदू ही रह जाता है। अर्थ ईश्वर ही ईश्वर रह जाता है।

शाकार के मानने वाले तो कहते हैं कि विंदू में सब कुछ है और निराकार को मानते हैं वह कहते हैं कि विंदू की जगह कायम है परंतु उसमें लम्बाई चौड़ाई मुटाई नहीं है अर्थात जमाव शाकार रूप, छिटकाव और फैलाव निराकार अर्थ वायु और कृण हैं। (सबसे बड़ा सुन्न सूरज है)

शुक्षम से शुक्षम रूप में विंदू का हाल लिखा गया है क्योंकि यह विषय बहुत कठिन है।

रङ्ग बिरङ्गी वस्त्र धारण करने का कारण

सन सर्च लाइट या सूरज की कृणों के रङ्गके अनुसार प्रातः काल सेलेकर दोपहर और संध्या समय तक के वस्त्रों के बनाने और पहिनने का कारण।

बड़े बड़े विद्वान, राजे महाराजे पुजारी जो वस्त्र समय समय के अनुसार पहिनते हैं वह सब सूरज की किरणों के आधार पर बनाये गये हैं। प्रातः काल सूरज निकलते समय के पहिनने के कपड़े का रङ्ग पैर से लेकर सिर तक के वस्त्र, जूता काला, मौजा मटयाला रङ्ग का, धोती या पतलून भूरे रङ्ग का, कोट हल्का लाल रङ्ग के कपड़े का, उसमें बटन सुनहरे रङ्ग का, गले में मफलर या गुलेबन्द या अंगोछा श्वेत भूरे रंग का, टोपी या पगड़ी या साफा धौले रंग का अर्थात कोई पांच रङ्ग का कोई कोई सात या नौ रंग का वस्त्र धारण करते हैं। अर्थ जब हम प्रातः सो उठकर पूर्व दिशा में सूरज निकलते समय जब निगाह डालते हैं तो पहिले जो रङ्ग कृणों का होता है वह रङ्ग पैर का

इसी तरह जो जो रङ्ग किरणों का सूरज निकलते समय बदलता है उसी रङ्ग के अनुसार कपड़े सवेरे के बनते हैं उसके बाद नौ बजे जो रङ्ग सूरज और कुण बदलता है उस रङ्ग का, दोपहर का श्वेत नीला, तीन बजे का भूरे रङ्ग का, पांच छः बजे भूरे लाल सिलेटी रङ्ग के सूत के कपड़े का, रात्रि के काले रङ्ग का पहिनते हैं और बनवाते हैं। यह तो कपड़े रोजाना या डेली हुए।

हर महीने के महीने वा सूरज के किरनों के रङ्ग के हिसाब से या बारह रासियों के जीवन या रंग के आधार पर और मौसम के रंग के हिसाब से मौसमी वस्त्र जैसे जाड़ों में लाल टोपी गर्मी में टोपी नीली वस्त्र नीला श्वेत्र या नीले रंग का बर्सात में रेशमी रंग के वस्त्र टोपी या पगड़ी खाकी या मटयाले रंग की पहिनते हैं जसे फ़ागन में पीला लाल रंग चैत्र में हरा पीला गर्मी में नीला श्वेत्र चमकदार सूत के कपड़े का वर्सात में रेशमी या मटयाले रंग का क्वार में हरा पीला लाल टोपी या पगड़ी गुलाबी सुर्ख पीले हरे रंग की पहनते हैं और इसी मिले रंग के सूत के कपड़े बुनवाते हैं और सारे विद्वान पुरुष प्रातःकाल के घूमने के वस्त्र पांचुवों तत्त्वों के रंग के अनुसार वस्त्र पहिनते और बनवाते हैं अर्थ उन्होंने सूरज प्रब्रह्म को मनुष्यरूपी मानकर प्रातः उसको सोता हुआ उठाया है और पैर से सर तक जो रंग वह बदलता है वही रंग के कपड़े का रंग प्रातः का माना है और दोपहर को उसको खड़ा माना है और शाम को उसको सोने का समय या सोता हुआ या प्रातह का उलटा माना है अर्थ जो रंग के कपड़े पैर के होते हैं वही सिर के पहिनने के कपड़े का रंग बन जाता है।

दूसरा अर्थ सवेरे से लेकर शाम तक सूरज की किरनें ज्यों

ज्यों नों रंग पृथ्वी के ऊपर के रंग के हिसाब से या आकाश में वायु और नक्षत्रों की किरनें छेदने या उनको क्रास करते समय जो रंग उनका होता है कणें धारण करती हैं उसी रंग के कणों के हिसाब से भी बहुत सारे विद्वान अपना वस्त्र पहिनने के लिए बनवाते हैं और यह भी किरनों के हिसाब से विचारा है कि कौनसे रंग पर कौनसा रंग का कपड़ा पहिनना चाहिये और अगर किसी समय कोई रंग किरनों का तेज हो गया और तेजी के कारण हमको गर्मी लगती है या कोई हानि होती है तो उसको कौनसे रंग का कपड़ा का वस्त्र दबाने के लिए पहिनना चाहिये।

किरनों ही के हिसाब से पुजारियों ने भगवान के मूर्ती को मन्दिरों में जो वस्त्र धारण कराते हैं वह इसी किरनों ही के हिसाब से समय के वस्त्र बनाये गये हैं और रोजाना उनको धारण कराते हैं परन्तु आजकल के बहुत सारे पुजारियों को देखा जाता है कि पूजा करते हैं परन्तु उनका वस्त्र दो दो तीन तीन माह में बदलते हैं भला उनसे पूछा जाय कि भाई आप तो नित्य या रोजाना दिन में चार दफा कपड़ा बदलते हैं तो क्या सारे संसार के सबसे प्रेमी जीव अर्थ भगवान दो दो माह में बदलें उनको तो बहुत साफ कपड़ा और दिन में बीसियों बार और बहुत सारे रंग का वस्त्र पहिनना चाहिये इसी एक एक दो दो माह में भगवान के कपड़े बदलने के कारण ही से हमारे देश की विलक्षण दशा है कम से कम तो भगवानके मूर्ती के वस्त्र दिन में चार बार जरूर बदलना चाहिये यही रंग के कपड़े बच्चा गर्भ में नौ माह अपने खून में पहिनता है।

जेवरात या आभूषण भी किरनों ही के हिसाब से शरीर में पैर से लेकर सर तक के सोने चांदी के जेवरात के किस

किस अंगमें कौन कौन से रंग के जेवर या माला वगैरा पहिनने चाहिये यह सब आभूषण इसी हिसाब से बनाये गये हैं बहुत सारे का नाम भी किरनों ही के ऊपर रक्खे हैं जैसे करणफल ब्रह्मा-विष्णु शिव जी देवताओं के वस्त्र भी किरनों ही के रंग को देख कर बड़े बड़े विद्वान पण्डितों ने मालूम किया है अर्थात् बाल अवस्था तरुण अवस्था वृद्धावस्था के कपड़े सूरज ही के चढ़ाव उतार के हिसाब से बनाया है।

क्रास फूल टोपी या ताज के फूल और कलंगी के लगाने का तरीका कि किस किस तर्फ शरीर में और किस जगह पर लगाना चाहिए और बिल्ला वगैरह कोट पर लगाना और किस रंग का होना चाहिए पृथ्वी के गिर्द नक्षत्रों के घूमने और सूरज के उत्तरायण दक्षिणायन होने के कारण से और सूरज के गिर्द घूमने वाले रंग बिरंगी सितारों के कारण और मौसम के रंग के बदलने के कारण से भी कोट टोपी में रंग बिरंगे फूल क्रास या बिल्ला लगाने का तरीका मालूम हुआ है यह सब विद्वानों ने रंग बिरंगे नक्षत्रों ही को देख कर पृथ्वी या अपने शरीर पर आकाशी जन्त्र को देखकर धारण किया है और बनाया है अर्थात् अपने शरीर को पृथ्वी बनाया है और अपने ही शरीर के इर्द गिर्द सितारों का फूल बनाकर रख दिया है कभी यह सितारे पृथ्वी के गिर्द घूमते घूमते दो तीन एक तरफ हो जाते हैं और दो एक फुट हो जाते हैं इसी कारण से यह फूल शरीर के दायें बायें और बाजुवों पर एक दो या फुट लगाते हैं।

ब्याह शादियों में दूल्हा दुल्हन के वस्त्र हरे पीले रंग के बीज भगवान के आधार पर बनाया गया है अर्थ हरे से पीला होना और पीले से हरा होने के कारण से बनाया है।

रण धारियों के कपड़े आकाशी बिजली के पड़ने के कारण से टोपी या कुल्हा के ऊपर की नोक लोहा या तांवा पीतल की कोट पतलून में ताँवा पीतल या सुनहरे गोटे की बेल गले से लेकर पैर तक लगाते हैं जिससे कि बिजली अगर शरीर पर पड़े तो सिर से इन्हीं तारों के जरिये से पैर में पहुच कर पृथ्वी में समा जावे और शरीर को हानी न पहुंचे इञ्जीनियरों ने मन्दिर मसजिद और बड़ी बड़ी इमारतों में भी कलस से लेकर पृथ्वी के अन्दर तक ताँवे के तार से अर्थ कर देते हैं कि जिससे कि मन्दिर को नुकसान न पहुंचे अर्थात् सब कणों ही के ऊपर आधार है।

संसार का सबसे बड़ा चिराग़ या दिया

सूरज सबसे बड़ा चिराग है जो कि सारे संसार के सब चिरागों को जलाता है और खुद जलता है अर्थात् सब चिरागों में वही तेल भी जलने के लिये डालता है अर्थ सूरज सबसे बड़ा तेल का टंक या सबसे बड़ा तेल का चिराग या दिया है जिसमें से नल या पायप सब छोटे चिरागों में लगा हुआ है और उसी पाइप के जरिये से तेल सब चिरागों में पहुंचता है अर्थ सब दिये बड़े चिराग से ही जलते रहते हैं अब सवाल यह पैदा होता हैं कि वह नल या पाइप कौन से हैं जिससे तेल आता है सूरज भगवान खुद कहते हैं कि यह नल भाई हमारी किरण है जिससे तेल आप सबको मिलता है और आप सब इसी तेल से जलते हैं यह इतना पतला और बारीक पाइप है कि खुर्दबीन से भी नहीं दीखता है।

दूसरा सवाल यह पैदा होता है कि भाई बड़े चिराग में इतना तेल कहां से आता है जो कि कभी ख़तम ही होने को

नहीं आता है और खर्च बराबर करता चला जाता है अर्थ जितना तेल टँक या बड़े तेल के चशमे से आता है और सब चिरागों में जलता है वही तेल धुआँ या भांप बन कर फिर ऊपर को उड़ जाता है और यही भाप या धुआँ ऊपर जाकर साफ होता है और मैल नीचे ही छन्न जाती है या नीचे ही बैठ जाती है और साफ जल या वायु ऊपर सर्द होकर सूरज की तरफ चली जाती है और फिर उस तेल के चशमे में समा जाती है वायु या जल जब ऊपर को जाता है तो उसमें जो मैल या जीव सर्दी के कारण मर जाते हैं या आपस में मिल या जम जाते हैं या अधिक गर्मी के कारण उबल उबल कर बारीक और निर्बल हो जाते हैं और हल्का होकर ऊपर को उड़ जाते हैं या जमने की वजह से भारी और वजनदार हो जाते हैं और भारी होकर पृथ्वी के ऊपर या और सितारों की तरफ गिर पड़ते हैं और निर्मल जल या निर्मल तेल ऊपर को चला जाता है और जल में जल मिल जाता है अर्थ पहिले तो सूरज कृण बाहर को फेंकता है और फिर अपनी तरफ उसी कृण को खींच लेता है जैसे हम स्वांस के जरिये से वायुको अन्दर खींचते हैं और फिर उस वायु को स्वांस के जरिये बाहर निकाल देते हैं यही हाल सूरज की कृणों का है।

सुख से सुख जुदा होता है और फिर सुख को सुख ढूंढते ढूंढते सुख में सुख मिल जाता है प्रेम की वस्तु प्रेम को ढूंढती है अर्थात सब सबसे बड़े ही खजाने को ढूंढते हैं जहां से कि वह चलता है छोटा ढेर बड़े ही ढेर को तलाशता है दर्या समुद्र को तलाशती है समुद्र दर्या को नहीं दूसरा अर्थ जोतिष विद्या वाले विद्वान सूरज भगवान के गिर्द नौ गृह या नौ बड़े नक्षत्र या सितारे घुमाये हैं यही नवों नक्षत्र या सितारे भांप या धुआं को छानने वाले या इस जल या तेल को साफ

करने वाले हैं यही नौ छलनीयां हैं जो कि गन्दे जल या वायु को आकाश में मथ कर शुद्ध कर देते हैं और तेल का तेल में और गन्दगी को गन्दगी में फेंक देते हैं यही आकाश के जल को मथते रहते हैं और घी निकालते रहते हैं घी अपने पूज्य भगवान को खिलाते हैं और गन्दगी आप खाते हैं अर्थात जो कुछ हम करते हैं शरीर ही भोगता है आत्मा नहीं गन्दगी या गन्ध का बोझ गन्दा ही उठाता है अच्छा नहीं चोरी की सजा चोर ही भोगता है दूसरा कोई नहीं करम का फल करने ही वाला उठाता है कर्म नहीं यहां कर्म भगवान या परब्रह्म का नाम है।

मसल मशहूर है करन करावन आपा के अर्थ जो कुछ करता है शरीर करता है आप नहीं या हम नहीं आपा सब्द के अर्थ शरीर ब्रह्मा है साकार रूप है आप शब्द के अर्थ ब्रह्म है यह शब्द गर्भ या समाध के अन्दर का है अर्थ बच्चे का गर्भ में ब्रह्म का नाम लेने का उच्चारण शब्द है जैसे ओम राम इसी तरह से शरीरिक जन्त्र अर्थ शारीर में गर्भ में ब्रह्म के गिर्द नौ घर या नौ छलनी हैं या नौ आग की भट्टी हैं यही नौ गृह भट्टियां बाहर से आने वाली-वस्तुओं को काट पीट या तपा गला कर और सत्त बना कर अन्दर ब्रह्म का भोग लगाने के लिये भेजते हैं यही सत्त ब्रह्म में मिल जाता है अर्थ तेल का तेल में और मैल मल में मिलती रहती है अर्थात् सत्त को अपने में और मैल को अपने ऊपर लपेटता या शोषता रहता है और आप बढ़ता रहता है अर्थ बच्चा बनता रहता है अन्दर ब्रह्म वही सत्त या तेल हैं और बाहर की वस्तुयें भी उसी तेल या घी से बनती हैं और पैदा होती हैं यह सगुण है अन्दर निर्गुण है दोनों एक ही में मिल जाते हैं हम सब जो मल मूत्र या गन्दगी करते हैं उसकी हवा ही ऊपर को जाती है बोझ या

मैल नहीं जाती हैं हमारे पण्डितों ने नौ गृह पृथ्वी के गिर्द घुमाये हैं अर्थ पृथ्वी और सूरज के बीच नौ छलनी लगी हुई हैं पृथ्वी से वायु उड़ती है तो सूरज तक जाते जाते छन जाती है और अगर सूरज के गिर्द घुमाये तो भी छन जाती है यह सब हाल शूक्ष्म रूप में लिखा जाता है आप सब भाई इस पर अमल करें।

इसी तरह से आकाश में ओटोमेटिक जन्त्र बना हुआ है जो कि खुद ब खुद चलता रहता है और चिराग बराबर जलता रहता है।

(कृण या सर्वव्यापक)

सूरज भगवान से जितनी कृणें निकलती हैं उन कृणों या रेखाओं को कृण. सर्व व्यापक सरजू सूरज जल सर्च सर्च लाइट, आंसू जल वायु बिजली प्रेम का तार वायरलेस का तार लालच की डोर हरजा मौजूद निराकार रूप सूक्ष्म रूप कर्म मार्ग संमार्ग राजरोड वाद जल प्रवह वायु शूक्ष्म लाइन गंगा जल गंगा गेंग कैनाल जोत मोक्ष लाइन प्रकाश सब जोतियों या जातियों को एक जगह मिलाने वाला या मिलाने का मार्ग या प्रब्रह्म तक पहुंचने का मार्ग कहते हैं

(निराकार या शाकार)

जो वस्तु दो चीजों के रगड़ से पैदा होती है वह रूप शाकार है और अन्दर छिपा हुआ निराकार है। मिसाल जैसे दो लकड़ी या दो पत्थर, दो बादल आपस में रगड़ने से जो चमक या अग्नी या बिजली प्रगट होती है वह वस्तु शाकार रूप है इसी को सर्व व्यापक कहते हैं। दूध घी बीज यह सर्वज्ञ हैं दूध गाय के शरीर में छिपा हुआ है परन्तु गाय के शरीर के अन्दर इस रूप में नहीं मिलेगा, बाहर इस रूप में मिलेगा। दूध के

मथने से घी या सत्त या बीज बन जाता है जब हम घी को खावेंगे तो वह हमारे सत्त में मिल जाता है। बीज भी दो के रगड़ से बाहर प्रगट होता है और तीसरा रूप बन जाता है। अर्थात सारा संसार शाकार रूप है क्योंकि कहने वाले और बड़ी बड़ी पुस्तकें वेद-पुराण शास्त्र लिखने वाले तो शाकार ही रूप में हैं निराकार में तो नहीं हैं। अगर वह निराकार रूप में होते तो शायद कह सकते थे कि निराकार है। उनको तो दीखता ही नहीं, तो वह उसका हाल कैसे लिखगे। वह तो जब लिखेंगे तब शाकार ही का हाल लिखेंगे, क्योंकि उनको तो शाकार ही रूप दीखेगा निराकार नहीं, तो हाल कैसे लिखेंगे। मान लिया जावे कि अनभों में लिखा है परन्तु अनभों में भी वही दीखता है जहां तक मन दौड़ता है। अथ जब दीखेगा शाकार ही रूप दीखेगा। मृत्यु के बाद निराकार ही रूप होता है मृत्यु के बाद कोई किताब लिख ही नहीं जा सकता, और न कोई चीज देख पाता है कि जिसकी वह तारीफ लिखे। मानता हूं कि वायु नहीं दीखती है परन्तु हमको उसका धक्का लगता है और मालूम होता है कि कोई वस्तु है परन्तु उसके गर जिये की पहिचान नहीं कि जिन्दी है कि मरी। क्योंकि उसको जब तक न हिलाओ जुलाओ तब तक वह नहीं मालूम होती है वह तो मृत्यु के समान है। उसको तारे सितारे ही आकाश में चलाते और मथते हैं जब वह हिलती है सूरज की कृणों ही को मथने से वायु बन जाती है कृणें कुछ चमकती हैं और दीखती हैं। परन्तु जब वह मथने से बारीक हो जाती है तो नहीं दीखती हैं और बारीक होकर निराकार रूप और बेजान हो जाती हैं और बगैर चलाये नहीं चलती हैं। जलती भी है तो बेजान ही वस्तु जलती है।

(एक (१))

आकाश में सूरज भगवान १ एक और उसकी कृण सर्वज्ञ है अर्थ (सूरज प्रब्रह्म (कृण अपार ब्रह्म) पृथ्वी पर वीज (ब्रह्म) या सब व्यापक है सूरज और वीज दोनों रूप गोल विन्दू हैं। आकाश का ब्रह्म सूरज पृथ्वी पर वीज है वेद वीज ही भगवान के विषय के ऊपर लिखा गया है इसका थोड़ा वहुत हाल राम-प्रकाश पुस्तक में लिखा गया है। सूरज से कृण और कृण से बूटियां वगैरह पैदा होती हैं बूटियों के तपाने गलाने से बीज वनता है इस ख्याल से सूरज सब से बड़ा माना गया है इसी के आधार पर संसार सनातन सनतन-संध्या संजोग, सन्यास, संस्कृण संस्कार संस्करण सन्नाटा सन आफ हाट शब्द वना है। यहां सूरज विष्णू शिवकृण पैदा होने वाला ब्रह्मा वना। ब्रह्म अर्थ पृथ्वी और कहीं पुत्र से भी लिया गया है।

अर्थ—जीव और आत्मा अर्थात जन्म

जन्म या जन्म्यो से जनेऊ शब्द वना इसी को जन्मेयो, जनेव कहते है। इसी शब्द को, अन्तः किरण या अन्तः करन या करण भी कहते हैं। अन्त्ह कृण अर्थ बुढ़ापा अर्थ आखिरी कृण अर्थ पुत्र अर्थ पुन्हर जन्म।

पूर्वजन्म अर्थ नया जन्म मतलब (प्रातः)

प्रात्ह काल अर्थ रात समाप्त होने के बाद जो दिन होता है उसको भी पूर्वजन्म कहते हैं।

दूसरा अर्थ अपने से जो किटाणु उत्पन्न होते हैं उनको भी पूर्वजन्म कहते हैं। मनुष्य या और जीवों से जो पुत्र पैदा होते हैं उनको उस मनुष्य का पूर्वजन्म कहते हैं। पूर्वजन्म अर्थ पिता पुन्हर जन्म अर्थ पुत्र (पृथ्वी और सृष्टियां वगैरह)

पूर्व अर्थ सूरज, जन्म अर्थ (कृण) अर्थ (प्रकाश) इसी कारण से यह विख्यात है कि जो कुछ हम पाप पुण्य करेंगे या तो अब अर्थ जिंदा ही पर भोगेंगे या चोला बदलने के बाद पुनः र जन्म में भोगेंगे, परन्तु मरने के बाद भोगने में यह सवाल पैदा होता है कि जब शरीर से आत्मा या वायु निकल गई तो वह वायु पाप पुण्य कैसे भोगेगी। वायु या आत्मा तो निर्मल है और उसको कोई कष्ट नहीं होता तो वह कैसे कष्ट भोगेगा, वह तो नहीं भोग सकता, वह तो निराकार है। कष्ट जब होगा हमारी सन्तान को होगा। क्योंकि जो कुछ हम अच्छा या बुरा दुनिया के ख्याल से करते हैं, वह सब हमारे सन्तान ही पर साया या असर पड़ता है अर्थ हम अच्छे तो हमारी सन्तान कुछ न कुछ जरूर अच्छी बनती है और हमारे शरीर के किटाणु अच्छे हैं तो हमारी सन्तान के शरीर के किटाणु जरूर अच्छे होंगे अर्थ हम अच्छे तो सब अच्छे।

जीव अर्थ शरीर को कहते हैं, मतलब गन्ध, शरीर (आत्मा या अविनाशी का मेल) या फेन, या गन्ध है। इसी कारण से शरीर जो कुछ अच्छा बुरा करता है वह शरीर ही भोगता है आत्मा नहीं। गन्ध को गंदा ही ग्रहण करता है और गदा ही गन्ध के बोझ को उठाता है। पाप के बोझ को पापी ही उठाता है और चोर चोरी की सजा, चोर ही भोगता है आत्मा नहीं। इसी कारण से जब आप किसी साधु महात्मा को दण्डवत या प्रणाम करते हैं तो वह आपको आशीर्वाद देते हैं कि सदा जीओ, आत्मा-चोला सदा बना रहे, चिरंजीव रहे। अर्थ शरीर बनी रहे। शरीर रहेगा तो आत्मा भी शरीर में रहेगी, मैल से मैल पैदा होती है शरीर से शरीर बनती है।

आत्मा पुत्र को भी कहते हैं। इस वजह से यह बात मालूम हुई कि मनुष्य का जन्म मनुष्य ही में होता रहे और

अविनाशी संसार के सब जीवों में भ्रमण करता रहे अर्थ अविनाशी जमा खारिज होता हुआ सब जीवों में भोगता हुआ दौरा भी करता है और जन्मता भी है। जन्मता अर्थ शरीर भी धारण करता है और अपनी दर पर आ जाता है (मनुष्य का जन्म मनुष्य ही में होता रहे, बकरी का बकरी में, पेड़ का पेड़ में होता रहे और लख चौरासी या अपार जीवों में भोग भी आवे तथा अविनाशी का जन्म भी होता रहे अर्थ साकार रूप भी धारण करता रहे) इसी कारण से मनुष्य का जन्म मनुष्य के जिन्दा ही पर हो जाता है। बहुत ध्यान से यह बात मालूम होगी कि हर एक जीव का जन्म, जीव के सामने ही हो जाता है। चोला बदलने के पहले जीव का प्रेम जिसमें होता है उसका जन्म उसी में हो जाता है। हमारे शरीर से जितने जीव पसीना या वायु या मल मूत्र से पैदा होते हैं वह सब जीव हमारा नया जन्म है। किसी के पुत्र है और किसी के नहीं अर्थात पुत्र वाले का जन्म पुत्र हुआ और न पुत्र वाले का वायु, पसीने से जो जीव पैदा हुए, वह जीव न पुत्र वाले का जन्म हुआ अर्थ पुत्र सभी हुये जो हमारे शरीर से प्रगट होते हैं, परन्तु जिस पुत्र से हमें लाभ है उसी को पालते हैं और बाकी को तिलांजलि दे देते हैं। मृत्यु के समय भी मनुष्य या और जीवों का प्रेम अपने रक्षा करने वाले ही में अधिक होता है तो इसी अधिक प्रेम वाले ही पुत्र में आत्मा चली आती है अर्थ दोनों तरह से जन्म जिन्दा ही में होजाता है। (अर्थ शरीर किरणों के गांठ से बनती है) अर्थात कणों के जोड़ से या मेल से बनती है।

तीसरा अर्थ

जहां तक हमारा मन दौड़ता है वहीं तक हमारा पुन्हर

जन्म होता है [मन] अर्थ म अर्थ ध्रुव श्री लक्ष्मी-माता [न] अथ सूरज-सन-सर-सरोज पितह म और न मिलने से प्रेम पैदा होता है अर्थ पुत्र अर्थ मन की गली [प्रेम] मतलब जहां तक प्रेम दौड़ता है वहीं तक हमारा जन्म हो सकता है। जिसमें हमारा अधिक प्रेम हो वहीं हामरा जन्म हुआ। अर्थ ध्रुव और सूरज से कोई ऊँचा नहीं है और हमारी पहुंच यहीं तक होती है और यहीं तक हम घूम सकते हैं और और इन्हीं के संसार में जन्म लेते रहते हैं। यही ध्रुव और सूरज की प्रशंसा वेदों में है।

पूर्व जन्म प्रातःकाल सूरज के निकलने को भी कहते हैं अर्थ नया जन्म इसी के आधार पर पूर्व-जन्म शब्द लिखा है [पूर्व से जन्म देने वाला अर्थ सूरज या (पर-ब्रह्म) पुन्हर अर्थ पुनि अर्थ फिर [बार बार] हर अर्थ पीला रङ्ग पुनि पुनि हरि हर बार बार हरे से हरा होना पीले से हरा होना बार बार रङ्ग बदलना।

मन

मन अर्थ माता पिता के प्रेम से है 'म' अक्षर के अर्थ माता अर्थ (उमा) (न) अर्थ पिता अर्थ सूर्य से भी है और उमा अर्थ (ध्रुव) आकाशी-मार्ग से है। शिव और पार्वती (ध्रुव) अर्थ श्री या लक्ष्मी की परिक्रमा या पूजा करते हैं। माता-पिता शिव और पार्वती जी को भी कहते हैं—जैसे (ओमा) पार्वती जी को कहते हैं, ओ३म् के अर्थ पिता और मां को पुकारने को कहते हैं। (मन) शब्द से मंगल दिन का नाम बना है। मंगल अर्थ मन की गली अर्थ (प्रेम माता-पिता का प्रेम अर्थ [कृष्ण] [पुत्र] सोमवार [पिता का दिन पहला] मंगल [मिलाने वाला] [बुद्ध-बृहस्पति] अर्थ

ऋतुता अर्थ [त्रेतायुग] अथ जवानी [सोमवार-मंगल]
[सतयुग] अर्थ [बाल अवस्था] अर्थ [ब्रह्मा] [शनि शुक्र] द्वापर
[वृद्ध अवस्था] अर्थ [बुढ़ापा] [सूर्य] [ब्रह्म] [सोमवार-मंगल]
ब्रह्मा [बुद्ध] [बृहस्पति] [विष्णु] (शुक्र शनि) [शिव] रविवार
[परब्रह्म।

भगवान

भगवान शब्द के अर्थ [भग] अर्थ भग [कमर] [वा] अक्षर ध्रुव से [न] सन या सूर्य से लिया गया है। भग [भक्ति] [वा] स्त्री] [न] पुरुष यह "स्त्री" शब्द बीच में लिया गया है। [न] आखिर में अर्थ दाहिनी तरफ प्रेम शुरू में लिया गया है। [न] अक्षर दाहिनी तरफ रखने से बड़ा बन जाता है शरीर में दाहिना हाथ जल्दी से चलता है । दाहिना हाथ शरीर में पूर्व है। बायां पश्चिम अथ [भगती] दायाँ [विज्ञान] भगवान शब्द लिखते समय [न] अक्षर दाहिने हाथ पड़ेगा। इसी से सूर्य बड़ा माना है। शरीर में ध्रुव सिर है। अर्थ दायें बायें के बीच 'प्रेम' है (स्त्री)

भगवान निराकार में कृष्ण को और साकार में पुत्र को कहते हैं।

माता पिता पुत्र के प्रेम को [राम] कहते हैं।

रामकृष्तान देश के चारों धाम

हिन्दुस्तान देश का प्राचीन काल में इसका नाम संस्कृत भाषा में रामकृष्तान देश या रामकिरणस्थान देश या राम कृष्ण स्थान देश था उसके बाद आर्य वर्त उसके बाद भारतवर्ष नाम रक्खा गया उसके बाद हिन्दुस्तान और इंडिया नाम पड़ गया।

संस्कृत भाषा वाले या संस्करण विद्या वाले या सन कृष्ण जंत्र वाले अपने देश का नाम कृष्णों ही के आधार पर रक्खा है और उसके चारों दिशाओं में किरनों के उदय और अस्त के आधार पर चारों धाम बनाये हैं।

पूर्व दिशा में राम जन्म और पश्चिम दिशा में कृष्ण जन्म माना है अर्थ सामने उजाला पीठ के पीछे अंधेरा पाख माना है और बनाया है—रामकृष्तान देश ही में प्रब्रह्म औतार भी लेते रहे हैं और देश में आज तक कोई औतार नहीं हुवा है।

भारतवर्ष का प्राचीन समय का नाम

१ सन या सूर्य प्रस्त	(राम कृष्ण स्थान देश)	राम के समय का नाम
२ सन कृपी प्रस्त	(रामकृष्ण स्थान देश)	कृष्ण के समय का नाम
३ कृष्ण प्रस्त	(आर्य वर्त देश)	आने जाने वालों के समय का नाम
४ आतश प्रस्त	(राम कृष्तान देश)	हजरत ईसा मसीह के समय का नाम
५ कृपी राम प्रस्त	(भारतवर्ष देश)	राजा भरत के समय का नाम
६ निराकार प्रस्त	(हिन्दुस्तान)	मुसलमान भाई के समय का नाम
७ युसू प्रस्त	(इंडिया)	अङ्गरेजी समय का नाम है

सेतबन्ध रामेश्वर अर्थ सेत का बांधनेवाला जो राम है वह ईश्वर है दूसरा अर्थ सत्त का बाँधनेवाला राम ईश्वर है

तीसरा अर्थ—सब सत्तो या सेतो का बांधनेवाला जो राम है वह ईश्वर अर्थ बिना शीश का है अर्थ सूरज भगवान हैं। सेत अर्थ किरण से भी है जो हमको और ईश्वर को

मिलाता है अर्थ जाने का रास्ता या पुल या धर्न है अर्थात इन सब बिर्जों या पुल्हों को या सेतुओं को मिलाने वाला सूरज भगवान है अर्थ कृणों का पैदा करने वाला सूरज भगवान है किरण सेतु है जो हमको और सूरज को मिलाता इसी कृण को ना अर्थ पोल या नाथ कहते हैं।

बद्रीनाथ केदारनाथ के अर्थ बद्री या बदली या बिज्युली के द्वार के नाथ हिमाल्या पहाड़ की सब से ऊँची चोटी है अर्थ शंकर और सूरज भगवान हैं इसका अर्थ और कहीं इस पुस्तक में दिया गया है।

जगन्नाथपुरी अर्थ सब जुगनुवों के नाथ जन्म के नाथ जन्म ने वाला नाथ अर्थ सूरज और [किरण] है कृण जन्मने वाला नाथ है सूरज जन्मनाथ है अर्थ जगन्नाथ है क्योंकि रामकृष्तान देश के पहिले कृण और सूरज पूर्व ही दिशा में निकलता है इस कारण से विद्वान ने पहले हिन्दोस्तान के पूर्व ही दिशा में इनकी पुरी बनाई है अर्थात सब जुगों या सब जुगनुवों या सब चमकने वाले सितारों के नाथ की कृण या प्रकाश पहिले रामकृष्तान देश के पूर्व ही में जन्म लेती है अर्थ सूरज पहिले वहीं उदय होता है उसी जगह को जन्मनाथ या जगन्नाथपुरी कहते हैं अर्थ पूर्व दिशा।

द्वारकापुरी के अर्थ अस्त के नाथ अस्त के पुरी अस्त के द्वार के नाथ द्वापरनाथ मृत्यु के नाथ मृत्य कृण कै पुरी अर्थ सुशुक्ती अवस्था के नाथ सुशुक्ती अवस्था कै पुरी अर्थात वह पुरी जहां सूरज की कृणें राम कृष्ण स्थान देश में अस्त होती हैं अर्थ [पश्चिम दिशा]

ब्रह्मा सूबा—ब्रह्मा सूबा राम कृणस्थान देश का पूर्वी शरहदी प्रान्त है। उस समय के संस्कृण भाषा वालों ने या, सन पुजा-

रियों ने अपने देश के उदया प्रान्त का नाम ब्रह्मा सूबा रक्खा क्योंकि सूरज की किरणें प्रातः पहिले इसी सूबे में जन्म लेती या प्रवेश करती हैं इसी कारण से विद्वान ने पहिले कृणों का जन्म-इसी जगह माना है अर्थात ब्रह्म जन्म माना है और ब्रह्मा जन्म ही के आधार पर उस स्थान का नाम ब्रह्मा रक्खा और उस के राज्यधानी का नाम इन्द्र पुरी रक्खा और वहीं राजा इन्द्र की रहने की जगह अस्थापित की जिसको आजकल उस जगह को माया पुरी बोलते हैं जो कि ऐरावती गंगा के किनारे आवाद है। आकाशी मार्ग में ब्रह्मा का सूबा आकाश को भी कहते हैं जहां कृणों का जन्म होता है क्योंकि कृण ब्रह्मा है और जहां जन्म हुवा वह आकाश है सूरज (प्र ब्रह्म) (कृण) ब्रह्मा है। दूसरे (कृण) इन्द्रियां हैं और आकाश सव इन्द्रियों की पुरी है। शारीरिक जन्त्र से शरीर ब्रह्मा सूबा है और हृदय मायापुरी और अवध का सूबा है अर्थात सब का इन्द्रपुरी राम कृष्तान देश में अवध का सूबा और राजधानी अयोध्या है जहां राम लिहिन औतार

आर्य देश या आर्य शब्द का अर्थ—आ राहे गीर (राह-गीर) आ अर्थात राहगीरों के आने जाने का देश मुसाफिरों या सैयारों या सैयाहों या जात्रियों का देश अर्थ किरनों के आने जाने का देश (आकाश) (रामकिरनस्थान देश) रामकृष्तान देश आर्य देश शरीर से भी है अथ राम किरण शरीर में आने जाने वाली है अर्थात कृणों के जमाव या मिलान या जमा होने का देश है अर्थात आर्य शब्द का अर्थ राहगीरों का देश है आर्य शब्द के अर्थ यह भी हैं आर अर्थ काटने वाली वस्तु रेतने वाली या छेदने वाली वस्तु (ये) अर्थ यह, अर्थात यह काटने वाली वस्तु है अथ सूरज की (कृण) किरण हरएक वस्तु को काटकर पार निकल जाती है यह आय है कृणों ही

को आर्य कहते हैं इसी से सारा संसार प्रगट भी होता है इस कारण सारा संसार आर्य है।

हमारे सज्जनों ने आर्य के अर्थ श्रेष्ठ भी लिखा है अर्थात कृण श्रेष्ठ है

श्रेष्ठ शब्द के अर्थ श्रेष्ठ उसको कहते हैं जिस वस्तु की इच्छा की जावे अर्थात लालची वस्तु प्रेमी चीज अथवा जिस वस्तु की अभिलाषा हो वह हमसे श्रेष्ठ है संसार में कोई ऐसा जीव नहीं है कि जिसको किसी ने किसी वस्तु की इच्छा न हो अर्थात सब को इच्छा है। इस कारण हम नहीं श्रेष्ठ हुए और आर्य कहलाने का हकदार नहीं आर्य कहलाने का सम्बन्धी या सम्बन्धी वही जिसको किसी वस्तु की इच्छा न हो—अर्थात (ईश्वर) आर्य या श्रेष्ठ है हम नहीं। ईश्वर दोनों काम जानता है सब से बड़ा काट करने वाला भी है और न काट करने वाला भी है अर्थ दोनों काम में सब से ज्यादा निपुण है हम नहीं हैं— अर्थात हम काट करने वाले नहीं।

अर्थ पञ्जाब देश

राम कृण स्थान या राम कृस्तान देश वाले कृणों के आधार पर अपने देश के एक सूबे या एक प्रांत का नाम पंजाब रक्खा है क्योंकि हमारे सूर्य वंशी अथवा रामकृण को पूजने वाले सूर्य की पहिली कृण को सयु जल दूसरी कृण को गंगा जल तीसरी कृण को यमुना जल नाम रक्खा है अर्थ सरजू जल गँगाजल यमुनाजल बीज अर्थ ब्रह्म जल या पृथ्वी जल और पृथ्वी जल का मैल या मिट्टी के मजमुये को पंजाब जल या पांचों तत्व कहते हैं।

सूरज की पहली कृण दूसरी कृण तीसरी कृण के जोड़ से जो वस्तु उत्पन्न या बनती है जिसको कि राम कहते हैं और इसी को अविनाशी या बीज भगवान या ब्रह्म भी कहते हैं अर्थ बीज और मिट्टी मिलकर जो जल बनता है उसी को पंजाब या पांच जल कहते हैं इसी जल को पांचों तत्व भी कहते हैं इसी से शरीर भी बनती है। इसी किरणों के आधार को लेकर हमारे देश वाले अर्थात कृष्ण या कृस्तान या राम कृण स्थान देश वाले अपने देश के एक प्रांत का जहां कि पांच जल मिलता या संगम होता था नाम पञ्जाब देश रक्खा और अपने शरीर को भी पंजाब देश बनाया।

गंगा और सरजू के जल का हाल कहीं पुस्तक में लिखा गया है। यमुना जल का अर्थ यम अर्थ आकाश ना अर्थ निरा-कार अर्थ वह जल जो निराकार है अर्थ वह जल जो आंखों से नहीं दीखता है परन्तु उसकी लहर मालूम पड़ती है अर्थात पृथ्वी के नजदीक या समीप की किरण या वायु को यमुना जल कहते हैं। सूरज के किनारे की वायु को सरजू जल पृथ्वी और सूरज के बीच के किरण या वायु को गंगाजल कहते हैं।

कृणों ही के आधार पर चलने वालों और कृणों ही का शस्त्र बनाकर युद्ध में लड़नेवालों को सूरज बन्शी कहा जाता है।

पहिले का नाम बम संकर या शेष नाग जंत्र है दूसरे का कृष्ण बम या प्रकाश बम तीसरा राम बम या राम प्रकाश जंत्र है अर्थात गर्भ विन्दु (शंकर बम) है गर्भ में विन्दु का बढ़ना (कृष्ण बम है फूट या प्रगट (राम बम है है।

........इशारह

सूरज की कृणों ही को कम बढ़ जोड़ के एक जगह जमा करके बन्द करो बस बन्द वाली वस्तु कृण बम अथवा हवा।

बम । एक जगह बन्द करने और से बड़ा बम कहा है जैसे बादलों के अन्दर की बिजुली का (फूट) और कड़क सब को जला और तोड़ देती है इसी को संकर की तीसरी नेत्र या प्रकाश बम और प्रमाणु बम भी कहते हैं।

गर्भ में बच्चे को भी बम कहते हैं प्रगट पर माता पिता का नाश कर देता है और नाश करने ही पर लगा रहता है यही नाश करने वाली वस्तु आत्मा या किरण है सूक्ष्म रूप में लिखा है

विष्णू बम या विष्णू शस्त्र जाप या पार्ट

विष्णू बम के अर्थ विष्णू अर्थ जो सब कृणों के विष्यों से भरा हो अर्थ सब जहरों से भरा हो बम अर्थ खोल अर्थ जो खोल या शरीर का ढांचा सब विष्यों से भरा हो वही विष्णू और विष्णू बम है अर्थात सब विषयों के एकट्ठा वाली वस्तु को विष्णु और विष्णू को बन्द करने के खोल को बम कहा है अर्थात एक साल की सूरज की कृणों को एक जगह बन्द कर दो वही पृथ्वी बम है दूसरा अर्थ—सूरज की कृणं हजारों लाखों तारों सितारों को टच या छूता हुई आतीं हैं और पृथ्वी पर पड़ती हैं यह कृणें ऊपर जिस जिस सितारे को छूती हैं उनके विषयों से भरी होती हैं यही विष्यों कृणों के जरिये से पृथ्वी बम में भरती हैं बस यही पृथ्वी बम या पृथ्वी विष्णु है इस पृथ्वी या पृथ्वी बम से औलाद या बच्चा या गर्भ होता है इस कारण से गर्भ बम भी विष्णु बम है अर्थ जब बच्चा गर्भ से निकलता है तो वह भी सब को नाश करता ही रहता है यह बच्चा बम भी हजारों लाखों विषयों से बनता है यह सब से बड़ा

बम है अर्थ हमारे जो देवताओं के नाम हैं और देवता हैं वही बम और लड़ाई के शस्त्र भी हैं यह दोनों देवता हमारी रक्षा करते हैं अर्थ दोनों एक विषय रखते हैं देवता वही जो अपनी रक्षा करे यह सब हाल सूक्ष्म रूप में लिखा गया है समझने के योग्य है

कुल रीति या राम-राज्य

कुल रीति या अपनी मर्यादा एक ऐसा धर्म है जो कि दुखदायी और लाभकारी भी है परन्तु अपने कुल रीती पर ही चलने से आराम मिलता है कुल रीति भी ईश्वर की बनाई हुई है जो कोई अच्छा बुरा न विचार करके अपने कुल की रीति पर चलता है और दुख तकलीफ उठाते हुए भी अपना रास्ता नहीं बदलता है और आगे ही को चलता जाता है वह आखीर तक जरूर पहुँच जाता है जैसे सूरज की किरण सूरज वंशी खानदान है यह सूरज वंशी कुटुम्ब ऊँच नीच कुछ भी नहीं विचारता है और सब को बराबर एक सार पालन करता है और बराबर रोशनी देता है ऊँच नीच सम असम भूमि पर बराबर बरसता रहता है अर्थात ऊँच नीच छोटा बड़ा कुछ भी नहीं विचारता है और सब को एक सार या एक सम समझता है यही इसका काम है और अपनी मर्यादा नहीं छोड़ता है एक ही रास्ता रखता है।

(कुल रीति पर) शब्द के अर्थ—(कुल) अर्थ सूरज (रीति) अर्थ कानून–नियम (पर) अर्थ पंख, किरण, अर्थात सूरज की रीति पर किरण चलनेवाली अर्थ जैसा काम सूरज करता है वैसा ही उसकी किरण भी काम करती है अर्थ पुत्र पिता के आज्ञा का माननेवाला है। सूरज भी अपने ही पैरों

पर उड़ता हैं और चलता है अर्थात सूरज अपने पुत्रों के राय पर चलता है (अर्थ) राजा प्रजा के राय को मानता है और प्रजा राजा के रीति को मानती है

पहिले पहल पृथ्वी कायम होने पर यही कृणें जब पृथ्वी पर पड़ी और उसी किरणों से श्रीराम चन्द्र जी प्रगट हुए और सूरज वंशी कहलाये उनसे जो कृणें उत्पन्न हुई वह और वंश कहलाईं इसी तरह से शाख व शाख होती हुई सारी पृथ्वी पर फैल गईं और अपनी कुल रीति पर चलती रहीं और राम राम जै सीताराम करती रहीं और राम कृणस्थान देश चक्रवर्ती और धनवान और सारे संसार से विद्वान बना रहा और अब भी सारे संसार से संकृण जंत्र या विद्या में कुछ महान पुरुष है जो कि चाहैं तो सब कुछ हो सकता है। परन्तु वह सोचते हैं कि जो देश या मुल्क राम को या अपने कुल रीति पर नहीं चलता है या अपने संकरण जंत्र पर विश्वास नहीं करता है वह नहीं कुछ कर सकता है और जो अपनी कुल रीति पर चलता है वह जरूर अपने कर्तव्य पर फतह या जीत पाता है। आज हमारा देश इस रीति पर नहीं है। हमारे राम कृष्ण स्थान देश के महान पुरुष आज कल संकृण विद्या के आधार को न समझकर राम के मर्यादा या किरणों के कुल रीति को न मान कर और ही या अपनी कुल रीति या मर्यादा रखने के लिये और ही रास्ता बनाकर चला दिया। कहीं नमस्ते कहीं बन्दे-मातरम् जिंदाबाद, इंकिलाब, गुडमुआरनिंग, सलाम, जैहिंद, राम राम के बजाय करने लगे और दो सेर का आटा बिकवाने लगे जब राम राम जै कृष्ण था तो तीस सेर और रुप्या मन चावल था और अब गुडनाइट में कुछ भी नहीं।

स्वराज्य भाइयों और योगीराज पुरुषों को चाहिये कि अगर

उनको स्वराज्य लेना हो तो उन राम के महिमा जानते वालों के पास जावें और उनसे कहें कि आप सब महान पुरुष और सज्जन एक बार सब मिलकर राम राम जै सीताराम और कृष्ण का नाम एक साथ उच्चारण करें और स्वराज्य ले लेवें। बिना एक साथ राम राम किये हुये स्वराज्य कदापि नहीं मिल सकता है। राम शब्द का अर्थ कहीं ब्रह्मप्रकाश पुस्तक में लिखा हुआ है सो आप सब सज्जन उसका अर्थ लेकर स्वराज्य ले लीजिये। स्वराज्य दो प्रकार का है एक तो शारीरिक स्वराज्य जिसको कि योगी-राज करते हैं दूसरा देश स्वराज्य इनमें दोनों तरह का स्वराज्य है। आप सब सूरजवंशी खान्दान बनिये और स्वराज्य लीजिये। बिना राम की रीति पर चले हुये राम नहीं बनता है और न स्वराज्य मिलता है आप राम ही को देखिये। राम प्रेम में सबके यहां भोजन कर आते थे उनको छूत छात का विचार ही नहीं आया कहीं निषाद के यहां खाया कहीं भिलनी के बेर खाये कहीं हनुमान और नल नील के साथ भोजन किया। कहीं विभीषण को अपने साथ खिलाया। अर्थ उनको कुछ ज्ञान ही नहीं, वह तो सभी में रमा थे इस कारण से वह सम्राट हुये सूरजवंशी खान्दान के अर्थ यही हैं जिसको कि कुछ विचार न हो सब में प्रेम रखता हो। प्रेम ही सबको जीतता है और इसीसे जीतने का उपाय भी मालूम होता है।

मनुष्य को पहिले जिस किसी को जीतना हो तो पहिले उस जीतने वाली वस्तु के देवता को उससे भुला दो अर्थात उसके कुल रीति को मेट दो। मतलब उसके देवता या पूज्य को अपने में मिला लो तो जीत हो जाती है हर रणधारी पहिले लड़ने वाले के पूज्य ही को पकड़ता है तभी वह जीत पाता है इसी कारण से अन्य देश वाले जो कि आजकल हम पर विराजमान हैं पहिले वह हमारे राम को पूजा है और उनको पूजकर अपने

में मिला लिया है अर्थात राम को हमसे भुला दिया है तभी वह हमसे जीत पाये हैं। अगर हम सब मिलकर इतनी जोर से राम को बोलें और आवाज लगावें कि उनके राम के कहने की आवाज छिप जावे तब हम उनसे जीत जावेंगे। आप राम ही का बम या बाण बनाये जभी काम चलेगा। जो महान पुरुष हम पर आज सम्राट बने बैठे हैं वह हमसे ज्यादा गुप्त रीति से और दिल ही दिल में राम को पूजते हैं और राम शब्द के अर्थ को जानते हैं जिससे कि वह आज सम्राट बने बैठे हैं। इस राम के आगे किसी की नहीं चली है जब चली है जब राम की चली है, राम के आगे न रावण की साइंस चली न हर हिटलर की चली चली तो राम की चली। अर्थ प्रेम की चली। प्रेम नाम राम का ही है। लंका में रामदल में सब प्रकार के योधा थे आकाशी मार्ग के पानी के मार्ग के अर्थात सब मार्ग के थे परन्तु प्रेम मार्ग यानी सेत मार्ग कोई खतरे में न था और सब मार्ग खतरे में थे हवा में उड़ने वालों का क्या ऐतबार तेल खतम हो गया तो पृथ्वी पर गिर पड़े समुन्दर में तैरते हुए थक गये तो डूब गये परन्तु पृथ्वी मार्ग में थके तो पृथ्वी ही पर रहे। इसी कारण से राम प्रेम मार्ग से जीत गये। हर तरह से जीत राम कृष्णस्थान देश वालों ही को होती आई है सब देश राम कृष्णस्थान देश ही को चाहते हैं जिसके पास यह रामकृष्णस्थान देश है वही जीतने वाला बनता है। राम वचन—रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जांय पर वचन न जाई॥

इसलिये सदा अपने कुल रीति पर चलना चाहिये। अपनी कुरीति पर न चलने ही से यह हमारी दशा हुई।

—:(०)*(०):—

रावण वाक्य रामायण से

महाराजा रावण ने अन्तिम समय कहा कि हे भगवान प्रब्रह्म प्रमात्मा हम वड़े दोषी हैं कि मेरे आज्ञा से लंका के हजारों लाखों जीव रण में कटकर स्वर्ग लोक को सिधार गये और मेरे ही कारण से मेरा कुल परिवार जो कि संसार में प्रसिद्ध शूरवीर थे उनका नाश हो गया इन सब के हत्या का दोषी मैं ही हूँ तो हे भगवन अब मैं क्या करूं यह सब बातें उसके दिल में ख्याल आया तब उसको यह आकाश वाणी होती है कि हे महाराजा रावण तुम बड़े तपेश्वरी और योगी राज्य हो और आप खुद इस दोष के जीत का उपाय जानते हो यह आकाश वाणी होते ही रावण के दिल में खुशी की झलक दौड़ जाती है और कहता है कि हे राम मैं रण जीत गया आप से पहले आप के धाम को जा रहा हूँ और आप मेरे जीते जी मेरे धाम को नहीं जीत पाये। जीत किसकी जो कि अपनी हार को जीते जी न देखे कि मेरे बाद मेरे परिवार और मुल्क प्रजा की क्या दशा होगी। रण के बाद जो हार देखकर दिल में रंज पैदा होता है वही रंज हार है इस लिये रावण ने सोचा कि मैं करोड़ों जानों की हत्या का दोषी हूँ कि जिन्होंने मेरे जान के ऊपर अपनी जान दे दी और मैं अब जिन्दा रहूँ नहीं मुझ को भी कटकर रण में मर जाना चाहिये और पीछे के देखने के लिये नहीं जीता रहना चाहिये। अगर राम से सन्धि करता हूँ तो मैं दोषी का सन्धी करता हूँ हितैषी का नहीं। साथियों ने तो हित्योपी का सन्धी किया है तो क्या मैं दोष का संधी करूँ नहीं हित्य का करना चाहिए यह कह कर रण में हित्योपी का पदवी लेकर स्वर्ग वास को सिधार गया। राम ने यह वाक्य रावण के मुख से सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और मुख से यह

शब्द उच्चारण किया कि धन्य हो ऐसे शूरवीर को जो कि अपने कर्तव्य का पालन करने के लिये जान दे दी। जो इस नीति को रणधारी पालन करेगा वही रणजीत कहलायेगा। इसी नीति के ऊपर बड़े बड़े रणधारी जोधा राजे महाराजे चलते आये हैं जैसे राजा दुर्योधन राजा जरासिन्ध वगैरा जो कि कृष्ण और अर्जुन से लड़ते लड़ते अकेले ही रण में बाकी रह गये और सन्धी का नाम ही नहीं लिया और रण में जूझ गये इसी कारण से आज तक भारतवर्ष या रान कृणस्थान सारे संसार में रणधारी और बहादुर कहलाया है कि वह पश्चात्ताप को जानते ही नहीं जो कि हार और रक्ष है गीता में कृष्ण ने भी अर्जुन को यही शिक्षा दी थी कि बहादुर वही जो अपने पीछे रण न देखे जब देखे आगे ही देखे जैसे (किरण)

रावण शब्द के अर्थ

रावण का नाम रावन-रामन-रामण राम मन या राम मणि है रा अक्षर सूरज से व अक्षर ध्रुवु या श्री से ण अक्षर राम या कृण से सम्बन्ध है अर्थ राम का मन है अर्थ राम का प्रेमी है अर्थात राम मन का मन या मण है मन-कृण को कहते हैं अर्थ दो के मेल के कृण को कहते हैं इधर माता पिता के कृण के कृण को मन उधर ध्रुवु सूरज के (कृण) के मैल को मन कहते हैं। सूरज के मैल को शंकर सूरज ध्रुव के कृण के मेल को राम सूरज ध्रुवु राम के कृण के मेल को रावण कहते हैं शंकर सूरज की कृण से राम ध्रुवु सूरज के कृण से रावण सूरज ध्रुवु राम के कृण से प्रगट हुवा है इसी कारण से रावण राम से

हार गया क्योंकि दो के रगड़ से जो वस्तु प्रगट होती है वही प्रगट होने वाली वस्तु दोनों को जला देने वाली या मारनेवाली या मारनेवाली या जीतने वाली होती है जैसे दो लकड़ी या दो पत्थर या दो बादल के रगड़ से जो अग्नी या बिजली प्रगट होती है वह दोनों को जला देती है इसी कारण से प्रगट होने वाला ही वस्तु या कृण या पुत्र ही को सब से बड़ा और भगवान माना गया है जैसे अयोध्या में (राम) भये प्रगट कृपाला दीन दयाला.............

कृपाला शब्द के अर्थ-कृ अर्थ रगड़-पाला अर्थ पालने वाला अर्थात जो वस्तु रगड़ से पैदा हुई है वह पालने वाला है अर्थ (कृण) कृण सब को पालने वाली है यह शब्द सूरज की कृण से सम्बन्ध है कृपाला शब्द दोनों अर्थ रखता है पालनेवाला अर्थ प्रवरिश करने जोग अर्थात किरण सबको पालने वाली भी है और वह प्रवरिश करने जोग भी है अयोध्या में पालने का झूलने वाला भी है अर्थ हृदय के पालने में झूलने वाला है ।

आज कल बिज्युली भी किर कृ से प्रगट होती है जिसके ऊपर सारा संसार नाच रहा और चल रहा है कृण हम सभों को चलाती भी है और हमारे साथ चलती भी है वह हमको झुलाती है हम उसको पंखे से हिलाते या झुलाते हैं।

शाकार रूप में पुत्र दो के रगड़ से उत्पन्न होता है और माता पिता को जलाने वाला बन जाता है सूरज जलता भी है और सब को जलाता भी है इसी तरह कृण भी जलती और जलाती भी है

यह शुक्ष्म रूप में लिखा गया है।

(राम कृष्णा ब्रह्म प्रब्रह्म अक्षर यंत्र अर्थ)

प्रब्रह्म (……… कृष्ण ………) पार्वती
प आ र व र ह म
प र व र ह म म
" व र ह म म "
सूरज (…. …. कृष्ण …. ….) ध्रुव
र (…. …. आ …. ….) माँ
" र (…. आ ….) माँ "
" " र आ म " "
" " " राम " " "
शिव (…. सनकर ….) पार्वती
सन सनकर (…. गणेश ….) पार्वती सनी
" " (…. कृष्ण ….) " "
" भ ग व आ न "
सूरज " (…. पृथ्वी ….) " ध्रुव
राम

इस जंत्र में जिन देवताओं के नाम के शब्द में जितने अक्षर आये हुये हैं उतना ही देवता या सितारे या कृष्ण उस में अर्थ हैं।

राम अर्थ जंत्र आकाशी मार्ग

[राम]

प्र ब्रह्म	कृष्ण	अपार कृष्ण
शिव	सन कर	गणेश
जल	सरजू जल	गंगाजल
सूरज	कृष्ण	कृष्ण

[राम]

र	आ	मां
प्र ब्रह्म	कृष्ण	पार्वती
सूरज	सरजू	ओजनी
सन	सन कर	सनी
जल	आंसू जल	जलनी
राहू	सातों दिन	केतकी
पूर्व	जन्म	जंनी
१	३	२
नीला सरोज	बहु सरोज	पीला सरोज
ऋषी	सप्त ऋषी	सप्त ऋषी की मां
तत्व	पांचों तत्व	मां
नीला	पीला हरा	पीला
संत	सन तन	सनतन की मां
पितहँ	पुत्र	मां
शिव	गणेश	पार्वती
सूरज	पृथ्वी	ध्रुव
र	आ	म

[राम]

प्रकाश अर्थ

आकाशी मार्ग से

सूरज	कृष्ण	ध्रुव
सन	कृष्ण	सनी
सन	शनकर	पार्वती
शिव	गणेश	"
संकर	कृष्ण	"

प्रकाश अर्थ पृथ्वी मार्ग से

कृष्ण	अपार ब्रह्म	
निराकार	शाकार	
"	"	ब्रह्म

प्रकाश अर्थ आकाशी और पृथ्वी मार्ग से

	(निराका)		(——शाकार——)	
सूरज	(कृष्ण वायु)	+	(अग्नी जल मिट्टी)	ध्रुव
पितह	भ ग		व आ न	मां

इस प्रकाश अर्थ में आकाशी और पृथ्वी मार्ग
से निराकार और शाकार रूप में
कृष्णों का अर्थ दिया गया है।

१	१
६	६
सूरज	प्रेम
२ प्र ब्रह्म	१
३ ब्र ह्म	म०न
४ भगवान	कृण २
५ शानकर	रा म ३
६ राम	स न क र ४
७ मन	भ ग वा न ५
१	ब्र ह्म ६
प्रेम	प्र ब्र ह्म ७

अक्षर यन्त्र

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः यह बारह अक्षर बारह राशि या बारह माह हैं क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म यह पचीसों अक्षर जो व्यंजन कहलाते हैं पाचों तत्व अक्षर हैं य र ल व श ष स ह क्ष त्र ज्ञ यह ग्यारह अक्षर दिशा अक्षर हैं

पांचों तत्व अक्षर अर्थ

सन से शंकर या सनकर देवता प्रगट होते हैं अर्थ सन या सूरज का कर..........क अर्थ कर अर्थ पर या पंख अर्थ खग ग अर्थ घड़ा या गर्भ घ अर्थ कुम्भ या घड़ा घड़ा अर्थ अंग (ङ) ङ अर्थ गर्भ...............

कर अर्थ सूरज की कृण या पर या पंख अर्थ खग-खग अर्थ गर्भ या घड़े में कृणों का वन्द होना घड़े से अङ्ग या ब्रह्म वनना ब्रह्म या अंग से बच्चा प्रगट होता है अब इस बच्चा या अंग से चार वेद या चार चार पुत्र उत्पन्न हुये (च ट त प) हुये (ञ ण न म) यह चारों अक्षर अंग का अंग ही बनता रहता है अर्थात अंग (या गर्भ) वेद है और बाहर चारों अवस्था के कारण नामदार या दुसदार वेद हैं बस यह बीसा यन्त्र हैं।
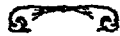
ब्रह्म अर्थ जन्त्र

इस जन्त्र में ब्रह्म और प्रब्रह्म अर्थ दिया गया है। ब्रह्म के पांच अर्थ प्रब्रह्म के सात अर्थ दिये गये हैं—

१[भ[अक्षर के नीचे या खाने में जितने नाम लिखे हैं वह सब नाम ब्रह्म को कहते हैं और नौ माह गर्भ से सम्बन्ध है।

२ [ग] अक्षर के खाने या घर में जितने नाम लिखे हैं वह सब बाल अवस्था से सम्बन्ध है और बाल अवस्था को कहते हैं

३ [व] अक्षर के खाने में जितने नाम लिखे हैं वह सब तरुण अवस्था या ज्ञानी से सम्बन्ध है और ज्ञानी को कहते हैं। -

४ [अ] अक्षर के घर में जितने नाम लिखे हैं। वह सब वृद्ध अवस्था से सम्बन्ध है और वृद्ध अवस्था को कहते हैं।

५ [न] अक्षर के खाने में जितने नाम लिखे हैं वह सब मृत्यु अवस्था या वायु और किरण से सम्बन्ध है अर्थात सुसुप्ती अवस्था से सम्बन्ध है

इसी पांचों अक्षर के जोड़ से भगवान शब्द नाम बना

यह नाम गर्भ सम्बन्ध या ब्रह्म समाध से लिया गया है अर्थ शाकार रूप भगवान का नाम है अर्थ पुत्र को कहते हैं

[न] यही न जब गर्भ में जाता है तो ब्रह्म या गर्भ अवस्था बन जाता है

माँ ६ [ध्रुवु] सितारह के खाने में जो शब्द या नाम लिखा हुवा है वह सब ध्रुवु अर्थ श्री या सार संसार की मां से सम्बन्ध है और श्रोमणी का नाम है।

७ [प्रब्रह्म] के घर या खाने में जो नाम लिखे हैं वह सब प्रब्रह्म का नाम और उनसे सम्बन्ध है।

[अपार ब्रह्म] और [अपार आत्मा] आकाश मार्ग में निराकार रूप किरण को कहते हैं और पृथ्वी मार्ग में शाकार रूप में सब वस्तुओं का नाम है जब यह एक जगह आपस में मिल जाती है तो [ब्रह्म] (अर्थ एक बन जाता है) [र] अर्थ प्रब्रह्म [अ] अर्थ किरण [म] अर्थ [ध्रुवु] अर्थ तीनों मिलकर [राम] बना। उसके बाद जब कृण गर्भ में जाता है तो वहां कृण [र] बनता है अर्थ प्रब्रह्म की कृण या प्र ब्रह्म गर्भ में ब्रह्म की जगह अर्थ ब्रह्म या र बन जाता है और [अ] शाकार रूप तीनों अवस्था बन्ता है और [मां] अपार आत्मा या अपार ब्रह्म या वायु या किरण बन जाती है।

जब राम शब्द बन जाता है उसके बाद शाकार रूप में [र] बाल अवस्था और [अ] तरुण अवस्था और मां वृद्ध अवस्था अर्थ उमा बन जाता है जब राम नाम शाकार रूप में बना और भगवान या पुत्र नाम पड़ा।

शिव शंकर के अर्थ शिव सूरज के कर हैं शिव शब्द के अर्थ श सूरज से और व ध्रुवु से लिया गया है जब शिव नाम

वना अर्थ सूरज और ध्रुवु का प्रेम है अर्थ दोनों के किरण के सम्वन्ध से जो किरण उत्पन्न होती है उसी कृश्ण को शिव कहते हैं इस किरण का नाम गंगा भी है

ब्रह्म अर्थ जन्त्र में शिव या किरण भ अक्षर के खाने या घर में पितह और न के खाने वाले शब्द अपार्वती अर्थ उमा या मां वनती है अर्थात जो आकाश में तारे सितारे हैं वह सव अपार वत्तियां या जोतियां हैं इन्हीं अपार वत्तियों से कृशों की पूजा होती है अर्थ किरण शिव तारे पार्वती हैं पृथ्वी मार्ग में ब्रह्म शिव और हम सव अपार्वती हैं अर्थ हम सव ब्रह्म की पूजा करते हैं मतलव हम सव जीव और पेड़ पालो ब्रह्म पुजारी हैं

सव से वड़ा अर्थ सूरज शिव और ध्रुव पार्वती हैं इसी के आधार पर प्रब्रह्म और पार्वती का साया लके उनके पुत्र को वही डिगरी या खिताव संस्कृण भाशा वनाने वाले विद्वान ने दिया है कि वह तो कुछ करते धरते नहीं हैं जो कुछ करते हैं उनके कर या मन्त्री ही करते हैं और सव से वड़ा माना है ध्रुवु और सूरज सव से दूर हैं इसीलिये इनको सव से परे या पार या दूर माना है और इनका पार ब्रह्म और पार वत्ती नाम रक्खा है इसी प्रकार वत्तियों ही के कारण से हमारे मन्दिरों में भगवान की पूजा हमारे पुजारी लोग वहुत सारी जोतियों या वत्तियों ही से करते हैं यहां तक कि वहुत से मन्दिरों में तो वहुत वत्ती न होने से कारीगरों ने विल्लौर और शीशे के छोटे छोटे टुकड़े दीवारों में जड़वा दिये हैं कि जिससे एक ही वत्ती के जलने से हजारों वत्तियां जलती हुई मालूम होती हैं और ऐसा मालूम होता है कि वहुत सारी वत्ती से पूजा हो रहा है

प्रब्रह्म जन्त्र में प्रब्रह्म सूरज या दिन रवीवार-भ-के खाने वाले शब्द सोमवार और ग के खाने वाले मंगल व अचर के घर वाले बुद्ध आ के खाने वाले बृहस्पत न के घर वाले शब्द शुक्र और ध्रुव के खाने वाले शब्द सनी दिन बना अर्थ यह सप्तऋषी हुये और सातों दिन बने और प्रब्रह्म अर्थ हुये सोमवार मंगल बुद्ध बृहस्पत शुक्र यह पांचों तत्त्व बने और ब्रह्म अथ हुये सातों दिन या सप्त ऋषी सितारे जो कि पृथ्वी के गिर्द घूमते है यह और (सूरज अर्थ राहू) ध्रुव अर्थ केतु मिलकर नौ ग्रह बन्ते हैं यह नवों ग्रह हर कक्ष जीव को नित्त हर समय रोज दिखते हैं दिन को सूरज रात्री को ध्रुव और सप्त ऋषी सदा दिखते हैं कुछ जोतिष्य विद्या वाले विद्वानों ने इसी को नौ गृह माना हैं और कुच्छ विद्वानों ने सप्त ऋषी सितारों और उस के पास ही दो और सितारे है जो कि ध्रुव के गिर्द घूम हैं उन को मिलाकर नौ गृह बनाया हैं और इन्ही का साया पृथ्वी पर डाला है और इन्ही नवो गृहों से जन्म कुण्डली बनाई है और पृथ्वी पर नौ रेखा या लकीर नकशे में कायम किया है इसीं से पृथ्वी को चलाया है अर्थ सप्त ऋषों को सात घोड़ा माना है जब यह घोड़े आकाश में चलते है तो इनकी टाप या खुर या पैर पृथ्वी पर पड़ते हैं और इन्ही टापों ही के पड़ने से पृथ्वी पच्छिम से पूर्व को अपने किल्ली पर घूमती है और सप्त ऋषों के साथ साथ चलती या खसिटती भी जाती है सप्त ऋषी सितारों में जो बीच का सितारा अर्थ जन्मदग्नि ऋषी सितारह है उसी के नीचे पृथ्वी लटकती है और उसी से सम्बन्ध है बहुत से जोतिप विद्या वाले विद्वान इसी को सूरज और ब्रह्म माना है और पृथ्वी पर उसको जन्म देने वाला अग्नी माना है और इस का दिन रविवार रक्खा है इसी के गिर्द छः ६ सितारे घुमाये और दिन का आधार माना है इसका हाल और भी कहीं पुस्तक

में लिखा है यहां टार अर्थ सातों सितारों के किरण को माना है।

इसी जंमदग्नी ऋषी को परब्रह्म का पुत्र मान कर इसको ब्रह्म अर्थ वालों ने पितृह माना है और इसी को सन या सूरज ब्रह्म अर्थ में लिखा है इसी के आधार पर दशहरा त्यौहार बनाया है।

इस ब्रह्म जन्त्र में साल या वर्ष के दोनों दशहरा त्यौहार अर्थ ज्येष्ठ और क्वार का जो कि इस जन्त्र में (भ) और (न) अक्षर के खाने में पड़ता है वह सब सब्द दशहरा बनता है अर्थात गर्भ अवस्था है बाकी तीन त्यौहार अर्थ दिवाली बाल अवस्था अर्थ ब्रह्म होली तरुण अवस्था अर्थ विष्णू रक्षाबन्धन वृद्ध अवस्था अर्थ शिव बनते हैं इन्हीं पांचों तत्व या पांचों देवता या पांचों दिन अर्थ सोमवार मंगल बुद्ध बृहस्पति सुक्र या ब्रह्म अर्थ के आधार पर बनाया गया है।

पांचों तत्व अर्थ आंसूजल अर्थ गर्भ अवस्था मिट्टी बाल अवस्था यानी तरुण अवस्था वायु वृद्ध अवस्था आकाश मृत्यु अवस्था है। इस जन्त्र का वरणन सूक्षम रूप में लिखा गया है।

दशहरा त्यौहार

अर्थ पृथ्वी मार्ग

साल या वर्ष में दो दशहरा त्यौहार बनाने का यह कारण है कि पहिला ज्येष्ठ का दशहरा (राम का गर्भ अवस्था) और कृष्ण का क्वार का है। अर्थ कुछ जीवों और कुछ बीजों का गर्भ गर्मियों में अस्थापित होता है और उनकी जवानी वर्षा ऋतु है और जाड़ा पीलापन अर्थात मुर्झापन है अर्थ वृद्ध अवस्था है जैसे जहरीले जानवरों और कुछ वृक्षों की जवानी वर्षांत है अर्थ जिन जीवों और बीजों की उत्पत्ति गर्मी है और उनका दशहरा ज्येष्ठ का है और जिन जीवों और बीजों और मनुष्य सम्बन्धी जुइन के उत्पत्ति या गर्भ सम्बन्धी या गर्भ में जाने के कारण अर्थ पीले से हरा होने के कारण से यह त्यौहार क्वार का बनाया गया है अर्थ इन बीजों और जीवों का दशहरा क्वार का है आकाशमार्ग से सूरज भगवान जब उत्तरायण होते हैं तो जो जीव उत्तरायणी कृण से पैदा होते हैं उनका दशहरा ज्येष्ठ का और दक्षिरायणी कृण से उत्पन्न होने वाले बीज और जीवों का दशहरा क्वार का है अर्थ पृथ्वी के ऊत्तरी भाग के जीवों का ज्येष्ठ का और दक्षिणी भाग के जीवों का क्वार का है अर्थ नौ से बाहर आने को भी दशहरा कहते हैं अर्थ दशोंहरा अर्थ सब हरा ही हरा अर्थात दशहरा हरादश त्योहार है अर्थात पीले से हरा होना और हरे स पीला को हरादश और दशहरा कहते हैं इसी को हरीहर महादेवा भी कहते हैं।

निराकार मार्ग में सूरज की पहिली कृण के गर्भ में जाने को ज्येष्ठ का दशहरा और उसी कृण के शाख को गर्भ में जाने को क्वार का दशहरा कहते हैं। इसी दशहरा और हरादश को ही पुन्हर जन्म और पुनिहर जन्म कहते हैं इसी ब्रह्म को बार बार जन्म लेने ही के कारण से पुन्हर विवाह का रस्म या रिवाज बनाया गया है कि जब ब्रह्म बार बार विवाह या विवाद करता है तो मनुष्य या और जीव क्यों न करें।

श्री गणेशायंनमः

श्री गणेशायंनमः के अर्थ न और म से श्री गणेश जी उत्पन्न हुए गण शब्द के अर्थ गण अर्थ झुण्ड पुत्र पुजने वाले ईश अर्थ बेशीश विना सिरवाला अर्थात बेशीश वाले के गण (निराकार रूप में कृण) अर्थ बेशीश वाले का पुत्र शाकार रूप में पृथ्वी पर जितनी वस्तुयें हैं जो कि कृणों से उत्पन्न होती हैं उनको कहते हैं और निराकार में कृण को कहते हैं।

दुसरा अर्थ न म के प्रेम से पैदा होने वाले को गणेश कहते हैं अर्थात न-म या माता पिता के हृदय से उत्पन्न होने वाली वस्तु का नाम गणेश हैं।

तीसरा अर्थ पांचों तत्वों के अर्थ को या इनके आपस के प्रेम या मिलने से जो वस्तु बनती है उसको भी श्रीगणेश कहते हैं अर्थात ब्रह्म का नाम भी गणेश है।

चौथा अर्थ न म के हृदय से श्री गणेश जी आये हैं अर्थात सूरज ध्रुव के कृण के रगड़ से जो कृण उत्पन्न होती है उस

कृण को श्रीगणेश कहते हैं और इस कृण से जो पृथ्वी पर बूटियां पैदा होती हैं शाकर रूप में उसको गणेश कहते हैं अर्थात कृणों के झुण्ड और सबके सत्त के जोड़ या मजमुये को श्रीगणेश कहते हैं।

कुछ उपयोगी बातें

प्राचीन काल में संस्कृण यंत्र वाले अपने सु पुत्रों का नाम अपने पूज्य के कर्तव्य ही के आधार पर रखते थे जैसे (परशु-राम) परशुराम शब्द का बहुत बड़ा अर्थ है अर्थ राम का सब से अच्छा पर-पंख (प्रकाश) अर्थ राम का [प्रकाश] दुसरा अर्थ—राम परस या फ़रस पर बराबर हैं अर्थात किरण बरबर हैं। तीसरा अर्थ—परश अर्थ कुल हाड़ी या कुल हाडी काटने वाली [आर] अर्थ [किरण] रामायण में परशुराम के परशे को धार और चमक प्रसिद्ध है अर्थ जितनी धार परसे में नहीं थी जितनी कि उसके चमक में थी धार तो एक ही गरदन पर चलती थी परन्तु उसके चमक से चार चार मील के इर्द गिर्द के जीव जूझ जाते थे परशुराम तो एक ही को रण में मारता था परन्तु उसकी चमक हजारों को मार डालती थी जैसे सूरज एक को मारता है परन्तु उसकी किरण लाखों को पल में मार देती है अर्थ—परशुराम उस समय पृथ्वी पर सबसे बड़ा संस्कृण जन्त्र जानने वाला था इसलिये उसने अपने शस्त्र अर्थ परसे में सूरज की मृत्युञ्जय किरण भर रक्खी थी कि जिसके घुमाने से जिधर चमक जाती थी वही भशम हो जाता था यही परशुराम का शस्त्र और देवता था इसी कारण

से उनका ना। प्रशुराम और उनके पितह का नाम सूरज के आधार पर था क्योंकि सूरज सब से बड़ा जंमदग्नी है अर्थ जन्म दग्नी ऋपी है अर्थ—जंम दग्नी [सूरज] किरण परशु राम है राम ही को शाकार रूप में भगवान अर्थ पुत्र को कहते और इसी को देहाती भाषा में पाद्री बोलते हैं पादरी शब्द के अर्थ—पाद के दरा का हकदार-वली अहद राजकुंवर पाद और वाद दोनों लगभग एक ही अर्थ रखते हैं पाद अर्थ वायु के है और वाद फारसी जबान में वायु ही को कहते हैं अर्थ जो वायु के जोर स अन्दर से बाहर निकले उसको भी पाद्री कहते हैं अर्थ बचा [पुत्र] हमारे यू० पी० प्रान्त या अवध प्रांत में अब भी पादरी शब्द कहीं कहीं पुराने भाषा वाले बोलते हैं अक्सर स्त्रियों में ज्यादा बोल-चाल है इस कारण से सारा संसार पाद्री है।

(१) मेल करना किस से सीखना चाहिये—कुत्ते से बालक से कड़वी चीजों को खाकर मुख से मीठी चीज निकालनी चाहिये अर्थांथ सब की गालियां और ताना सुनाकर और उसको हजम करके मुम से मीठे वाक्य निकाले।

२—दूसरों को उससे उसको बढ़कर खताब देकर बोलना चाहिए

३—हर एर पुस्तक का कर्तव्यी अर्थ लगाना चाहिये

४—मनुष्य चाहे जिस काम को करे उसको पूरा करके छोड़ना चाहिये। चाहे उसको कितना ही परिश्रम करना पड़े। अगर इससे भी पूरा न हो तो उसके पुत्रों को भी वही काम पूरा करने के लिये करना चाहिये और अगर इससे भी पूरा न हो तो पर पोते को भी यहां तक कि सारे परिवार को करना चाहिये अवश्य पूरा होगा थक कर छोड़ना नहीं चाहिये

५—शाकार वाला शाकार ही का हाल वरणन कर सकता है। निराकार का नहीं, क्योंकि इसके लिये निराकार रूप कुछ नहीं है अर्थ वेद-शास्त्र बनाने वाला शाकार रूप हो वाला है तो वह शाकार ही रूप को देख सकता है निराकार नहीं

६—निराकार रूप वाला शाकार रूप नहीं देख पाता है क्योंकि निराकार रूप मृत्यु के समान है इसलिये वह कुछ भी नहीं कर सकता

७—स्तुति कब नहीं होती-जब पूज्य या देवता आगे होता है

८—संसार की सब वस्तु सत्त हैं

९—सब से बड़ा गाॅड या खुदा या ईश्वर कौन-प्रब्रह्म सूरज भगवान हैं

१०—पृथ्वी पर सब से बड़ा देव कौन—बीज अविनाशी भगवान है जिसको ब्रह्म कहते हैं जिसका रङ्ग सब में सदा एक ही रहता है

११—सिद्ध कौन-जिसको अपना देवता हर समय सब में दीखे

१२—रक्षा किसकी करनी चाहिये-जिसको दुन्या बुरा कहे

१३—बहादुर कौन-जो गरीब की रक्षा करे

१४—दीन कौन-जिसका कोई मित्र न हो

१५—सब से बड़ा मित्र कौन-पड़ोस का दुश्मनया शत्रु

१६—पक्षपात किसका करना चाहिये-जिसको संसार बुरा कहे।

१७—सब से बड़ी सजा कौन-जिसको पेट भर खाना न मिले अर्थात फ़ाका भूख की सजा

१८—सब से बड़ा सुख कौन-ब्रह्म को पूजना जिससे संसार सुख मिलता है ।

१६—सब से बड़ा कर्तव्य कौन-अपने देश या कर्म को पहचानना

२०—विद्या कौन पढ़ाता है-जो पुस्तकों का कर्तव्यी अर्थ लगाता है

२१—जीव को कौन बहादुर बनाता है-शत्रु

२२—सब से बड़ा गुरु कौन—ठोकर ।

२३—भंडारी कौन—जो दूसरों के स्वाद के लिये भोजन बनावे

२४—सर्व व्यापक कौन-कृष्ण-वायु

२५—कृष्ण कौन—जो अंधेरे से अंधेरे को उजाला करे

२६—संकर कौन—सूरज या प्रब्रह्म की पहिली कृष्ण

२७—ब्रह्म कौन-बीज अविनाशी भगवान

२८—राम कहां—जहां माता पितृ का प्रेम हो

२६—राम कौन-माता पितृ पुत्र का प्रेम

३०—प्रब्रह्म कौन-सूरज

[समाप्तम्]

संसार को चक्कर में डालने वाला

अद्भुत यन्त्र

जिसमें सारे तारों सितारों का हाल और उनके चलने का मार्ग खिंचा हुआ है जोतिष विद्या वालों के लिए जोत का हाल और वेद शास्त्र के पढ़ने वालो के लिए वेदों का आधार मालूम होगा यन्त्र का रूप कई शक्लों में दिया गया है देखने योग्य है।

कीमत यन्त्र ········ ३०००)

इस विचित्र नक्शे का सारांश सूक्ष्म रूप में रामप्रकाश और ब्रह्मप्रकाश पुस्तक में दिया गया है।

पुस्तक मिलने का पता—

रामदास

कोठी नम्बर २०,२२ सर्वेन्ट क्वाटर कर्जन रोड न्यू दिल्ली

कृष्ण प्रिंटिंग प्रेस, चरखेवालान, देहली।
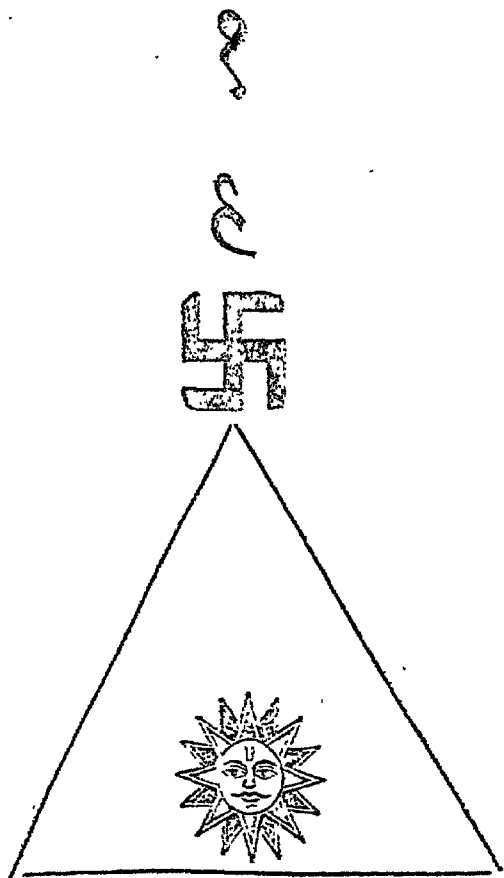
रामदास अयोध्या निवासी,

मुहल्ला बाजार शेरजङ्ग, अयोध्या।